फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 198 प्रभात जयपुर, गुरूवार 19 फरवरी, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

A Real-Life Robinson Crusoe to a...

The procession signaled Portugal's ambition to convert India's Hindus and Muslims into Christians. Lopes, however, did exactly the opposite

They Didn't Look the Way They Do Today

Early versions of many common foods looked, tasted, and even grew very differently from their modern forms

राज्यसभा की 37 सीटों के लिए 16 मार्च को चुनाव होंगे

खड़गे, शरद पवार, अभिषेक मनु सिंघवी, अठावले और राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश का कार्यकाल समाप्त होगा

- चुनाव आयोग की घोषणा के अनुसार, महाराष्ट्र में 7, तमिलनाडु में 6 तथा बिहार व बंगाल म 5-5 सीटों पर चुनाव होंगे।
- इनके अलावा ओडिशा में 5, असम में 3, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ व हरियाणा में 2-2 तथा हिमाचल में एक सीट पर राज्यसभा सदस्य चुने जाएंगे।
- महाराष्ट्र के सबसे प्रभावशाली नेता, 85 वर्षीय शरद पवार ने पहले यह घोषणा की थी कि वे अब कोई चुनाव नहीं लड़ेंगे, पर शिव सेना के संजय राउत के अनुसार, उन्होंने अब राज्यसभा के एक और कार्यकाल के लिए इच्छा जताई है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 फरवरी। चुनाव आयोग ने बुधवार सुबह कहा कि अप्रैल में खाली होने वाली 37 राज्यसभा सीटों के लिए 10 राज्यों में16 मार्च को चुनाव होंगे।

इनमें से सबसे ज्यादा सीटें महाराष्ट्र (7) और तमिलनाडु (6) में हैं, जबकि बिहार और पश्चिम बंगाल में पांच-पांच सीटें खाली होंगी। इनके अलावा, ओडिशा में चार सीटें, असम में तीन सीटें, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और हरियाणा में दो-दो सीटें और हिमाचल प्रदेश में एक सीट खाली होगी।

इसके साथ ही, सत्तारूढ़ भाजपा और विपक्ष के कई वरिष्ठ नेताओं का कार्यकाल भी समाप्त हो रहा है,जिससे राज्यसभा में राजनीतिक समीकरण और मुकाबले की स्थिति बदल सकती है।

इनमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे (कर्नाटक), एनसीपी नेता शरद पवार,शिवसेना की प्रियंका चतुर्वेदी और महाराष्ट्र से रिपब्लिकन पार्टी प्रमुख रामदास अठावले शामिल हैं। तेलंगाना में कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी का कार्यकाल भी समाप्त हो रहा है।

शिव सेना के संजय राउत ने कहा, महाराष्ट्र की राजनीति के सबसे बड़े नेता 85 वर्षीय शरद पवार ने एक और चुनाव लड़ने की इच्छा जताई है।

पवार पहले, अपनी उम्र का हवाला देते हुए, कह चुके थे कि वह आगे कोई चुनाव नहीं लड़ेंगे। 50 से ज्यादा साल के राजनीतिक करियर में पूर्व केन्द्रीय मंत्री पवार 14 चुनाव लड़ चुके हैं और हर बार जीते हैं।

राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश (बिहार) का कार्यकाल भी खत्म हो जायेगा। राज्यसभा सांसदों के चुनाव की प्रक्रिया अलग होती है। इसमें सीटों का बंटवारा हर राज्य की जनसंख्या के आधार पर होता है।

मतदान लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुने हुए सदस्य करते हैं। इसलिए हर पार्टी के चुने हुए सांसदों एव विधायकों की संख्या इसमें महत्वपूर्ण होती है। किसी राज्य में एक सीट जीतने के लिए कितने वोट चाहिए, इसके लिए एक तय फार्मूला होता है। पिछले साल अगस्त में, भाजपा के राज्यसभा सांसदों की संख्या 2022 के बाद पहली बार 100 से ज्यादा हो गई थी। इससे सत्तारूढ़ पार्टी को दोनों सदनों में नियंत्रण मजबूत करने और अपने विधेयकों को पास कराने में मदद मिली। इन सीटों के लिए पिछला चुनाव 2020 में हुआ था, जब असम, बिहार, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में भाजपा और उसके सहयोगी दल मजबूत स्थिति में थे। महाराष्ट्र में भाजपा और कांग्रेस के साथ उस समय की संयुक्त शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने सीटें बांटी थीं।

तमिलनाडु में डीएमके ने ज्यादातर सीटें जीती थीं, जबकि पश्चिम बंगाल और ओडिशा में क्रमशः तृणमूल कांग्रेस और बीजू जनता दल बड़ी विजेता पार्टियां रहीं थीं।

एस.के. आईटी को बम से उड़ाने की धमकी मिली

जयपुर, 18 फरवरी। जगतपुरा स्थित स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट एंड ग्रामोत्थान (एसकेआईटी) कॉलेज को बुधवार सुबह बम से उड़ाने की धमकी मिलने से हड़कंप मच गया। कॉलेज प्रशासन को धमकी भरा ई-मेल प्राप्त होते ही एहतियातन पूरे कैंपस को खाली करा दिया गया। छात्र-छात्राओं और स्टाफ को सुरक्षित बाहर निकालकर कॉलेज गेट के बाहर एकत्र किया गया।

सूचना मिलते ही पुलिस, दमकल और बम निरोधक दस्ता सहित, अन्य सुरक्षा एजेंसियां मौके पर पहुंचीं और पूरे परिसर में सघन तलाशी अभियान शुरू किया।

- पूरे कैम्पस को खाली कराकर पुलिस, दमकल व बम निरोधक दस्ते सहित अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने बारीकी से जाँच की।

ई-मेल में दावा किया गया कि कॉलेज परिसर में आरडीएक्स से बने बम लगाए गए हैं और निर्धारित समय पर विस्फोट किया जाएगा। संदेश में खुद को 'बालूचोटन टाइगर्स डीएमके आईटी विंग' बताते हुए 11:45 बजे विस्फोट की धमकी दी गई। साथ ही, भड़काऊ और आपत्तिजनक बातें भी लिखी गईं।

गलगोटिया के चीनी रोबोट ने भाजपा नेतृत्व को परेशानी में डाला

विपक्ष के नेताओं ने इस घटना को लेकर केन्द्र सरकार के "मेक इन इंडिया" के दावे की आलोचना की

- गलगोटिया विश्वविद्यालय ने जिस रोबोट को खुद की प्रयोगशाला में बना हुआ दिखाकर एआई इम्पैक्ट समिट में प्रदर्शित किया था, उसे चीन की कंपनी यूनीट्री, भारत में 2-3 लाख रूपए में ऑनलाइन बेचती है।
- विवाद सामने आने के बाद समिट में गलगोटिया विश्वविद्यालय के स्टॉल की लाइट काट दी गई और उन्हें तुरंत एक्सपो एरिया खाली करने के निर्देश दिए गए।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 फरवरी। गलगोटिया यूनिवर्सिटी, इस समय चल रहे "इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट" में अपने सेंटर ऑफ एक्सलैंस द्वारा विकसित बताए गए एक चीनी रोबोटिक कुत्ते को प्रदर्शित करके एक बुरे विवाद में फंस गई है।

इस घटना से राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। राहुल गांधी समेत, कई नेताओं ने केन्द्र सरकार के "मेक इन इंडिया" दावे की आलोचना की है और यूनिवर्सिटी के भाजपा नेतृत्व के साथ मजबूत रिश्तों पर सवाल उठाए हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्व में यूनिवर्सिटी के चांसलर सुनील गलगोटिया को "डी-क्यू आईसीटी अवॉर्ड" दे चुके हैं और उन्होंने शिक्षा व वैश्विक सहयोग में उनके योगदान की सराहना की थी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी यूनिवर्सिटी की लगातार तारीफ करते हुए इसे "उत्तर प्रदेश के लिए गर्व की बात" बताया है और राज्य को "नॉलेज हब" बनाने में इसकी भूमिका को सराहा है। यूनिवर्सिटी ने सरकार की आत्मनिर्भर भारत पहल को भी जोर-शोर से बढ़ावा दिया है।

"ओरायन" नाम का उक्त रोबोट दरअसल चीनी कंपनी यूनीट्री का बाज़ार में उपलब्ध एक मॉडल है, जो भारत में ऑनलाइन 2 से 3 लाख रुपये के बीच बेचा जा रहा है।

इस रोबोटिक कुत्ते का वीडियो वायरल होने और इंटरनेट पर इसे चीनी प्रॉडक्ट के तौर पर पहचाने जाने के बाद, गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने माफीनामा जारी किया है। यूनिवर्सिटी ने कहा है कि यह उत्पाद यूनीट्री से खरीदा गया था और इसे केवल छात्रों के सीखने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था।

बताया गया है कि समिट में चीनी रोबेटिक कुत्ते के प्रदर्शन को लेकर, गलगोटिया यूनिवर्सिटी के स्टॉल का बिजली कनैक्शन भी काट दिया गया। यह कार्रवाई उन्हें एक्सपो क्षेत्र खाली करने के लिए कहे जाने के कुछ मिनट बाद हुई।

गलगोटिया यूनिवर्सिटी एक और दावे को लेकर सोशल मीडिया पर सवालों के घेरे में आ गई है। यूनिवर्सिटी ने कहा था कि उसके ग्रेटर नोएडा कैंपस के स्टाफ और छात्रों ने स्क्रैच से एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

परिवर्तन रथयात्रा की रणनीति अपना रही है भाजपा प.बंगाल में

राज्य के विभिन्न भागों में 1 मार्च से 10 मार्च के बीच नौ परिवर्तन यात्राएं निकाली जाएंगी

- भाजपा के प.बंगाल के प्रमुख नेता सुवेन्दु अधिकारी ने कहा कि परिवर्तन यात्राओं से अन्य राज्यों में परिवर्तन आया था, इसलिए बंगाल में परिवर्तन लाने के लिए हम यहाँ यात्राएं आयोजित कर रहे हैं।
- यात्रा प्रारंभ होने के कार्यक्रम में अध्यक्ष नितिन नबीन, केन्द्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा, अमित शाह, राजनाथ सिंह, धर्मेंद्र प्रधान, शिवराज सिंह चौहान, नितिन गडकरी के अलावा मुख्यमंत्री फड़नवीस व स्मृति ईरानी भाग लेंगे। यात्रा की समापन रैली में कोलकाता के ब्रिगेड परेड ग्राउण्ड में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शामिल होंगे।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 फरवरी। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं और राज्य के अलग-अलग हिस्सों से नौ परिवर्तन रथ यात्राएं शुरू करने की योजना घोषित की है। यह भाजपा के वर्ष 2021 के चुनाव अभियान जैसा ही है।

यात्रा का पहला चरण 1 मार्च को कूचबिहार साउथ, कृष्णानगर साउथ, गढ़बेता और रायडीघी कुल्टी से शुरू होगा।

दूसरा चरण 2 मार्च को इस्लामपुर, संदेशखाली, हसन और आमता से शुरू होगा।

होली के मौके पर 3 और 4 मार्च को कोई यात्रा नहीं निकाली जाएगी। अभियान 5 मार्च से फिर शुरू होगा।

5 से 10 मार्च के बीच, भाजपा हर विधानसभा क्षेत्र में 5,000 किलोमीटर से ज्यादा की यात्रा करेगी। इस दौरान कुल 60 बड़ी जनसभाएं और 300 से ज्यादा छोटी जनसभाएं आयोजित की जाएंगी।

बंगाल भाजपा नेता सुवेन्दु अधिकारी ने कहा, "यह रथ यात्रा नहीं, बल्कि परिवर्तन यात्रा है। इसे बंगाल में बदलाव लाने के लिए आयोजित किया जा रहा है। दूसरे राज्यों में भी ऐसा हो चुका है, इसलिए हम इसे बंगाल में भी कर रहे हैं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कोलकाता के प्रसिद्ध ब्रिगेड परेड ग्राउंड में होने वाली समापन रैली में शामिल होंगे।

यात्रा के उद्घाटन कार्यक्रम में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एसओजी ने 10 हजार के इनामी परीक्षार्थी को कोलकाता में पकड़ा

जयपुर, 18 फरवरी। राजस्थान में पेपर लीक और डमी कैंडिडेट गैंग के खिलाफ स्पेशल ऑपरेशन्स ग्रुप (एसओजी) ने पश्चिम बंगाल के कोलकाता में दबिश देकर दस हजार के इनामी डमी परीक्षार्थी प्रिन्स को गिरफ्तार किया है। पकड़ा गया आरोपी डॉक्टर बनने का सपना देख रहा एमबीबीएस फोर्थ ईयर का छात्र है, जो चंद रुपयों के लालच में सलाखों के पीछे पहुँच गया है।

- एमबीबीएस चतुर्थ वर्ष के छात्र प्रिंस ने सांचोर निवासी मनोहर बिश्नोई का डमी बनकर परीक्षा दी थी

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एसओजी विशाल बंसल ने बताया कि उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के खतौली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

खालिदा ज़िया के वरिष्ठ सलाहकार रह चुके हैं बांग्लादेश के एकमात्र हिन्दू मंत्री रॉय चौधरी

निताई रॉय चौधरी का मानना है कि शेख हसीना व अवामी लीग ने बांग्लादेश में सत्ता का खुलकर दुरुपयोग किया

- रॉय चौधरी का दावा है कि यदि केस स्टडी की जाए तो स्पष्ट नज़र आएगा कि शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग देश में हो रही हर सांप्रदायिक हिंसा में शामिल है।
- रॉय चौधरी के तीन बच्चे हैं। उनकी पुत्री निपुन रॉय चौधरी सक्रिय बीएनपी नेता हैं तथा उनके पति ज्ञानेश्वर चंदन रॉय बीएनपी के टिकट से हाल ही चुनाव जीते हैं। उनका पुत्र देबाशीष रॉय चौधरी बांग्लादेश हाई कोर्ट के जज हैं।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 फरवरी। तारिक रहमान की कैबिनेट में शामिल किए गए 50 मंत्रियों में निताई रॉय चौधरी इकलौते हिंदू मंत्री हैं, जिन्होंने शपथ ली।

निताई रॉय चौधरी बांग्लादेश के वरिष्ठ राजनेता और वकील हैं और वर्तमान में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के उपाध्यक्ष हैं। 12 फरवरी 2026 के राष्ट्रीय चुनाव में उन्होंने मगुरा-2 सीट से जीत हासिल की और जमात-ए-इस्लामी के उम्मीदवार को हराया।

उन्होंने पहले, तीन बार प्रधानमंत्री रह चुकीं खालिदा जिया (जो रहमान की मां भी हैं) के वरिष्ठ सलाहकार के रुप में काम किया है।

7 जनवरी 1949 को मगुरा जिले के मोहम्मदपुर के हटबरिया गांव में जन्मे रॉय चौधरी ने अपनी स्कूली शिक्षा आलोकदिया पुखुरिया हाई स्कूल से पूरी की और उसके बाद मगुरा गवर्नमेंट कॉलेज से स्नातक किया। बाद में उन्होंने कानून की पढ़ाई की और ढाका विश्वविद्यालय से मास्टर डिग्री हासिल की।

उनका संसदीय करियर 1988 में शुरू हुआ, जब वे मगुरा-2 सीट से जातीय संसद के लिए चुने गए। उन्होंने सितंबर 1990 में लगभग तीन महीने तक युवा और खेल मंत्री के रूप में भी काम किया। उस समय देश में हुसैन मुहम्मद इरशाद की सरकार थी। इरशाद शासन के पतन के बाद वे बीएनपी में शामिल हो गए और बाद में पार्टी के उपाध्यक्ष बने।

रॉय चौधरी शेख हसीना और उनकी पार्टी आवामी लीग के खुले आलोचक रहे हैं। उन्होंने पार्टी पर एक ऐसा "फासीवादी शासन" बनाने का आरोप लगाया, जिसने न्यायपालिका की स्वतंत्रता को कमजोर किया और सरकारी ताकत का गलत इस्तेमाल किया।

सांप्रदायिक हिंसा पर चिंता जताते हुए रॉय चौधरी ने कहा कि 2001 में जब बीएनपी-जमात गठबंधन सत्ता में आया था, तब हिंदुओं पर "कुछ अलग-थलग हमले" हुए थे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रधानमंत्री आज इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट का उद्घाटन करेंगे

नई दिल्ली, 18 फरवरी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गुरुवार को यहां भारत मंडपम में इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का उद्घाटन करेंगे।

प्रधानमंत्री कार्यालय ने बताया कि उद्घाटन समारोह सुबह लगभग 9:40 बजे होगा, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी के साथ फ्रांस के राष्ट्रपति, संयुक्त राष्ट्र महासचिव और कई शीर्ष उद्योगपति शामिल होंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री अन्य वैश्विक नेताओं के साथ इंडिया एआई इम्पैक्ट एक्सपो का दौरा करेंगे और विभिन्न देशों के पवेलियन देखेंगे।

- समारोह में प्रधानमंत्री के साथ फ्रांस के राष्ट्रपति, संयुक्त राष्ट्र महासचिव और कई शीर्ष उद्योगपति शामिल होंगे।

दोपहर 12 बजे से शुरू होने वाले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाईकोर्ट ने रील के प्रबंध निदेशक बृजेश दीक्षित की नियुक्ति रद्द की

अदालत ने कहा कि केन्द्र सरकार और मिनिस्ट्री ऑफ हैवी इंडस्ट्रीज़ नियुक्ति प्रक्रिया पुनः शुरू करें, जिसमें राजस्थान के मुख्य सचिव को भी शामिल किया जाए

- अदालत ने कहा कि रील में राज्य सरकार की 49 फीसदी हिस्सेदारी है और यह केन्द्र व राज्य सरकार का संयुक्त उपक्रम है।

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 18 फरवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड (रील) के प्रबंध निदेशक के पद पर बृजेश दीक्षित की नियुक्ति को रद्द कर दिया है। साथ ही अदालत ने केन्द्र सरकार के सार्वजनिक उपक्रम चयन बोर्ड के अध्यक्ष व भारी उद्योग मंत्रालय के सचिव को नए सिरे से नियुक्ति प्रक्रिया आरंभ करने के निर्देश देते हुए चयन प्रक्रिया में राज्य के मुख्य सचिव को भी शामिल करने को कहा है। जस्टिस अशोक कुमार जैन ने यह आदेश पुरुषोत्तम नारायण शर्मा की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

इस मामले में याचिकाकर्ता पुरूषोत्तम नारायण शर्मा की ओर से अधिवक्ता तनवीन अहमद ने अदालत में गुहार की थी कि रील के नए प्रबंध निदेशक की नियुक्ति में तय नियम-कायदों की पालना नहीं की गई, जैसे कि चयन बोर्ड में प्रदेश के मुख्य सचिव को शामिल नहीं किया। इसके विरोध में भारत सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता आर.डी. रस्तोगी ने अदालत को कहा कि यह रिट याचिका इसलिए खारिज कर देनी चाहिए, क्योंकि याचिकाकर्ता को यह प्रकरण राजस्थान हाईकोर्ट में दायर नहीं करना चाहिए था। याचिकाकर्ता को सेंट्रल एड्रमिनिट्रेटिव ट्रिब्यूनल (सी.ए.टी.) याचिका दायर करनी चाहिए थी। याचिकाकर्ता ने इस चयन प्रक्रिया में भाग लिया था, लेकिन उनकी नियुक्ति नहीं हुई, इसलिए उन्होंने याचिका दायर कर दी।

वरिष्ठ अधिवक्ता रस्तोगी ने अदालत के समक्ष कई दलीलें दी पेश कीं, जिनमें उन्होंने कहा कि रील में रीको की 49 प्रतिशत भागीदारी है, जबकि 51 फीसदी हिस्सेदारी केन्द्र सरकार की है। उन्होंने कहा कि किसी भी सूरत में रीको को राज्य सरकार अथवा राज्य सरकार की इकाई नहीं माना जा सकता। परंतु अदालत के समक्ष जिरह के दौरान यह तथ्य भी स्पष्ट हो गया कि रीको की स्थापना के लिए राज्य सरकार ने "रीको इंडस्ट्रियल एरियाज़ एक्ट-1999" पारित किया था। इसी अधिनियम की धारा-16 के तहत रीको के तमाम अधिकारी-कर्मचारी सरकारी कार्मिक माने जाते हैं।

हैरानी की बात है कि जिरह के दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि रील की वेबसाइट पर भी अंकित है कि उसे भारत सरकार "मिनी रत्न" मानती है और यह केन्द्र व राजस्थान सरकार का संयुक्त उपक्रम है। इस दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि रील का चेयरमैन भी रीको का प्रबंध निदेशक है। रीको में चेयरमैन और प्रबंधक निदेशक की नियुक्ति का निर्णय राज्य सरकार ही करती है। इसलिए इस तर्क को नहीं नकारा जा सकता कि रीको की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी राजस्थान सरकार की हिस्सेदारी है।

इन सभी तथ्यों को सामने रखते हुए अदालत ने कहा कि रील में राज्य सरकार की 49 फीसदी हिस्सेदारी है और यह केन्द्र व राज्य सरकार का संयुक्त उपक्रम ही है। रीको का प्रबंध निदेशक पार्ट टाइम निदेशक होने के नाते रील का चैयरमेन है और रीको का संचालन राज्य सरकार करती है। अदालत ने अपने आदेश में यह तथ्य भी दर्ज किया है कि केन्द्र सरकार की ओर से ऐसा कोई दस्तावेज या पत्र पेश नहीं किया गया है, ऑ जिससे यह स्पष्ट होता हो कि चयन प्रक्रिया में मुख्य सचिव को शामिल किया गया हो। अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता ने भले ही नियुक्ति की प्रक्रिया में भाग लिया है, परंतु न तो उसे, और न ही आमजन को यह जानकारी दी गई थी कि चयनप्रक्रिया के लिये बोर्ड का गठन किया गया था। केन्द्र सरकार यह भी स्पष्ट नहीं कर पाई है कि उसने किसी भी उम्मीदवार का बायोडाटा भी देखा हो। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट नहीं हुआ कि कौन उम्मीदवार किस वजह से शॉर्ट लिस्ट किया गया और कौन बाहर किया गया। हाईकोर्ट ने कहा कि केन्द्र सरकार यह भी स्पष्ट नहीं कर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दिल्ली में रमजान का चांद नज़र आया, आज पहला रोज़ा

नई दिल्ली, 18 फरवरी। रमज़ान-उल-मुबारक महीने का चांद आज बुधवार को दिखाई देने का ऐलान किया गया है। राजधानी दिल्ली और आसपास के इलाके में सुबह से ही मौसम खराब होने की वजह से चांद को लेकर पहले से ही असंमजस की स्थिति थी और चांद निकलने की सूचना नहीं मिली है। इस बीच देश के कई भागों में चांद नजर आने की सूचना मिली। इसके बाद जामा मस्जिद के नायब शाही इमाम सैयद शाबान बुखारी ने चांद निकलने का ऐलान किया।

- जामा मस्जिद के नायब शाही इमाम सैयद शाबान बुखारी ने चांद निकलने का ऐलान करते हुए कहा है कि 19 फरवरी को रमज़ान का पहला रोज़ा रखा जाएगा।

विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

आर्थिक समीक्षा में माइनिंग सेक्टर ने बनाई विशिष्ठ पहचान

माइनिंग सेक्टर आज उभरता हुआ सेक्टर है। निवेश, रोजगार और राजस्व की दृष्टि से खनिज संपदा का महत्व बढ़ता जा रहा है। विपरीत भौगोलिक परिस्थितियां आज राजस्थान के लिए वरदान बन गई है। राजस्थान की धरा की गर्भ में बेशकीमती खनिजों का भण्डार समाया है तो पेट्रोलियम उत्पादों–कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस भी आज राजस्थान की धरा उगल रही है। यही कारण है कि बाड़मेर के पचपदरा में रिफाइनरी बनकर लगभग तैयार है तो दूसरी और स्ट्रेटेजिक और क्रिटिकल मिनरलों में भी राजस्थान दुनिया के नक्शें पर आज प्रमुखता से उभरा है। माइनिंग सेक्टर में राजस्थान देश दुनिया का प्रमुख केन्द्र बन कर उभर रहा है। प्रदेश में कई महत्वपूर्ण खनिज तो ऐसे है जिसमें राजस्थान का लगभग एकाधिकार है। राज्य बजट के साथ प्रस्तुत आर्थिक समीक्षा के तथ्यों पर एक नजर दौड़ाई जाए तो पोटाश, सिल्वर, जिप्सम, सीसा–जस्ता, वोलास्टोनाइट, आदि मे ंतो 94 प्रतिशत से 88 प्रतिशत तक की भागीदारी राजस्थान की है। डायमेंशनल मिनरल्स में भी राजस्थान अपना विशिष्ठ स्थान रखता है और यही कोई 40 प्रकार के डायमेंशनल स्टोन राजस्थान में मिल रहे हैं।

वैसे तो राजस्थान में 82 प्रकार के मिनरल के संकेत मिलते हैं वहीं 57 मिनरलों को राजस्थान में प्रमुखता से खोज और खनन का कार्य चल रहा है। अब राजस्थान में रेयर अर्थ एलिमेंट आरईई के संकेत मिलने के साथ राजस्थान तेजी से दुनिया के नक्शें पर उभरा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने माइनिंग विभाग की बागडोर स्वयं संभाल रखी है जिससे साफ हो जाता है कि राजस्थान की सरकार के लिए माइनिंग सेक्टर प्राथमिकता में की श्रेणी में शुमार है। माइनिंग सेक्टर की महती भूमिका को देखते हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने खान मंत्रालय की जिम्मेदारी अपने पास रखी और कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में पिछले कुछ समय में माइनिंग सेक्टर ने खनिज खोज से लेकर माइनर एवं मेजर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन, एमनेस्टी योजना, ड्रोन सर्वे, एकबारीय समाधान योजना, नई और प्रगतिशील खनिज नीति, एम–सेण्ड नीति, माइनिंग सेक्टर में औद्योगिक निवेश और रोजगार के विपुल अवसर सृजित करने के अवसर विकसित कर दिए हैं। इसके साथ ही पारदर्शी व्यवस्था और प्रक्रिया के सरलीकरण की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाये जा रहे है। समय की मांग को देखते हुए ही आरईई और सेरेमिक आधारित एक्सीलेंस सेंटर स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ रहे है। राजस्थान माइनिंग के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त अथक प्रयासों से धरातल पर ठोस परिणाम प्राप्त करने में जुटे हैं। यही कारण है कि राजस्थान आज देश का माइनिंग सेक्टर में प्रमुख प्रदेश बन गया है। निवेश, रोजगार और राजस्व की दृष्टि से राजस्थान तेजी से आगे बढ़ रहा है।

माइनिंग सेक्टर में राजस्थान देश दुनिया का प्रमुख केन्द्र बन कर उभर रहा है। प्रदेश में कई महत्वपूर्ण खनिज तो ऐसे है जिसमें राजस्थान का लगभग एकाधिकार है। राज्य बजट के साथ प्रस्तुत आर्थिक समीक्षा के तथ्यों पर एक नजर दौड़ाई जाए तो पोटाश, सिल्वर, जिप्सम, सीसा-जस्ता, वोलास्टोनाइट, आदि में तो 94 प्रतिशत से 88 प्रतिशत तक की भागीदारी राजस्थान की है।

राजस्थान में माइनिंग सेक्टर में ईज ऑफ डूइंग की दिशा में कदम बढ़ाये हैं और सभी प्रकार की आवश्यक अनुमतियां प्राप्त कर प्री एम्बेडेड ब्लॉकों के आक्शन की दिशा में कदम बढ़ाये है तो दूसरी और आटिफिशियल इंटेलीजेंस मशीन लर्निंग की दिशा में कदम बढ़ाये हैं। माइनिंग सेक्टर के महत्व को इसी समझा जा सकता है कि आज डोनाल्ड ट्रम्प खनिजों के लिए दुनिया की देशों को हड़पने के प्रयास और दादागिरी परउतर आया है। चीन का वर्चस्व तोड़ना भी दुनिया के देशों के सामने बड़ी चुनौती है। आज दुनिया के देशों की माइनिग सेक्टर पर अधिक नजर है। खासतौर से अमेरिका तो खनिज बहुल क्षेत्रों में आंखें गड़ाये ही बैठा है वह चाहे यूक्रेन हो, कनाडा हो या ग्रीन लैण्ड। तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि रुस यह चाहता है कि अमेरिका और यूक्रेन के बीच खनिज को लेकर कोई समझौता ना हो और इसके लिए वह अपने खनिज क्षेत्रों को लेकर अमेरिका या यों कहें कि ट्रम्प से समझौता तक करने का तैयार है। अमेरिका की कनाड़ा, ग्रीन लैण्ड आदि को लेकर भी तनाव का प्रमुख कारण खनिज संपदा ही है। दूसरी और चीन आज खनिज संपदा के चलते ही समूचे विश्व बाजार पर लगभग एकाधिकार की स्थिति में हैं। दरअसल जिस तरह से दुनिया में नए नए गजेट्स आने लगे हैं, इलेक्ट्रिक वाहन, कार्बन उत्सर्जन के स्तर को कम करने और पर्यावरण को प्रभावित करने वाले उत्पादों के कम उपयोग पर जोर दिया जाने लगा है, उसके कारण खनिज संपदा संपन्न देशों का महत्व और अधिक बढता जा रहा है। चीन के लगभग एकाधिकार के कारण दुनिया के देश त्रस्त भी है। हमारे देश और राजस्थान में भी प्रचुर मात्रा में खनिज संपदा है।

भारत सरकार ने क्रिटिकल मिनरल ब्लाकों के ऑक्शन की नीलामी अपने हाथ में ली है तो मिनरल एक्सप्लोरेशन कार्य में निजी प्लेयर्स की भी भागीदारी तय की जा रही है। समूचे देश में पिछले एक दशक में मिनरल एक्सप्लोरेशन के कार्य में तेजी आई है। हमारे देश में सतत खनन विकास पर जोर दिया जाने लगा है और 2016–17 से मेजर हो या माइनर मिनरल सभी माइंस नीलाम करना अनिवार्य कर दिया गया है। बदली परिस्थितियों में यह भी साफ हो जाना चाहिए कि सरकारों की ईच्छा शक्ति पर बहुत कुछ निर्भर करता है। इसका ताजातरीन उदाहरण राजस्थान सरकार और राजस्थान का खान एवं भूविज्ञान मंत्रालय है। देश–दुनिया में माइनिंग सेक्टर को नई पहचान देने के कारगर प्रयास राजस्थान में भजन लाल शर्मा सरकार ने कर के दिखाया है। राजस्थान की उपलब्धि को केन्द्र सरकार द्वारा भी सराहा गया और इसी 20 जनवरी, 25 को ओडिशा के कोणार्क में आयोजित नेशनल मांइस मिनिस्टर्स कॉन्फ्रेंस में वर्ष 2023–24 में देश में सर्वाधिक मेजर मिनरल ब्लॉक के ऑक्शन करने पर राजस्थान को प्रथम पुरस्कार देकर राजस्थान के प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया है।

राजस्थान खनिजों की दृष्टि से समृद्ध प्रदेश हैं। राज्य सरकार ने एक बात साफ समझी है कि बेशकीमती खनिजों के अवैध खनन पर अंकुश लगाने का सबसे कारगर तरीका खनिज क्षेत्रों के ब्लॉक या प्लॉट तैयार कर इन्हें पारदर्शी तरीके से ई पोर्टल के माध्यम से नीलाम किया जाए। इससे बहुत हद तक बेशकीमती खनिजों के अवैध खनन को रोका जा सकता है। अरावली और पर्यावरण संरक्षण जहां सस्टेनेबल माइनिंग के लिए जरुरी हो जाता है वहीं अवैध खनन पर कारगर रोक से समस्या का समाधान हो सकता है। राज्य सरकार को एक साथ कई मोर्चों पर काम करना होगा जिसमें खासतौर से अरावली सरंक्षण, पर्यावरण को बनाए रखना, अवैध खनन पर रोक रिवर सेंड के विकल्प के रुप में एम सेंड को प्रोत्साहित करते हुए आमजन को प्रेरित करने जैसी दिशा में आगे बढ़ना होगा। इसके लिए जीरो लॉस माइनिंग की दिशा में आगे बढने के लिए देश दुनिया में माइनिंग सेक्टर में आने वाले बदलावों को आत्मसात करने में भी कोई संकोच नहीं करना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 19 फरवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 8:52 तक, सिद्ध योग रात्रि 8:42 तक, कौलव करण दिन 3:59 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:00 से मीन राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–मकर, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–कुम्भ, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज फुलेरा दोज (स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त), श्री रामकृष्ण परमहंस जयन्ती, पंचक, छत्रपति शिवाजी जयन्ती है। आज से रमजान मु.मास 9 आरम्भ होगा और रोजा आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 8:28 तक, चर 11:17 से 12:41 तक, लाभ–अमृत 12:41 से 3:24 तक, शुभ 4:53 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 6:17

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

वृश्चिक
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

राजस्थान बजट 2026–27 : राजस्थान के समग्र एवं सतत विकास का रोडमैप

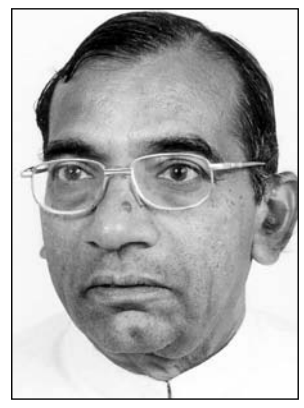

शांतिलाल चप्पलोत

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में यह राजस्थान के समग्र एवं सतत विकास का रोडमैप है। राजस्थान का बजट 2026–27 आठ करोड़ प्रदेशवासियों के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का औपचारिक घोषणापत्र है। यह बजट प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प को राज्य स्तर पर साकार करने की दिशा में ठोस कदम है। कुल 6 लाख 10 हजार 956 करोड़ रुपये के आकार वाला यह बजट वर्ष 2023–24 की तुलना में 41 प्रतिशत बड़ा है।

यह बजट दस सुदृढ़ स्तंभों आधारभूत संरचना का विस्तार, नागरिक सुविधाओं में सुधार, औद्योगिक विकास और निवेश प्रोत्साहन, मानव संसाधन सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा, पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण, सुशासन एवं डिजिटल परिवर्तन, कृषि और किसान कल्याण, हरित विकास तथा वर्ष 2047 तक 4.3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था पर आधारित है। स्पष्ट है कि सरकार अल्पकालिक राहत से आगे बढ़कर दीर्घकालिक संरचनात्मक परिवर्तन की दिशा में सोच रही है।

आर्थिक दृष्टि से भी संकेत उत्साहजनक हैं। राज्य की सकल घरेलू उत्पाद 21 लाख 52 हजार 100 करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है, जो 2023–24 की तुलना में लगभग 41 प्रतिशत अधिक है। प्रति व्यक्ति आय पहली बार 2 लाख 2 हजार 349 रुपये से अधिक होने का अनुमान है, जो 21.15 प्रतिशत की वृद्धि है। स्पष्ट है कि विकास की रफ्तार केवल सरकारी कागजों तक सीमित नहीं, बल्कि नागरिकों की आय में भी परिलक्षित हो रही है। पूंजीगत व्यय के लिए 53 हजार 978 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जो दो वर्ष पूर्व की तुलना में दोगुने से अधिक है। यह निवेश सड़कों, जल, बिजली, चिकित्सा और शहरी ढांचे में दीर्घकालिक संपत्ति सृजन का आधार बनेगा। स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए 32 हजार 526 करोड़ रुपये और ठीन बजट के तहत 33 हजार 476 करोड़ रुपये का प्रावधान यह दर्शाता है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण को समान प्राथमिकता दी जा रही है।

मानव पूंजी पर निवेश इस बजट की केंद्रीय धुरी है। शिक्षा क्षेत्र के लिए 69 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जो वर्ष 2023–24 से 35 प्रतिशत अधिक है। 400 स्कूलों को सीएम राइज विद्यालयों के रूप में उन्नत करने की योजना है। उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से स्पष्ट है कि सरकार गुणवत्ता आधारित सेवाओं की ओर अठासर है। जयपुर के जे.के. लोन अस्पताल में 500 बेड का आईपीडी टावर और आरयूएचएस में 200 बेड का पीडियाट्रिक आईपीडी इसका उदाहरण हैं। युवा शक्ति को अवसर और पारदर्शिता देने की दिशा में राजस्थान स्टेट टेस्टिंग एजेंसी की स्थापना का निर्णय महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन टेस्टिंग सेंटरों के माध्यम से भर्ती परीक्षाओं को पारदर्शी और विश्वसनीय बनाने का प्रयास सराहनीय है। पांच वर्षों में 4 लाख सरकारी नौकरियों के संकल्प की दिशा में 1 लाख से अधिक नियुक्तियां दी जा चुकी हैं, 1 लाख 54 हजार पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी है और 1 लाख पदों का भर्ती कैलेंडर घोषित किया गया है। निजी क्षेत्र में 2 लाख से अधिक रोजगार अवसर सृजित होना भी सकारात्मक संकेत है।

कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए किसान सम्मान निधि के अंतर्गत 76 लाख किसानों के खातों में 10 हजार 900 करोड़ रुपये से अधिक की राशि डीबीटी के माध्यम से स्थानांतरित की गई है। यमुना जल को शेखावाटी क्षेत्र तक पहुंचाने के लिए 32 हजार करोड़ रुपये के कार्य प्रारंभ होंगे और रामजल सेतु लिंक परियोजना में 26 हजार करोड़ रुपये के कार्यादेश जारी हो चुके हैं। जल प्रबंधन की ये परियोजनाएं आने वाले दशकों में प्रदेश की कृषि संरचना को स्थायित्व देंगी।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी ठोस पहल की गई है। स्वयं सहायता समूहों की ऋण सीमा 50 लाख से बढ़ाकर 1 करोड़ रुपये और लखपति दीदी योजना में ऋण सीमा 1 लाख से बढ़ाकर 1.5 लाख रुपये करना महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाने वाला कदम है। जिला स्तर पर रूरल महिला बीपीओ स्थापित करने की योजना ग्रामीण महिलाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने की सोच को दर्शाती है।

पर्यटन और विरासत संरक्षण के माध्यम से रोजगार सृजन की संभावनाओं को भी बल दिया गया है। जैसलमेर के ख़ुड़ी में अल्ट्रा लग्जरी स्पेशल टूरिज्म जोन और शेखावाटी की 660 से अधिक हवेलियों के पुनरुद्धार के लिए 200 करोड़ रुपये का प्रावधान प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को आर्थिक अवसर में बदलने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। राज्य कर्मचारियों और पेंशनर्स की मांगों के परीक्षण के लिए उच्च स्तरीय समिति का गठन यह संकेत देता है कि सरकार प्रशासनिक तंत्र को विकास का सहभागी मानती है। आठवें वेतन आयोग की सिफारिशों के राज्य में क्रियान्वयन पर विचार भी इसी संवेदनशील दृष्टिकोण का हिस्सा है।

समग्र रूप से देखा जाए तो राजस्थान बजट 2026–27 विकास, संतुलन और समावेशन का दस्तावेज है। यह बजट केवल व्यय बढ़ाने का नहीं, बल्कि संरचनात्मक निवेश, मानव विकास और दीर्घकालिक आर्थिक मजबूती का खाका प्रस्तुत करता है। अब वास्तविक कसौटी क्रियान्वयन की होगी। यदि वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और समयबद्ध कार्यान्वयन सुनिश्चित रहा, तो यह बजट राजस्थान को आत्मनिर्भर, समृद्ध और समावेशी विकास की दिशा में निर्णायक रूप से आगे बढ़ाने में सक्षम सिद्ध होगा।

–शांतिलाल चप्पलोत,
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष
राजस्थान

भारत में महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य – एक चुनौती

डॉ. मिनाक्षी धारीवाल

भारत में, विशेष रूप से महिलाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता है। महिलाओं के अधिकारों में प्रगति के बावजूद भी महिलाओं को लैंगिक भेदभाव, सांस्कृतिक अपेक्षाओं, घरेलू जिम्मेदारियों, सीमित शिक्षा और सामाजिक कलंक जैसी कई मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जिससे उनके लिए मदद मांगना मुश्किल हो जाता है और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कई मामले अनुपचारित रह जाते हैं। इसलिए भारत में महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी, जिसमे शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच और लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों पर अधिक जोर सम्मिलित है।

जीवन के विभिन्न चरणों में महिलाएँ किशोरावस्था, युवावस्था, गर्भावस्था, मातृत्व और वृद्धावस्था आदि में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न चुनौतियों का सामना करती हैं। किशोरावस्था व युवावस्था में शैक्षणिक तनाव और शारीरिक बनावट संबंधी चिंताओं से लेकर गर्भावस्था व मातृत्व के हार्मोनल परिवर्तनों व तनाव एवं वृद्धावस्था में देखभाल संबंधी बोझ तक इनमें मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक जटिल और आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं।

भारत में महिलाओं को प्रभावित करने वाले सबसे आम मानसिक विकारों में अवसाद और चिंता शामिल है। इसके अलावा दुर्व्यवहार, हिंसा या असुरक्षित वातावरण से उत्पन्न आघात, शारीरिक बनावट और सामाजिक तुलना का दबाव, खान–पान संबंधी विकार, हार्मोनल परिवर्तनों जैसे प्रसवपूर्व, प्रसवोत्तर अवसाद, पैरीमैनोपौज़, मैनोपौज संबंधी मनोविकार, घर और कार्यस्थल की दोहरी जिम्मेदारियाँ, आर्थिक निर्भरता, नौकरी की असुरक्षा, पितृसत्तात्मक मानदंड आदि बहुत ही लंबी सूची है।

अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में महिलाओं में पुरुषों की तुलना में अवसाद से पीड़ित होने की संभावना दोगुनी होती है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निम्हान्स) के अनुसार अवसाद भारतीय महिलाओं में सबसे आम मानसिक स्वास्थ्य विकारों मे से एक है और इसकी व्यापकता लगभग 40 प्रतिशत है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इस बात पर प्रकाश डाला है कि युवा भारतीय महिलाओं में आत्महत्या की दर वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक है। लैंगिक भेदभाव,घरेलू हिंसा, यौन शोषण, भावनात्मक उपेक्षा और शिक्षा की कमी महिलाओं को अवसाद के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है। इन समस्याओं के कारण जो आघात महिलाओं की मानसिक स्थिति को पहुंचता है वह और भी समस्या को भयावह बना देता है।

भारत में महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक और चुनौती संस्कृतिक अपेक्षाएँ हैं। भारतीय समाज महिलाओं पर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के अनुरूप चलने का बहुत दबाव डालता है। अत्यधिक अपेक्षाओं को पूरा करने में असफलता सामाजिक अलगाव और शर्मिंदगी का कारण बन सकती है, जो मानसिक विकारों में बढ़ावा दे सकती है।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य उपचार प्राप्त करने में महिलाओं के लिए सामाजिक कलंक भी एक बड़ी बाधा है। मानसिक बीमारी को अधिकतर व्यक्तिगत विफलता के रूप में देखा जाता है और इन्हें कभी–कभी परिवार व समुदाय द्वारा बहिष्कृत भी कर दिया जाता है। इस कारण महिलाएँ समय पर अपने लिए मदद भी नहीं मांग पाती क्योंकि उनको आलोचना व अस्वीकृति का डर होता है। भारत में महिलाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच एक और चुनौती है। ये सेवाएँ ग्रोमीण क्षेत्रों में कम पहुँचती हैं और बहुत महंगी भी होती हैं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर न होने के कारण महिलाएँ मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए उपचार करने से भी हिचकती हैं।

इसके अलावा खान–पान संबंधी विकार जैसे एनोरेक्सिया नेर्वोसा, बुलिमिया और बिंज–इटिंग डिसोर्डर आदि युवा महिलाओं के बीच बढ़ती चिंता का विषय है। सोशल मीडिया, विज्ञापन और पतलेपन को महिमामंडित करने वाले संस्कृतिक आदर्श शरीर के प्रति असंतोष और हानिकारक खान–पान संबंधी व्यवहारों को बढ़ावा दे सकते हैं। हमेशा दूसरों से तुलना करना, वजन बढ़ने का डर, खाने को लेकर अपराधबोध, कम आत्मसम्मान और आत्ममूल्य आदि शारीरिक छवि से जुड़ी समस्याएँ हैं जो आज की युवा महिलाओं को बहुत प्रभावित करती है।

महिलाओं में गर्भावस्था के दौरान प्रसवपूर्व अवसाद के लक्षण दिखाई देते हैं। हार्मोनल बदलाव, शारीरिक परेशानी, रिश्तों मे तनाव व प्रसव का डर आदि ऐसे कारण हैं जो महिलाओ में उदासी, चिड़चिड़ापन, अत्यधिक दबाव व नींद संबंधी विकार के लक्षण दिखने लगते हैं। भारत में लगभग 20 प्रतिशत नई माताओं को प्रसवोत्तर अवसाद प्रभावित करता है, सामाजिक सहयोग की कमी, नींद की कमी और आदर्श माँ बनने का दबाव जैसे कारक भी इस समस्या को बढ़ाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमे मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक और अंधविश्वासों को कम करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए शिक्षा अभियान शामिल हों। लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकारों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए, जिससे मानसिक स्वास्थ्य परिणामों में सुधार हो सकता है। मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुलभ और सस्ता बनाने की आवश्यकता है विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में।

खान–पान संबंधी व शरीर की छवि से जुड़ी चिंताओं व समस्याओं को दूर करने के लिए मनोशिक्षा, परामर्श, पोषण संबंधी मार्गदर्शन किया जाये तथा समाज में बॉडी शैमिंग जैसे कलंक को दूर कर सकारात्मक वातावरण बनाया जाये। प्रसवपूर्व व प्रसवोत्तर अवसाद की समस्याओं को जल्दी पहचानना व परामर्श, घर मे सभी की सहायता मिले, चिकित्सा देख–भाल प्रदान करना, सामाजिक सहयोग आदि माँ शिशु के बंधन को काफी हद तक बेहतर बना सकता है और उनकी मानसिक स्थिति को भी अच्छा बना सकता है। मातृ व प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं में मानसिक स्वास्थ्य जांच को एकीकृत किया जाना चाहिए, किफ़ायती महिला परामर्श की उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए तथा सामुदायिक पहल से महिलाओं में साझा अनुभव व अलगाव में कमी लाई जा सकती है जिससे मदद मांगने को कमजोरी नहीं माना जाएगा।

घरेलू हिंसा, यौन शोषण या भावनात्मक उपेक्षा से उत्पन्न आघात से जो महिलाओं की मानसिक स्थिति बदतर हो जाती है उसे अगर हमे दूर करना है तो हमारे समाज को इन्हे सुरक्षित और भेदभाव रहित वातावरण देना होगा तथा महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। परिवार और समुदाय मानसिक समस्याओं पर खुल कर बातचीत करे इससे पूर्वागृह कम होंगे, देखभाल की जिम्मेदारियो को साझा किया जाये, घर व समाज के लोग महिलाओं को परामर्श व पेशेवर सहायता प्रदान करने मे मदद करें जिससे उनको भी इस समाज का सदस्य होने के नाते मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति हो।

महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता कोई सीमित मुद्दा नहीं है बल्कि यह एक सार्वजनिक प्राथमिकता है। जीवन के विभिन्न चरणों में आने वाली मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होकर और उनका निराकरण करने की आवश्यकता है तभी स्थायी परिवर्तन लाया जा सकता है।

-डॉ. मिनाक्षी धारीवाल,
असिस्टेंट प्रो.कानोडिया
महिला महाविद्यालय, जयपुर

राजस्थान विश्वविद्यालय का भूमि घोटाला: विरासत की नीलामी या प्रशासनिक षड्यंत्र?

प्रो. अशोक कुमार

जयपुर की पहचान यहाँ के गुलाबी पत्थरों और ऐतिहासिक स्मारकों से ही नहीं, बल्कि यहाँ के उन शिक्षण संस्थानों से भी है जिन्होंने आधुनिक राजस्थान की नींव रखी। महाराजा और महारानी महाविद्यालय केवल दो कॉलेज नहीं, बल्कि एक जीवित विरासत हैं। लेकिन हाल ही में सामने आए तथ्यों ने राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास में एक काला अध्याय लिख दिया है। इन कॉलेजों की अरबों रुपये मूल्य की भूमि का स्वामित्व चुपचाप जयपुर विकास प्राधिकरण और नगर निगम को हस्तांतरित कर दिया गया। यह घटना न केवल विश्वविद्यालय की स्वायत्तता पर प्रहार है, बल्कि प्रदेश के शैक्षिणक भविष्य के साथ एक क्रूर मजाक भी है।

दस्तावेजों और आधिकारिक सूचनाओं के अनुसार, महाराजा कॉलेज की 48 बीघा 10 बिस्वा और महारानी कॉलेज की लगभग 30 बीघा (कुल 99 बीघा से अधिक का परिसर) भूमि का मालिकाना हक राजस्व रिकॉर्ड में बदल दिया गया है। अपना खाता पोर्टल के डिजिटल रिकॉर्ड बताते हैं कि यह नामांतरण संख्या 49 और 50 के माध्यम से मई–जून 2025 में ही पूर्ण कर लिया गया था।

आश्चर्य की बात यह है कि जिस विश्वविद्यालय प्रशासन को अपनी एक–एक इंच जमीन की रक्षा करनी चाहिए थी, उसे इस बात की भनक तक नहीं लगी–या फिर शायद भनक लगने दी गई और जानबूझकर चुप्पी साधी गई। डॉ. भूपेंद्र सिंह शेखावत (अध्यक्ष, श्री बिशन सिंह शेखावत शोध एवं शिक्षण संस्थान, जो की राजस्थान विश्वविद्यालय में एक जनसंपर्क अधिकारी के रूप में अपनी प्रशंसनीय सेवाएं इस विश्वविद्यालय को दे चुके हैं, पूरे देश में पहली बार राजस्थान विश्वविद्यालय में छात्रों के लिए लागू की गई इंश्योरेंस योजना जैसे अनेक अभिनव कार्य इन्हीं की पहल पर प्रारंभ हुऐ,) ने इस पर गंभीर सवाल उठाए थे कि जब यह प्रक्रिया 7 महीने पहले ही पूरी हो चुकी थी, तो कुलपति कार्यालय ने इसे सिंडिकेट से क्यों छुपाया? इस पूरे हस्तांतरण में कानूनी प्रक्रियाओं को ताक पर रख दिया गया है।

भूमि का स्वरूपः राजस्व विभाग ने संभवतः इस भूमि को सिवायचक (राजकीय बंजर भूमि) मानकर हस्तांतरित किया है। जबकि वास्तविकता यह है कि यह भूमि पूर्व जयपुर रियासत द्वारा विशेष रूप से शिक्षा हेतु हस्तांतरित की गई हेरिटेज संपत्ति है।

मौका निरीक्षण का अभावः किसी भी भूमि के नामांतरण से पूर्व भौतिक सत्यापन अनिवार्य है। इन परिसरों में दशकों से भवन बने हुए हैं, हजारों छात्र पढ़ रहे हैं, फिर राजस्व अधिकारियों ने इसे खाली या हस्तांतरण योग्य कैसे मान लिया?

अधिनियम का उल्लंघनः राजस्थान भू–राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 86(2) स्पष्ट करती है कि यदि कोई नामांतरण गलत तरीके से हुआ है, तो 3 माह के भीतर उसका पुनरावलोकन कर उसे खारिज किया जा सकता है। लेकिन यहाँ प्रशासन ने समय निकलने का इंतजार किया ताकि स्थिति यथावत हो जाए।

विश्वविद्यालय प्रशासन की भूमिकाः रहस्यमयी चुप्पी के मायने

किसी भी स्वायत्त विश्वविद्यालय का सर्वोच्च निर्णयकारी अंग उसकी सिंडिकेट होती है। विश्वविद्यालय की संपत्ति का एक हिस्सा भी यदि किसी अन्य संस्था को दिया जाता है, तो सिंडिकेट की अनुमति अनिवार्य है। यहाँ तो पूरे के पूरे कॉलेज की जमीन ही छिन गई।

कुलपति की भूमिका यहाँ संदेह के घेरे में है। यदि कुलपति को इसकी जानकारी थी, जैसा कि व्हाट्सएप संदेशों और चर्चाओं से संकेत मिलता है, तो उन्होंने सिंडिकेट की आपात बैठक क्यों नहीं बुलाई? क्या विश्वविद्यालय प्रशासन पर किसी राजनीतिक या भू–माफिया दबाव का साया था? यह उदासीनता न केवल प्रशासनिक विफलता है, बल्कि विश्वविद्यालय के प्रति विश्वासघात की श्रेणी में आती है। इस भूमि की बाजार दर आज की तारीख में अरबों रुपये में है। लेकिन नुकसान केवल आर्थिक नहीं है:

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमों के अनुसार, किसी भी संस्थान को ग्रांट या फंड तभी मिलता है जब भूमि उसके नाम पर दर्ज हो। स्वामित्व छिनने के बाद महाराजा और महारानी कॉलेज भविष्य में किसी भी केंद्रीय सहायता से वंचित हो सकते हैं।

विकास कार्यों पर रोकः यदि कल विश्वविद्यालय को नए लैब, डिजिटल लाइब्रेरी या हॉस्टल बनाने हों, तो उसे जेडीए या नगर निगम के सामने हाथ फैलाने होंगे।

निजीकरण का डरः अंदेशा यह भी है कि जेडीए इस प्राइम लोकेशन की जमीन का उपयोग कमर्शियल उद्देश्यों या सार्वजनिक–निजी भागीदारी मॉडल के लिए कर सकता है, जिससे शिक्षा महंगी और दुर्गम हो जाएगी।

जन–आंदोलन की आवश्यकताः अब नहीं तो यह लड़ाई केवल कागजों तक सीमित नहीं रह सकती।

सिंडिकेट की विशेष बैठकः कुलपति को तत्काल प्रभाव से बैठक बुलाकर इस निर्णय के विरुद्ध प्रस्ताव पारित करना चाहिए और इसे राजभवन भेजना चाहिए।

डिजिटल विरोधः विश्वविद्यालय के हजारों शिक्षकों, कर्मचारियों और पूर्व छात्रों को मुख्यमंत्री और राज्यपाल को ईमेल के जरिए अपनी आपत्ति दर्ज करानी चाहिए।

सोशल मीडिया का मोर्चाः आर यू परिसर बचाओ जैसे अभियानों के माध्यम से आम जनमानस को यह बताना होगा कि कैसे उनकी विरासत को चुपचाप बेचा जा रहा है।

निष्कर्षः अस्मिता का प्रश्न

महाराजा और महारानी कॉलेज राजस्थान की अस्मिता हैं। यदि आज हम इस प्रशासनिक सर्जिकल स्ट्राइक पर मौन रहे, तो कल विश्वविद्यालय का मुख्य परिसर भी सुरक्षित नहीं रहेगा। यह समय है कि राज्य सरकार अपनी गलती सुधारे और कुलाधिपति (राज्यपाल) महोदय हस्तक्षेप कर इस अवैध नामांतरण को निरस्त करवाएं। शिक्षा के मंदिरों को राजस्व और संपत्ति के खेल से दूर रखना ही एक सभ्य समाज की पहचान है।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति, कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, पूर्व विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

जनजातीय छात्रावासों में खाद्य सामग्री खरीद पर सदन में हंगामा

नेता प्रतिपक्ष की आपत्ति के बाद स्पीकर देवनानी ने दिए जांच के आदेश

-विधानसभा संवाददाता-

■ मंत्री खराडी ने सदन में कहा कि प्रकरण की जांच के लिए वित्तीय सलाहकार, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, लेखाधिकारी और सहायक लेखाधिकारी की जांच कमेटी गठित की गई है

जयपुर। जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने विधानसभा में कहा कि जनजातीय क्षेत्रीय छात्रावासों में खाद्य सामग्री की खरीद में अनियमितताओं की जानकारी मिलने पर जांच के लिए समिति गठित की गई है। समिति में वित्त सलाहकार, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, लेखाधिकारी और सहायक लेखाधिकारी को शामिल किया गया है। मंत्री खराड़ी ने सदन में आश्वासन दिया कि जांच में जो भी अधिकारी दोषी पाए जाएंगे, उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। यह मुद्दा प्रश्नकाल के दौरान कांग्रेस विधायक अर्जुन बामणिया ने उठाए गए पूरक प्रश्नों के दौरान गरमाया।

बहस के दौरान विधायक बामणिया ने विभिन्न छात्रावासों में खाद्य सामग्री की दरों में अंतर का मुद्दा उठाया। मंत्री दरों का स्पष्ट अंतर नहीं बता सके, जिस पर विपक्ष ने उन्हें घेरने का प्रयास किया। बामणिया ने आरोप लगाया कि अलग-अलग हॉस्टलों में अलग दरों पर खरीद हुई है और बिना टेंडर प्रक्रिया अपनाए भुगतान किया गया है। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि 50 हजार रुपये से अधिक की खरीद टैंडर प्रक्रिया से होनी चाहिए थी, लेकिन वार्डनों को खरीद के अधिकार देकर मनमानी दरों पर खरीद की गई। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि अलग-अलग छात्रावासों में घी 800 रुपये, 550 रुपये और 408 रुपये प्रति लीटर तक खरीदा गया, जो गंभीर अनियमितता दर्शाता है।

सदन में तीखी नोकझोंक और हंगामे के बीच विधानसभा अध्यक्ष ने हस्तक्षेप किया।

उन्होंने मंत्री को पूरे मामले की गहन जांच कराने के निर्देश दिए और बिना अनुमति बोलने वाले विधायकों को कड़ी फटकार लगाई।

मंत्री खराड़ी ने जवाब देते हुए कहा कि, बच्चों को समय पर भोजन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से खरीद की गई थी और जहां दरें अधिक पाई गई हैं, वहां जांच कराई जा रही है।

जांच में दोषी पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी और बिना जांच भुगतान नहीं किया जाएगा। बिना टैंडर खाद्य सामग्री खरीद के मुद्दे पर सदन में काफी देर तक नोकझोंक जारी रही, जिसके बाद स्पीकर के हस्तक्षेप से मामला शांत हुआ।

इससे पपूर्व मंत्री खराड़ी ने बताया कि विभाग ने छात्रावासों को सहकारिता उपभोक्ता भंडार से खाद्य सामग्री खरीदने के निर्देश दिए थे, लेकिन भंडार द्वारा 2 माह बाद राशन उपलब्ध कराने में असमर्थता जताने पर छात्रावासों के लिए बाहर से सामग्री खरीदी।

आश्रम छात्रावास सल्लोपाट (बांसवाड़ा) को 3.42 लाख रुपये का भुगतान किया गया है, जिसकी जांच की जा रही है। उन्होंने यह भी बताया कि वर्ष 2024-25 और 2025-26 में खाद्य सामग्री आपूर्ति के लिए निविदाएं जारी नहीं की गई थीं। संबंधित छात्रावासों-सल्लोपाट व खेडावड़लीपाड़ा (बांसवाड़ा), सुहागपुरा (प्रतापगढ़) और रघुनाथपुरा (डूंगरपुर) के अगस्त से सितंबर 2025 तक के बिलों की प्रतियां सदन में रखी गई।

नगर निगम में रिश्वत लेते ट्रैप हुए दोनों डॉक्टर निलंबित

जयपुर। शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने बुधवार को रिव्यू मीटिंग में साफ चेताया कि किसी भी स्तर पर भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं होगा। उन्होंने नगर निगम जयपुर में एसीबी द्वारा ट्रैप किए गए पशुपालन विभाग के 2 डॉक्टरों को तुंरत निलंबित करने के निर्देश दिए। ज्ञात रहे कि 16 फरवरी को एसीबी ने नगर निगम जयपुर में प्रतिनियुक्ति पर लगे पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. योगेश शर्मा और डॉ. राकेश कलोरिया को 4 लाख रुपए की रिश्वत लेते रंगेहाथों ट्रैप किया था। बुधवार को डॉ. समित शर्मा ने शासन सचिवालय में अफसरों की बैठक लेकर विभागीय योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने अफसरों को साफ चेतावनी दी कि, भ्रष्टाचार किसी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अगर कहीं से भी इस तरह की कोई शिकायत आती है तो उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि कई जगह से सरकारी दवाओं के दुरूपयोग की शिकायतें मिल रही हैं, उसकी जांच की जाए और दोषियों के खिलाफ कड़े कदम उठाएं।

मुख्यमंत्री ने सूर्यकिरण और सारंग एरोबेटिक शो के बारे में चर्चा की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में वायुसेना के अधिकारियों से जयपुर में होने वाले सूर्यकिरण और सारंग एरोबेटिक शो के संबंध में जानकारी ली। अधिकारियों ने बताया कि 20 एवं 22 फरवरी को जल महल की पाल पर प्रस्तावित एरोबेटिक शो में सूर्यकिरण डिसप्ले टीम के विमान और सारंग डिस्पले टीम के हेलिकॉप्टर्स हिस्सा लेंगे। इनके द्वारा ट्राई कलर स्मोक का प्रदर्शन भी किया जाएगा। इन रोमांचकारी हवाई प्रदर्शनों से आम जनता को रूबरू कराने के लिए व्यापक तैयारियां की गई हैं। लगभग 50 हजार दर्शक क्षमता के लिए जल महल की पाल पर व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास, स्टेशन कमांडर विनय भारद्वाज, विंग कमांडर अजय दशरथी और अभिजीत सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। वायुसेना के अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को छायाचित्र भी भेंट किए।

राजस्थान में 200 बांध तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए 300 करोड़ रु. स्वीकृत

जयपुर (विसं)। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने बुधवार को विधानसभा में कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर वर्ष 2026-27 में प्रथम चरण में लगभग 200 जीर्ण-शीर्ण बांधों और तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए 300 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। प्रश्नकाल के दौरान विधायक घनश्याम के पूरक प्रश्नों का जवाब देते हुए मंत्री ने बताया कि सरकार का उद्देश्य जल संरचनाओं को सुदृढ़ कर सिंचाई क्षमता बढ़ाना और जल संरक्षण को मजबूत करना है। मंत्री ने जानकारी दी कि टोडाभीम क्षेत्र के बिशन समंद बांध एवं उससे संबंधित नहर का निर्माण कार्य वर्ष 2027 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है। इसके लिए 12 अगस्त 2025 को प्रशासनिक स्वीकृति के साथ 229.69 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति जारी की गई थी। उन्होंने बताया कि 30 अगस्त 2025 को प्रथम निविदा आमंत्रित की गई, लेकिन किसी भी बिडर ने भाग नहीं लिया। इसके बाद पुनः निविदा प्रक्रिया अपनाई गई और 24 नवम्बर 2025 को तकनीकी मूल्यांकन के बाद वर्क ऑर्डर जारी कर कार्य प्रारंभ कर दिया गया।

सारंग हेलीकॉप्टर डिस्प्ले टीम जयपुर के आसमां में बिखेरेगी रोमांच

जयपुर। भारतीय वायुसेना की सारंग हेलीकॉप्टर डिस्प्ले टीम जयपुर के लोगों को हवाई कौशल, अनुशासन और टीमवर्क का अद्भुत प्रदर्शन दिखाने के लिए पूरी तरह तैयार है। अपनी रंगीन हेलीकॉप्टरों और शानदार फॉर्मेशन फ्लाइंग के लिए प्रसिद्ध यह टीम 19-20 फ़रवरी तक अभ्यास उड़ानें भरेगी, जबकि अंतिम प्रदर्शन 22 फ़रवरी को किया जाएगा।

'सारंग'-संस्कृत में जिसका अर्थ मोर है- भारतीय वायुसेना का गौरवशाली ब्रांड एंबेसडर है, जो इसके एयर वॉरियर्स की पेशेवर दक्षता और उत्कृष्टता का प्रदर्शन करता है। स्थापना के बाद से ही सारंग ने अपनी विशिष्ट समन्वित एरोबेटिक कलाबाज़ियों से दुनिया भर के दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है।

टीम ने वर्ष 2004 में सिंगापुर में एशियन एयरोस्पेस शो में अंतरराष्ट्रीय मंच पर पदार्पण किया और तब से अब तक विश्व के 390 से अधिक स्थानों पर 1200 से ज्यादा प्रदर्शन कर चुकी है।

सारंग टीम स्वदेशी रूप से निर्मित 'ध्रुव' एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर पर उडान भरती है, जिसे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने डिज़ाइन और विकसित किया है। यह टीम अत्यंत फुर्तीले वैरिएंट का संचालन करती है। 'ध्रुव' एक ऑल-वेदर, मल्टी-मिशन सक्षम हेलीकॉप्टर है और 'आत्मनिर्भरता' की भावना का सशक्त प्रतीक भी है-जो भारत की तकनीकी क्षमता और विमानन उत्कृष्टता को दर्शाता है।

जब सारंग टीम जयपुर के आकाश को रंगों से सजाएगी, तब पिंक सिटी में विरासत और उच्च-स्तरीय विमानन का दुर्लभ संगम देखने को मिलेगा। शाही किलों और महलों की कालातीत पृष्ठभूमि में दर्शक एक ऐसे रोमांचक नज़ारे की अपेक्षा कर सकते हैं, जहाँ सटीक फॉर्मेशन फ्लाइंग और शहर की जीवंत आत्मा का सुंदर मेल होगा-जो साहस, कौशल और राष्ट्रीय गौरव, भारतीय वायुसेना की स्थायी पहचान, का उत्सव मनाएगा।

कान्हा रेस्टोरेंट समूह के 33 ठिकानों पर आयकर की छापेमारी

आयकर टीमों ने जयपुर स्थित 26 ठिकानों के साथ-साथ श्रीगंगानगर, करौली, कोटा, हिंडौन और मुंबई स्थित कार्यालयों व अन्य परिसरों में दबिश दी

-कार्यालय संवाददाता-

■ प्राप्त जानकारी के मुताबिक, आयकर अधिकारियों ने बैंक खातों, डिजिटल रिकॉर्ड, नकदी लेन-देन और संपत्तियों से जुड़े दस्तावेजों की गहन जांच की। साथ ही कई महत्वपूर्ण फाइलें और इलेक्ट्रॉनिक डाटा जब्त किए जाने की जानकारी है।

■ प्रारंभिक जानकारी के अनुसार बड़े पैमाने पर आयकर चोरी और वित्तीय अनियमितताओं की आशंका के चलते यह कार्रवाई की गई है। जांच पूरी होने के बाद ही कर चोरी की वास्तविक राशि का खुलासा हो सकेगा

जयपुर। राजस्थान की चर्चित फूड चेन कान्हा रेस्टोरेंट समूह पर आयकर विभाग ने बुधवार सुबह बड़ी कार्रवाई करते हुए प्रदेश सहित अन्य राज्यों में 33 ठिकानों पर एक साथ सर्च ऑपरेशन शुरू किया। यह कार्रवाई बुधवार सुबह शुरू हुई जो अब तक जारी है।

आयकर विभाग के अनुसार सबसे अधिक 26 ठिकानों पर जयपुर में जांच की जा रही है। इसके अलावा श्रीगंगानगर, करौली, कोटा, हिंडौन और मुंबई स्थित कार्यालयों व अन्य परिसरों में भी आयकर टीमों ने दबिश दी। अधिकारियों ने बैंक खातों, डिजिटल रिकॉर्ड, नकदी लेन-देन और संपत्तियों से जुड़े दस्तावेजों की गहन जांच की। कई महत्वपूर्ण फाइलें और इलेक्ट्रॉनिक डाटा जब्त किए जाने की जानकारी है।उदयपुर में जगदीश मंदिर के पीछे स्थित सन एंड मून रेस्टोरेंट और हरिदास जी मगरी स्थित द सिएरा सोल रेस्टोरेंट पर भी आयकर विभाग की कार्रवाई जारी रही। बताया जा रहा है कि दोनों प्रतिष्ठानों का स्वामित्व एक ही समूह के पास है।

सिएरा होटल में 29 कमरे हैं, जहां से खातों और लेन-देन से संबंधित दस्तावेज खंगाले जा रहे हैं। श्रीगंगानगर में नेशनल हाईवे स्थित फैंटम रेस्टोरेंट पर भी आयकर विभाग ने पुलिस जाब्ते के साथ छापा मारा और कारोबार से जुड़े रिकॉर्ड व कंप्यूटर डाटा की जांच की। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार बड़े पैमाने पर आयकर चोरी और वित्तीय अनियमितताओं की आशंका के चलते यह कार्रवाई की गई है। विभागीय जांच पूरी होने के बाद ही कर चोरी की वास्तविक राशि और अन्य तथ्यों का खुलासा हो सकेगा।

प्रधानमंत्री मोदी की प्रस्तावित अजमेर यात्रा पर मुख्यमंत्री ने की तैयारियों पर चर्चा

■ मुख्यमंत्री ने शिलान्यास-लोकार्पण, डीबीटी और नियुक्ति पत्र वितरण के संबंध में अधिकारियों को किया निर्देशित

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 28 फरवरी को प्रस्तावित अजमेर यात्रा से 'विकसित राजस्थान' के संकल्प को मजबूती मिलेगी। प्रधानमंत्री इस यात्रा के तहत प्रदेशवासियों को 23 हजार 500 करोड़ रुपये के विभिन्न विकास कार्यों के शिलान्यास एवं लोकार्पण की सौगात देने के साथ ही युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान करेंगे। शर्मा बुधवार को प्रधानमंत्री की प्रस्तावित अजमेर यात्रा की तैयारियों के संबंध में मुख्यमंत्री कार्यालय में उच्च अधिकारियों के साथ बैठक कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कायड विश्राम स्थली पर प्रधानमंत्री के कार्यक्रम से संबंधित सभी तैयारियां आपसी समन्वय से तय समय में पूरी करें।

मुख्यमंत्री ने डोम, बैठक व्यवस्था, पेयजल, पार्किंग, चिकित्सा व्यवस्था, साफ-सफाई, यातायात प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था सहित जरूरी व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों से फीडबैक लिया।

उन्होंने इस संबंध में निर्देश दिए कि संबंधित अधिकारी पूर्ण जिम्मेदारी से इन सभी व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करें। उन्होंने प्रधानमंत्री के कर कमलों से होने वाले डीबीटी कार्यक्रम और लाभार्थियों के संबंध में अधिकारियों से जानकारी ली एवं जरूरी दिशा-निर्देश प्रदान किए। शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री की इस अजमेर यात्रा को ऐतिहासिक बनाने के लिए सभी विभाग एवं जिला प्रशासन अजमेर मिलकर कार्य करें।

हनुमानगढ़-गंगानगर में बनेगी हैवी मेटल टेस्टिंग लैब

जयपुर (हि.स.)। जलदाय मंत्री कन्हैयालाल ने बुधवार को विधानसभा में कहा कि पंजाब से आने वाले नहरी जल में समय-समय पर अधिक गंदलेपन की समस्या सामने आती है। नहर बंदी के दौरान जल भंडारण की स्थिति में यह समस्या बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि दूषित पानी की समस्या से निपटने के लिए जल गुणवत्ता परीक्षण को सुदृढ किया जा रहा है तथा आवश्यकता अनुसार अतिरिक्त ट्रीटमेंट की व्यवस्था की जा रही है।मंत्री ने आश्वस्त किया कि हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर में हैवी मेटल टेस्टिंग लैब स्थापित की जाएगी। साथ ही प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर पेयजल गुणवत्ता जांच के लिए टेस्टिंग लैब स्थापित करने की योजना है, जिससे जल की निगरानी अधिक प्रभावी हो सके। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ जल संकल्प के अनुरूप राज्य सरकार प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।प्रश्नकाल के दौरान विधायक रूपेंद्र सिंह कुन्नर के पूरक प्रश्नों के उत्तर में मंत्री ने बताया कि करणपुर विधानसभा क्षेत्र में शहरी क्षेत्र की जल मांग 7.9 एमएलडी तथा ग्रामीण क्षेत्र की 9.2 एमएलडी है।

चर्चा में भाग लेने वाले विधायक मंत्री के उत्तर तक सदन में अनिवार्य उपस्थित रहें : देवनानी

स्पीकर ने निर्देश दिए कि जब किसी भी अनुदान की मांग पर संबंधित मंत्री उत्तर देते हैं, उस समय मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए

जयपुर (विसं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को सदन की कार्यवाही के सुचारु संचालन एवं मर्यादा के पालन को लेकर महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश जारी किए। देवनानी ने कहा कि जिन सदस्यों के नाम चर्चा में भाग लेने के लिए निर्धारित किए जाते हैं, वे मंत्री के उत्तर तक सदन में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहे। चर्चा केवल अपने विचार व्यक्त करने तक सीमित न रहे, बल्कि मंत्री के उत्तर को सुनना भी प्रत्येक सदस्य का दायित्व है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों को सीमित कार्य दिवसों के दौरान सदन में सक्रिय और जिम्मेदार भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अक्सर कोरम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जो सदन की कार्यवाही में व्यवधान उत्पन्न करती है। सभी सदस्यों की उपस्थिति अपेक्षित है. विशेषकर वे सदस्य जिनका नाम चर्चा के लिए निर्धारित है।

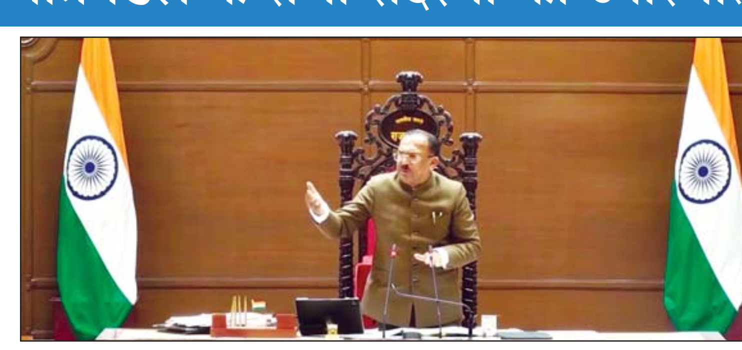

स्पीकर वासुदेव देवनानी ने बुधवार को सदन की गरिमा एवं अनुशासन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

अध्यक्ष देवनानी ने यह भी निर्देशित किया कि जब किसी भी अनुदान की मांग पर संबंधित मंत्री उत्तर देते हैं, उस समय मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि 16 अनुदान मांगों पर अलग-अलग मंत्रियों को उत्तर देना होता है, ऐसे में मंत्रिपरिषद के अन्य सदस्यों का भी सदन में उपस्थित रहकर चर्चा सुनना संसदीय परंपरा और मर्यादा के अनुरूप है। अनुदान की मांगों पर कटौती प्रस्तावों की प्रक्रिया स्पष्ट करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि जिस दिन संबंधित मांग सदन में ली जाती है, उस दिन प्रस्तुत सभी कटौती प्रस्ताव सदन में प्रस्तुत माने जाएंगे। बोलने की अनुमति उन्हीं सदस्यों को दी जाएगी, जिनके नाम विभिन्न दलों के सचेतकों एवं सरकारी मुख्य सचेतक द्वारा आसन को भेजे जाएंगे। प्राथमिकता उन सदस्यों को दी जाएगी, जिनके कटौती प्रस्ताव सूचीबद्ध हैं। मतदान के समय यह परंपरा रही है कि प्रस्तुत कटौती प्रस्ताव स्वतः वापस माने जाते हैं। जिस सदस्य का नाम पुकारा जाएगा, वे अपने सभी कटौती प्रस्तावों पर एक साथ उसी समय अपने विचार रखेंगे। पार्टी के नेता अथवा अन्य प्रमुख सदस्य भी अपनी पार्टी की ओर से विचार व्यक्त कर सकेंगे।

अध्यक्ष देवनानी ने यह भी स्पष्ट किया कि मांगों पर बहस के दौरान उठाए गए प्रश्नों का उत्तर संबंधित मंत्री उसी दिन देंगे। इसके पश्चात मांगों पर मतदान की प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी। समयाभाव के कारण जिन प्रश्नों का उत्तर तत्काल नहीं दिया जा सकेगा, उनका लिखित उत्तर संबंधित सदस्यों को उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रदेश में भजनलाल सरकार का फोकस "डिजिटल शासन-पारदर्शी प्रशासन"

राजस्थान सम्पर्क से 98 प्रतिशत से अधिक परिवाद हुए निस्तारित

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने 2026-27 के बजट में डिजिटल शासन और पारदर्शी प्रशासन के महत्वपूर्ण प्रावधान किए हैं, जो जनसेवा के उच्चतम मापदंड स्थापित करने में कारगर होंगे।

बजट में नेक्स्ट जनरेशन सिटीजन सर्विस रिफॉर्म्स की घोषणा की गई है, जिसमें "वन्स ओनली प्रिंसिपल" लागू किया जा रहा है।

इसमें नागरिकों एवं उद्यमियों से सिर्फ एक बार ही दस्तावेज लिया जाएगा, जिसे विभाग आपस में साझा करेंगे। इसी प्रकार, लोक कल्याणकारी योजनाओं की पात्रता निर्धारण को बेहतर बनाने के लिए जनाधार डेटाबेस को विभिन्न विभागों के मापदंडों और पोर्टल्स से जोड़ने का प्रावधान भी किया गया है। इससे पात्र नागरिकों को सेवाएं समय पर उपलब्ध हो सकेगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

राज्य सरकार ने बजट में प्रमुख सेवाओं को वाट्सएप प्लेटफॉर्म के माध्यम से शुरू किया जाएगा, जिससे आमजन को 100 प्रमुख सेवाएं मिल सकेगी। इसी प्रकार, 25 हजार युवाओं एवं महिलाओं को मिनी ई-मित्र के रूप में अधिकृत किया जाएगा, जो मोबाइल आधारित सेवाएं प्रदान करेंगे।

वहीं, सभी नगरीय निकायों में चरणबद्ध रूप से स्मार्ट सेवा केन्द्र स्थापित कर आमजन को जन्म-मृत्यु व विवाह पंजीयन प्रमाण पत्र, फायर एनओसी एवं अन्य अनुज्ञा पत्र संबंधी सेवाएं ऑनलाइन करने का प्रावधान भी किया गया है।

राज्य सरकार ने डिजिटल राजस्थान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नवीन आईटी पॉलिसी की महत्वपूर्ण घोषणा की है।

वहीं, स्टेट डेटा सेंटर की विभिन्न सेवाएं स्टार्टअप्स, एमएसएमई और नागरिकों को किफायती दर पर उपलब्ध कराने के लिए डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फेसिलिटेशन पॉलिसी और आपदा प्रबंधन, शहरी नियोजन, कृषि एवं पर्यावरण निगरानी में निर्णय क्षमता संवर्धन के लिए जिओ स्पेसियल पॉलिसी की घोषणा भी की गई है। परिणामोन्मुखी जनकल्याणकारी योजनाओं और साक्ष्य आधारित नीति निर्माण के लिए सीएम-प्रमाण (पॉलिसी, रिसर्च एंड एनालिटिक्स फोर मेजरेबल एक्शन एण्ड नेक्सस) यूनिट स्थापित की जाएगी।

वहीं, नीति आयोग की तर्ज पर गठित राजस्थान इंस्टीट्यूट फॉर ट्रांसफॉरमेशन एण्ड इनोवेशन (रीती) के 10 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

नागरिकों के लिए सेवाओं और सुविधाओं का विस्तार करने के लिए में राजकीय कार्यालयों का निरंतर निर्माण और उन्नयन हो रहा है।

गुजरात में हुई "सहकार मंथन" बैठक में राजस्थान के नवाचारों की सराहना

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'सहकार से समृद्धि' की संकल्पना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के अंतर्गत गुजरात के गांधीनगर में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में 17 फरवरी को 'सहकार मंथन' बैठक आयोजित हुई। राजस्थान से सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक ने इस बैठक में सहभागिता की।

दक ने बताया कि 'सहकार से समृद्धि' की दिशा में राज्य में किये जा रहे कार्यों एवं नवाचारों को बैठक में राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया। विशेष रूप से विश्व की वृहत् अन्न भण्डारण योजना के बेहतर क्रियान्वयन, सहकारी समितियों द्वारा मिलेट आउटलेट्स खोले जाने, राष्ट्रीय स्तर पर गठित बहुराज्यीय सहकारी समितियों की राज्य की सहकारी समितियों द्वारा सदस्यता, नवीन एम-पैक्स के गठन, उदयपुर में बाइक ऑन रेंट सेवा शुरू किए जाने एवं सहकार सदस्यता अभियान आदि के लिए राज्य की सराहना की गई। उन्होंने बताया कि विश्व की वृहत् अन्न भण्डारण योजना के क्रियान्वयन में राज्य का देश में प्रथम एवं नवीन एम-पैक्स के गठन में द्वितीय स्थान है। इसी प्रकार, भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड की सदस्यता के मामले में राजस्थान देश में प्रथम स्थान पर है।

केंद्रीय मंत्री अमित शाह का स्वागत प्रदेश के सहकारिता मंत्री ने किया।

उन्होंने बताया कि राज्य की सहकारी समितियों द्वारा अब तक 225 मिलेट आउटलेट्स खोले जा चुके हैं। दक ने बताया कि शाह ने बैठक में राज्यों को अन्न भण्डारण क्षमता बढ़ाने, सभी सहकारी संस्थाओं के बैंक खाते ज़िला सहकारी बैंकों में खोलने व केन्द्र सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में सहकारी बैंकों की भागीदारी बढ़ाने, आगामी दिनों में देश में अनाज भण्डारण क्षमता उत्पादन की तुलना में तीन गुना बढ़ाने पर बल दिया। बैठक में बताया गया कि राज्य की सहकारी समितियां ऋण वितरण के साथ सोलर एनर्जी प्लांट, वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, वेयर हाउस, जिम, लाइब्रेरी, गेस्ट हाउस, ड्रोन, कस्टम हायरिंग सेंटर, कॉमन सर्विस सेंटर एवं ई-मित्र आदि नवीन गतिविधियों को अपना रही है।

भिवाड़ी हादसा : डीएसटी हैड कांस्टेबल का भाई कर रहा था पटाखा फैक्टरी का संचालन

किराए का एग्रीमेंट पुलिस के हाथ लगा, फैक्टरी का मालिक हेमंत कुमार सचदेवा बताया जा रहा है

- जिस फैक्टरी में विस्फोट हुआ था, उसका एग्रीमेंट भिवाड़ी में तैनात डीएसटी के हैड कांस्टेबल योगेश शर्मा के भाई के नाम था और वही इस फैक्टरी को चला रहा था
- आईजी सुहास ने मामले में पुलिस की भूमिका को संदिग्ध माना, दो जनों को गिरफ्तार किया
- भिवाड़ी स्थित खुशखेड़ा कारौली में अवैध पटाखा फैक्टरी में हुये ब्लास्ट में सात लोग जिंदा जल गए थे

अलवर, (निसं)। भिवाड़ी की पटाखा फैक्टरी में हुए विस्फोट के बाद पुलिस जांच में हुए खुलासे में पुलिस को ही कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया है, जिस फैक्टरी में विस्फोट हुआ था, उसका एग्रीमेंट भिवाड़ी में तैनात डीएसटी के हैड कांस्टेबल योगेश शर्मा के भाई के नाम था और वही इस फैक्टरी को चला रहा था। मामले की जांच का नेतृत्व कर रहे आईजी सुहास ने कहा कि जांच में जो भी आरोपी होगा, उसे गिरफ्तार किया जाएगा। अभी पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार दिखाया है। उन्होंने इस मामले में पुलिस की भूमिका को भी संदिग्ध माना है जो जांच के बाद साफ हो जाएगी।

जानकारी के अनुसा गत दिनों खैरथल-तिजारा जिले के भिवाड़ी स्थित खुशखेड़ा कारौली में जिस अवैध फैक्टरी में ब्लास्ट में सात लोग जिंदा जल गए, उसे भिवाड़ी डीएसटी पुलिस के हेड कॉन्स्टेबल योगेश शर्मा का भाई हेमंत शर्मा चला रहा था। किराए का एग्रीमेंट पुलिस के हाथ लग गया है। फैक्टरी का मालिक हेमंत कुमार सचदेवा है। मामले में एक और चौंकाने वाले खुलासा ये भी हुआ है कि डीएसटी के प्रभारी यानी टपूकड़ा थानेदार और हैड कॉन्स्टेबल योगेश शर्मा गोल्डन तुलिप होटल के बगल की आवासीय सोसाइटी में फ्लैट नंबर 1205 में एक साथ रह रहे थे। ये फ्लैट फैक्टरी के मालिक हेमंत कुमार की पत्नी ज्योति के नाम है। यही नहीं पटाखों की दो अन्य अवैध फैक्ट्रियों को चलाने वाला भी यही गिरोह है। हादसे वाली रात एक बजे पुलिस ने हैड कॉन्स्टेबल योगेश शर्मा के भाई हेमंत के शाहजहांपुर स्थित घर में रेड मारी और हेमंत को हिरासत में ले लिया। अगले दिन डीएसपी कैलाश चौधरी और थानेदार दारा सिंह ने टपूकड़ा थानेदार और हेड कॉन्स्टेबल योगेश के फ्लैट पर जांच की। फ्लैट के कागजात की जांच से खुलासा हुआ कि दोनों जिस 1205 नंबर फ्लैट में रह रहे थे, उसकी मालकिन फैक्टरी मालिक हेमंत सचदेवा की पत्नी ज्योति कुमारी है। इससे पहले ये दोनों पुलिस वाले बगल के फ्लैट में रह रहे थे।

जांच कर रहे पुलिस अधिकारी ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि फैक्टरी का मालिक तो हेमंत सचदेवा है, लेकिन फैक्टरी को चलाने का एग्रीमेंट हेड कॉन्स्टेबल के भाई हेमंत शर्मा के नाम किया हुआ था। हेमंत शर्मा कभी कभार ही टपूकड़ा भिवाड़ी आता था। हैड कॉन्स्टेबल योगेश शर्मा और प्रभारी मुकेश वर्मा का लोकसभा चुनावों से पहले जयपुर ट्रांसफर कर दिया था, लेकिन बाद में दोनों ही वापस आ गए। मुकेश वर्मा को डीएसटी प्रभारी बना दिया गया तो उन्होंने हैड कांस्टेबल योगेश शर्मा को भी डीएसटी में ले लिया। दोनों पहले ही साथ ही रहते आए हैं।

आईजी सुहास ने बताया कि ब्लास्ट के दूसरे दिन दो मंजिल भवन में बड़ी मात्रा में एक्सप्लोसिव मिला। उस गोदाम में अधिक देर रुक भी नहीं सकते। इसके अलावा तीसरी जगह गोदाम मिला है। वहां आधा गोदाम विस्फोटक से भरा है। चीन से आने वाले कच्चे माल की जानकारी मिली है। उसका भी पता कर रहे हैं। भिवाड़ी पुलिस ने कभी कोई कच्चा माल बरामद नहीं किया। यह सोचने वाली बात है। भिवाड़ी पुलिस को इसका जवाब देना चाहिए। सूचना मिलने पर कार्रवाई होगी। हम लूज काम नहीं करेंगे। सख्ती से काम करेंगे। पूछताछ कर रहे हैं। हेमंत शर्मा और अभिनंदन को अरेस्ट कर लिया। अभी एक और मुल्जिम को लेकर आना है।

पटाखा फैक्टरी में धमाके को लेकर कांग्रेस का प्रदर्शन :- भिवाड़ी के खुशखेड़ा क्षेत्र में पटाखा फैक्टरी में भीषण धमाके और आगजनी की घटना के विरोध में बुधवार को जिला कांग्रेस कमेटी ने कलेक्ट्रेट, सचिवालय पहुंचकर प्रदर्शन किया। इस दौरान जब कोई अधिकारी ज्ञापन लेने के लिए बाहर नहीं आया तो कार्यकर्ता सचिवालय परिसर में ही धरने पर बैठ गए। करीब आधे घंटे बाद एडीएम बीना महावर को उनके चैंबर में जाकर ज्ञापन सौंपा और कार्रवाई की मांग की गई।

जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश गंगावत ने कहा कि प्रशासन का कोई भी अधिकारी मौके पर ज्ञापन लेने नहीं पहुंचा। अधिकारी बाहर क्यों नहीं आ रहे हैं? यह कहकर उन्होंने कार्यकर्ताओं के साथ सचिवालय के अंदर ही धरना शुरू कर दिया। अल्पसंख्यक विभाग के जिलाध्यक्ष एमडी शाहुन ने कहा कि खुशखेड़ा स्थित पटाखा फैक्टरी में आग लगने से कई श्रमिकों की मौत हो गई, जबकि कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। यह अत्यंत दुखद और चिंताजनक घटना है, जिसने पूरे क्षेत्र को झकझोर कर रख दिया है।

सरकारी स्कूल में युवक-युवती के शव फंदे पर लटके मिले

आशंका जताई जा रही है कि युवक-युवती ने प्रेम-प्रसंग के कारण सुसाइड किया है

- घटना जिले के चौरासी थाना क्षेत्र के गैंजी सीनियर सैकेंडरी स्कूल की है
- युवक की पहुचान हुई, लड़की की शिनाख्त नहीं हो पाई है, जांच शुरु

डूंगरपुर, (निसं)। डूंगरपुर एक सरकारी स्कूल में युवक-युवती के शव मिलने से दहशत फैल गई। आशंका है कि दोनों ने प्रेम-प्रसंग के कारण सुसाइड किया है। घटना जिले के चौरासी थाना क्षेत्र के गैंजी सीनियर सेकेंडरी स्कूल की है। बुधवार सुबह करीब आठ बजे ग्रामीणों ने पुलिस को शवों को लेकर जानकारी दी थी। पुलिस को दोनों की बॉडी क्लासरूम के बाहर निकले एक सरिये पर लटकी हुई मिली। मृतक युवक की पहचान मनोज पुत्र सुरेश खराड़ी, निवासी पाकरोन के रूप में हुई। वहीं लड़की की पहचान अब तक नहीं हो सकी है।

पुलिस ने बताया कि युवक पहले से शादीशुदा था। प्रेम-प्रसंग के चलते युवक एक फरवरी को अपनी पत्नी से झगड़ा कर घर से निकल गया था। युवक की पत्नी ने 17 फरवरी को चौरासी थाने में पति की गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज कराई थी। चौरासी थाने के हैड कॉन्स्टेबल हजारीलाल गुर्जर ने बताया कि बुधवार सुबह पुलिस को सूचना मिली। जिसमें लोगों ने बताया कि स्कूल की नई बन रही बिल्डिंग की छत पर निकले हुए लोहे के सरियों से एक युवक-युवती के शव लटके हुए हैं। मृतक मनोज मजदूरी करता था। पत्नी की रिपोर्ट के अनुसार प्रेम-प्रसंग के कारण ही वो झगड़ा कर घर से निकल गया था। मनोज के एक बेटी भी है।

स्कूल की प्रिंसिपल जशोदा कलासुआ ने बताया कि स्कूल सुबह दस बजे खुलता है, इसलिए सुबह के समय बच्चे या स्टाफ कोई नहीं था। हालांकि इन दिनों परीक्षा के कारण सुबह आठ बजे स्टाफ आ जाता है, लेकिन आज कोई परीक्षा नहीं थी। दोनों शव स्कूल के पिछले हिस्से में मिले हैं।

आर.पी.एस.सी. : सहायक आचार्य परीक्षा की विचारित सूची जारी

अजमेर, (निसं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक आचार्य (चिकित्सा शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024 अंतर्गत ब्रॉड स्पेशियलिटी ओटो रहिनो लारिंजोलॉजी-हेड एंड नेक विषय की पात्रता जांच हेतु विचारित सूची जारी की गई है। 3 जुलाई 2025 को आयोजित परीक्षा के आधार पर 30 अभ्यर्थियों को अस्थायी रूप से पात्रता जांच के लिए सूचीबद्ध किया गया है। आयोग सचिव ने स्पष्ट किया कि यह सूची केवल दस्तावेज सत्यापन के उद्देश्य से जारी की गई है तथा इसे साक्षात्कार के लिए अंतिम चयन सूची नहीं माना जाए। सूची में सम्मिलित अभ्यर्थियों को आयोग की वेबसाइट से विस्तृत आवेदन पत्र डाउनलोड कर दो प्रतियों में पूर्ण रूप से भरकर समस्त शैक्षणिक, प्रशैक्षणिक, जाति एवं अन्य आवश्यक प्रमाण-पत्रों की छायाप्रति सहित 4 मार्च 2026 सायं 6 बजे तक आयोग कार्यालय में प्रस्तुत करना होगा। विज्ञापन की शर्तों के अनुरूप पात्रता पूरी नहीं करने वाले अभ्यर्थियों की उम्मीदवारी निरस्त कर दी जाएगी।

मत्स्य विकास अधिकारी भर्ती की मुख्य सूची जारी : -वहीं राजस्थान लोक सेवा आयोग ने सहायक मत्स्य विकास अधिकारी (मत्स्य विभाग) भर्ती परीक्षा-2024 की मुख्य सूची जारी कर 8 अभ्यर्थियों को सफल घोषित किया है। आयोग सचिव के अनुसार 28 अक्टूबर 2025 को जारी विचारित सूची में शामिल अभ्यर्थियों की पात्रता जांच एवं दस्तावेज सत्यापन संबंधित विभाग द्वारा पूर्ण किया गया। इसके उपरांत पात्र पाए गए अभ्यर्थियों की मुख्य सूची जारी की गई है।

कार से 4.80 लाख का डोडा-चूरा जब्त, तीन गिरफ्तार

- बारां-झालावाड़ राष्ट्रीय राजमार्ग खानपुर तिराहा पर नाकाबंदी में कार्रवाई की

कोटा, (निसं)। अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत कोटा ग्रामीण इलाके की बपावर कलां पुलिस टीम ने नाकाबंदी के दौरान कार्रवाई करते हुए एक कार से 31.880 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा बरामद किया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए तीन तस्करों को भी गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम द्वारा पकड़े गये अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में 4 लाख 80 हजार कीमत बताई गई है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि अवैध गतिविधियों एवं तस्करी की रोकथाम के लिये ऑपरेशन रूट क्लियरेंस अभियान के तहत बपावर कलां के थानाधिकारी मदनलाल ढाका ने मय जाब्ता बारां-झालावाड़ राष्ट्रीय राजमार्ग खानपुर तिराहा पर नाकाबंदी कर वाहनो की चैकिंग की। नाकाबंदी में वाहन चैकिंग के दौरान एक कार को रोक कर कार की तलाशी ली गई तो कार में से अवैध मादक पदार्थ 31.880 किलोग्राम डोडा-चूरा बरामद किया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि पकड़े गये अवैध मादक पदार्थ की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में 4.80 लाख रूपये के करीब कीमत आंकी गई। पुलिस टीम ने मौके पर एनडीपीएस एक्ट में कार्रवाई करते हुए जिला बारां के मनोहर घाट शिवाजी कॉलोनी निवासी अशोक (21), जिला बारां के रामनारायण जी की बाड़ी अस्पताल रोड़ निवासी आशु यादव (21) एवं जिला बारां के कृष्णा कॉलोनी निवासी मनीष शर्मा (24) को गिरफ्तार किया। पकड़ गये आरोपियों से अनुसंधान जारी है। उक्त कार्रवाई ग्रामीण अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकल्याण मीणा के निर्देशन में पुलिस उप अधीक्षक वृत सांगोद नरेन्द्र जैन के सुपरविजन में की गई।

1.24 करोड़ की ऑनलाइन ठगी के आरोपी को पकड़ा

झुंझुनूं, (निसं)। सायबर अपराध थाना पुलिस ने निवेश और इंश्योरेंस में मोटे मुनाफे का झांसा देकर करीब एक करोड़ 24 लाख की ऑनलाइन ठगी करने के मामले में आरोपी पंकज कुमार को गिरफ्तार किया है। पुलिस मामले में आरोपी से पूछताछ कर रही है

कार्रवाई एसपी बृजेश ज्योति उपाध्याय, एएसपी देवेन्द्र सिंह राजावत, एएसपी त्वरित अनुसंधान सेल फूलचंद मीणा के मार्गदर्शन में की गई। सायबर अपराध थाना प्रभारी रामखिलाड़ी मीणा आरपीएस के सुपरविजन में पुलिस निरीक्षक गोपाललाल के नेतृत्व में गठित टीम ने आरोपी को दबोचा।

मामले के अनुसार परिवादी सज्जन सिंह को सायबर ठगों ने निवेश एवं इंश्योरेंस योजना में मोटे मुनाफे का लालच देकर ऑनलाइन एक करोड़ 24 लाख रुपए की ठगी कर ली। मामले में प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की गई। तकनीकी संसाधनों और साक्ष्यों के आधार पर आरोपी पंकज पुत्र संजय कुमार यादव निवासी कुंभकोट थाना सुकेत जिला कोटा ग्रामीण हाल किरायेदार गली नं.01, रामचंद्रपुरा, कोटा शहर के खिलाफ अपराध प्रमाणित पाए जाने पर गिरफ्तार किया गया। आरोपी से पूछताछ कर आगे की जांच जारी है। पुलिस ने आमजन से अपील की है कि किसी भी प्रकार के ऑनलाइन निवेश या इंश्योरेंस प्रस्ताव में धनराशि लगाने से पहले पूरी जांच-पड़ताल करें और संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत सायबर हेल्पलाइन पर दें।

फरार इनामी गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। पुलिस थाना पुर एवं भीलवाड़ा की संयुक्त टीम ने 564 किलो डोडा-चूरा तस्करी के मामले में दो साल से फरार चल रहे 15 हजार रुपये के इनामी अपराधी मुकेश कुमार को हरियाणा से गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार 31 मार्च 2024 को तत्कालीन थानाधिकारी पुर जय सुल्तान सिंह कविया मय टीम ने ट्रक कंटेनर से 564.200 किलोग्राम डोडा चूरा जब्त कर अभियुक्त रोहताश विश्नोई को गिरफ्तार किया गया था। इस प्रकरण में मुख्य अभियुक्त मुकेश कुमार पुत्र आत्माराम सुथार फरार चल रहा था।

कार्यालय नगर परिषद, टोंक

क्रमांक नपटों/गैराज/2025-26/14592 दिनांक :- 13.02.2026

बोली आमन्त्रण सूचना गैराज 01/2025-26

सफाई कार्य हेतु 02 चल शौचालय कय किये जाने का कार्य (कुल लागत 18.00 लाख) हेतु पंजीकृत फर्मों/व्यवहारी फर्मों से निर्धारित प्रपत्र निविदा आमंत्रित की जाती है। बोली से सम्बन्धित विवरण राज्य सरकार की http://sppp.rajasthan.gov.in तथा http://eproc.rajasthan.gov.in की वेबसाईट पर देखी एवं डाउनलोड की जा सकती है।

UBN NO. -DLB2526B1693 & NIB NO. -DLB2526GLOB34438

राज.संवाद/सी/25/20075 आयुक्त, नगर परिषद, टोंक

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर

टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001

दुरभाष स.0294-2421255, 2420013, Helpline no. 0294-2426262 वेबसाइट. www-udaipurmc.org

क्रमांक : निविजा/2025-26/ई -36 दिनांक :- 13.02.2026

(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या - ई 36/2025-26

नगर निगम कार्यालय उदयपुर द्वारा विभिन्न विकास कार्यो हेतु कुल राशि रु0 17.25 लाख के कुल 01 कार्यो हेतु इच्छुक निविदादाताओं से निर्धारित निविदा प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया के तहत निविदा आमंत्रित की जाती है निविदा के कार्यो की प्रारम्भ तिथि 13.02.2026 एवं अंतिम तिथि 23.02.2026 तथा निविदा खुलने की तिथी 24.02.2026 रहेगी निविदा से संबंधित अन्य समस्त विवरण इंटरनेट साईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है। UBN No. UNP2526WSOB00154

राज.संवाद/सी/25/20093 अधीक्षण अभियन्ता, नगर निगम, उदयपुर

चेन स्नैचिंग गैंग का इनामी वांछित आरोपी गिरफ्तार

चिड़ावा, (निसं)। कस्बे में चेन स्नैचिंग की वारदात को अंजाम देने वाली अंतर्राज्यीय गैंग के 10 हजार रुपए के ईनामी वांछित आरोपी विक्रम उर्फ राजू को गिरफ्तार किया है। आरोपी को जिला कारागृह झुंझुनूं से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया गया।

कार्रवाई एसपी बृजेश ज्योति उपाध्याय के निर्देशन, एएसपी देवेंद्रसिंह राजावत के मार्गदर्शन तथा चिड़ावा डीएसपी विकास धींधवाल के सुपरविजन में सीआई आशाराम गुर्जर के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा की गई। जानकारी के अनुसार दो अगस्त 2024 को परिवादिया मंजू पत्नी कृपानंद नेहरा निवासी चिड़ावा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि शाम करीब पांच बजे वह चिड़ावा बाजार में बांके बिहारी शोरूम के सामने सब्जी ले रही थी। इसी दौरान बिना नंबर की मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक आए और पीछे से झपट्टा मारकर उनकी सोने की चेन तोड़कर फरार हो गए। एक युवक ने हेलमेट पहन रखा था, जबकि दूसरा बिना हेलमेट के था। प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की गई। आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए और विशेष टीम गठित की गई। तकनीकी साक्ष्य एवं मुखबिर की सूचना के आधार पर 9 जनवरी 2025 को आरोपी तारिया उर्फ दारासिंह एवं विक्रम सिंह को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया। मामले में वांछित आरोपी विक्रम उर्फ राजू पर 10 हजार रुपये तथा आरोपी कर्मवीर पर 2 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। लगातार तलाश के बाद 17 फरवरी 2026 को विक्रम उर्फ राजू को जिला कारागृह झुंझुनूं से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया गया। आरोपी के विरुद्ध पूर्व में चोरी एवं लूट के लगभग दो दर्जन प्रकरण दर्ज हैं। पूर्व में तारिया उर्फ दारासिंह (24) निवासी शिरावास थाना अकबरपुर जिला अलवर तथा विक्रम सिंह (28) निवासी टापरी थाना कोटपुतली जिला कोटपुतली-बहरोड़ को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस के अनुसार गैंग संगठित रूप से अंतर्राज्यीय स्तर पर चेन स्नैचिंग की वारदातों को अंजाम देती थी। मामले में गहन अनुसंधान जारी है।

वृद्धा से दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

पिलानी, (निसं)। स्थानीय पुलिस ने 60 वर्षीय वृद्ध महिला को डरा-धमकाकर दुष्कर्म करने एवं आभूषण ले जाने के आरोपी मुकेश उर्फ सूडिया को घटना के 48 घंटे के भीतर गिरफ्तार किया है।

मामले के अनुसार परिवादिया ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि आरोपी रात्रि के समय उसके घर में घुसा और चाकू की नोक पर डराकर कपड़े फाड़ दिए तथा उसके साथ दुष्कर्म किया। जाते समय आरोपी आभूषण उतारकर ले गया और किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर थाना पिलानी द्वारा तत्काल अनुसंधान शुरू किया गया। अनुसंधान के दौरान आरोपी मुकेश उर्फ सूडिया के विरुद्ध अपराध प्रमाणित पाए जाने पर गिरफ्तारी के लिए टीम गठित की गई। पुलिस टीम ने आसूचना संकलन कर संभावित स्थानों पर दबिश दी और मात्र 48 घंटे में आरोपी को दस्तयाब कर गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को न्यायालय में पेश कर न्यायिक अभिरक्षा में भिजवाया जाएगा। आरोपी 22 वर्षीय मुकेश उर्फ सूडिया पुत्र रणजीत बंजारा है, जिसके खिलाफ तीन प्रकरण दर्ज हैं।

गांजा-अफीम के 456 पौधे जब्त, दो जनों को दबोचा

जोधपुर, (कासं)। ग्रामीण पुलिस ने अवैध मादक पदार्थों की खेती के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) और आसोप पुलिस ने संयुक्त अभियान में गांजे के 18 और अफीम के 438 पौधे जब्त किए हैं। इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

ग्रामीण पुलिस अधीक्षक नारायण टोगस ने बताया कि अवैध मादक पदार्थों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। ग्राम ढंढौरा की सरहद में एक ट्यूबवेल पर अवैध रूप से गांजे और अफीम की खेती पाई गई। गिरफ्तार किए गए आरोपी ढंढौरा निवासी जोगाराम पुत्र मोटाराम और जीवणराम पुत्र चेलाराम है। इन दोनों ने अपनी जीरे और गेहूं की फसल के साथ अवैध रूप से अफीम और गांजे के पौधे उगा रखे थे। पुलिस अधीक्षक नारायण टोगस ने बताया कि जिले में अन्य फसलों की आड़ में अवैध रूप से अफीम और गांजे की खेती की लगातार शिकायतें मिल रही थी। इन शिकायतों पर जिला विशेष टीम और सभी थानाधिकारियों को विशेष अभियान चलाकर प्रभावी कार्रवाई के निर्देश दिए गए थे। डीएसटी के हैड कांस्टेबल मोहनराम की सूचना पर आसोप थानाधिकारी सुरेंद्र कुमार दुगस्तावा और जिला विशेष टीम प्रभारी श्रवणकुमार भंवरिया के नेतृत्व में टीम ने यह कार्रवाई की। आसोप पुलिस थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

टोंक में गांजे के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जिला स्पेशल टीम प्रभारी ओमप्रकाश के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा बरोनी थाना क्षेत्र के बरोनी गांव में छापामार कर दो आरोपियों के कब्जे से एक मोटरसाइकिल पर करीब 75 हजार रूपये कीमत का डेढ़ किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा बरामद किया गया। वहीं खरीद फरोख्त राशि 83500 रूपये नकद जब्त की।

डीएसटी प्रभारी ओमप्रकाश ने बताया कि आरोपी विकास (23) पुत्र प्रहलाद जाट निवासी नटवाड़ा व राकेश (32) पुत्र रामफूल निवासी बरोनी जो काफी लम्बे समय पर अवैध मादक पदार्थ गांजे के छोटे-छोटे पैकेट बनाकर अलग-अलग स्थानों पर गांजे की सप्लाई कर रहे थे तथा युवा वर्ग की नसों में जहर घोलने का काम कर रहे थे, जिसे डीएसटी की इस कार्रवाई से नाकाम किया गया। डीएसटी प्रभारी ओमप्रकाश ने बताया कि इस दौरान दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके विरूद्ध बरोनी थाना पर एनडीपीएस एक्ट में प्रकरण दर्ज किया जाकर अनुसंधान जारी है।

कार्यालय कृष्णा महिला सर्वांगीण विकास सह. समिति लि.

बालघाट ब्लॉक टोडाभीम जिला करौली

Sr. no. -238 Date:-10.02.2026

Notice inviting E-Tender

E-Tender for Purchase of livelihood assets (agricultural inputs, small businesses and goats) in Livelihood Assistance Grant to deprived families in the Samaveshi Aajeevika Youjana are invited from interested bidders up to 12.00 PM of 20.02.2026 at https://eproc.rajasthan.gov.in. Other particulars of the tender may be visited on procurement portal http://sppp.rajasthan.gov.in, https://eproc.rajasthan.gov.in and Departmental website http://www.rajeevika.rajasthan.gov.in.

UBN. RGA2526GLRC00385

DIPR/C/3268/2026 DPM

Office of The Executive Engineer, Water Resources Division, Kota

क्रमांक-EE/WR/Div./Acct./2025-26/3661-69 Date: 09/02/2026

NIT No.- 18/2025-26

On behalf of the Governor of Rajasthan, e-Tender from eligible Bidders for the Works For Item No. 01 "Repair and Renovation of Anicut in Chhiparda Village Tehsil Digod District Kota" (Est. cost. Rs. 66.16 Lac) Item No. 02 "Repair and Renovation of Anicut in Sarola Village Tehsil Digod District Kota" (Est. cost. Rs. 57.89 Lac) Item No. 03 "Repair and Renovation of Anicut in Surela Village Tehsil Digod District Kota" (Est. cost. Rs. 57.89 Lac) for completion period 12 Months including rainy season are invited from interested bidders from 10.02.2026 (9:30 Hr) to 19.02.2026 till 18:00 Hr other particulars, terms & conditions may be seen on the procurement portal https://eproc.rajasthan.gov.in, www.waterrajasthan.gov.in. http://sppp.rajasthan.gov.in, www.dipr.rajasthan.gov.in and

NIB CODE : WRD2526A0718

UBN No. :

Item No. 01- WRD2526WSOB02602

Item No. 02- WRD2526WSOB02603

Item No. 03- WRD2526WSOB02604

(Anil Meena)
Executive Engineer
Water Resources Division, Kota

DIPR/C/3072/2026

डूंगरपुर में 40 हजार किलो इथेनॉल से भरा टैंकर हाइवे पर पलटा, बड़ा हादसा टला

- क्रेन की मदद से टैंकर को सीधा कर हटाया, हाइवे पर फैला इथेनॉल
- टैंकर उत्तर प्रदेश के बलिया से इथेनॉल केमिकल भरकर गुजरात के जामनगर जा रहा था

डूंगरपुर, (निसं)। जिले के बिछीवाड़ा स्थित नेशनल हाइवे-48 पर मंगलवार रात करीब आठ बजे एक केमिकल से भरा टैंकर बेकाबू होकर पलट गया। इस हादसे में टैंकर ड्राइवर को मामूली चोटें आई हैं। टैंकर से इथेनॉल सड़क पर फैल गया, जिससे कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित हुआ। पुलिस ने क्रेन की सहायता से पलटे हुए टैंकर को हटाया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, यह टैंकर उत्तर प्रदेश के बलिया से 40 हजार किलो लीटर इथेनॉल केमिकल भरकर गुजरात के जामनगर जा रहा था। टैंकर ड्राइवर ललित कुमार पाल निवासी बलिया, (उत्तर प्रदेश) रतनपुर मोड़ के पास पहुंचा ही था कि वाहन अचानक बेकाबू होकर हाइवे पर पलट गया। हादसे के बाद टैंकर में छेद हो जाने से केमिकल सड़क पर बहने लगा, जिससे मौके पर कुछ देर के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सुरक्षा कारणों से आधे घंटे तक वाहनों की आवाजाही रोक दी गई। सूचना मिलते ही बिछीवाड़ा और रतनपुर पुलिस मौके पर पहुंची। डूंगरपुर फायर ब्रिगेड की टीम भी घटनास्थल पर पहुंची। फायर ब्रिगेड के ड्राइवर शंकरलाल कटारा, फायर प्रभारी धूलेश्वर परमार और फायरमैन प्रवीण प्रजापत ने सड़क पर फैले केमिकल पर पानी का छिडकाव कर स्थिति को नियंत्रित किया।

विराटनगर में सिलेंडरों से भरा ट्रक पलटा

पावटा, (निसं)। विराटनगर थाना क्षेत्र के विराटनगर-तेवड़ी सड़क मार्ग पर मंगलवार देर रात एलपीजी गैस सिलेंडरों से भरा एक ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। गनीमत रही कि हादसे के समय यातायात कम होने से हादसा टल गया।

थाना क्षेत्र के एएसआई कृष्ण कुमार ने बताया कि गत रात करीब आठ बजे सूचना मिली कि अजमेर से छोटे-बड़े एलपीजी गैस सिलेंडर भरकर अलवर जा रहा ट्रक तेवड़ी घाटी में अचानक अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गया। ट्रक पलटने से सिलेंडर सड़क पर बिखर गए, जिससे कुछ देर के लिए मार्ग अवरुद्ध हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस जाब्ते के साथ मौके पर पहुंची और स्थिति को संभाला। साथ ही अलवर गैस एजेंसी को सूचना दी गई। एजेंसी के कर्मचारी भी मौके पर पहुंचे और क्रेन की सहायता से ट्रक को सड़क किनारे करवाया गया। बाद में बिखरे हुए सिलेंडरों को दूसरे वाहन में लोड कर अलवर रवाना किया गया। हादसे में ट्रक चालक शीशराम जाट को हल्की चोट आई, जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। विराटनगर थाना पुलिस ने मौके पर सुरक्षा व्यवस्था बनाकर यातायात को सुचारू कराया। समय रहते राहत कार्य होने और यातायात कम होने के कारण संभावित बड़ा हादसा टल गया।

विराटनगर-तेवड़ी सड़क मार्ग पर ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया।

मार्बल माइंस हादसे में ऑपरेटर की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। चौरासी थाना क्षेत्र के सुराता गांव में एक मार्बल माइंस में हुए हादसे में हिटाची ऑपरेटर की मौत हो गई। मंगलवार को हिटाची मशीन उतारते समय क्रेन की लोहे की केबल टूटने से यह हादसा हुआ। मृतक की पहचान सुराता निवासी मगनलाल कटारा के रूप में हुई है, जो मार्बल माइंस में हिटाची ऑपरेटर का काम करता था। घटना उस समय हुई जब क्रेन की मदद से हिटाची मशीन को माइंस के नीचे उतारा जा रहा था और मगनलाल नीचे माइंस में खड़ा था। अचानक क्रेन की लोहे की केबल टूट गई, जिससे मशीन नीचे गिरी। मशीन से बंधी हुई लोहे की केबल मगनलाल के सिर पर जा लगी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलने पर पुलिस और परिजन मौके पर पहुंचे। परिजनों ने घटनास्थल पर हंगामा शुरू कर दिया और शव को मोर्चरी में रखवाने से इंकार कर दिया। वे माइंस मालिक को मौके पर बुलाने की मांग पर अडे हुए हैं। पुलिस परिजनों को समझाने का प्रयास कर रही है।

कार्यालय नगर परिषद बारां (राज.)

nagarpalikabaran@gmail.com स्टेशन रोड़, बारां Phone : 07453-230106

क्रमांक : नपबा/निर्माण/2026/11228-30 दिनांक : 13.02.2026

ई-टेण्डर सूचना संख्या : निर्माण 110/2025-26

नगर परिषद बारां द्वारा राजस्थान सरकार के अभियांत्रिकी विभागो में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदको अथवा पीडब्ल्यूएफएआर रूल्स के अन्तर्गत पात्र संवेदको से विभिन्न निर्माण कार्यो के लिये निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन निविदा आमन्त्रित की जाती है। संवेदक निविदा प्रपत्र व विवरण पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखें। कार्यो की लागत 10.76 लाख रूपये से 38.74 लाख रूपये तक है तथा UBN No. निम्नानुसार है :-

1. DLB2526WSOB34348, 2. DLB2526WSOB34349, 3. DLB2526WSOB34350, 4. DLB2526WSOB34351, 5. DLB2526WSOB34352, 6. DLB2526WSOB34353

आयुक्त
नगर परिषद बारां

राज.संवाद/सी/25/20078

कार्यालय नगर पालिका लवाण,दौसा (राजस्थान)

क्रमांकःन.प.लवाण/स्टोरा/2026/1605 दिनांक- 13.02.2026

निविदा सूचना/

नगर पालिका लवाण द्वारा नगर पालिका कोष के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य करवाये जाने हेतु वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिये सामग्री आपूर्ति/कार्य/सेवा प्रदान करने का कार्य करने हेतु पंजीकृत/प्राधिकृत फर्मो/आपूर्तिकर्ताओं/स्वयं सेवा संस्थाओं/ठेकेदारों से मोहरबंद एवं सीलबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। उक्त निविदा से संबंधित विवरण Website: Sppp.rajasthan.gov.in से Download कर देखी जा सकती है।

कुल कार्य क्र.सं.	निविदा डाउनलोड करने की तिथि	निविदा क्रय/विक्रय करने की अंतिम तिथि	निविदा खोलने की तिथि	UBN NO.
14	13.02.2026	25.02.2026	25.02.2026	DLB2526GSRC34159, DLB2526GSRC34249, DLB2526SSRC34154, DLB2526SSRC34157, DLB2526SSRC34158, DLB2526SSRC34160, DLB2526SSRC34161, DLB2526SSRC34162, DLB2526SSRC34246, DLB2526SSRC34253, DLB2526SSRC34254, DLB2526WSRC34155, DLB2526WSRC34156, DLB2526WSRC34242

राज.संवाद/सी/25/20008 अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका लवाण

नए डॉक्टर्स की 5 साल तक गांवों में अनिवार्य पोस्टिंग की जाएं : सराफ

पूर्व चिकित्सा मंत्री कालीचरण सराफ ने विधानसभा में स्वास्थ्य विभाग की अनुदान मांगों पर चर्चा के दौरान यह प्रस्ताव रखा

जयपुर (विसं)। राजस्थान विधानसभा में स्वास्थ्य विभाग की अनुदान मांगों पर चर्चा के दौरान ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर गंभीर बहस देखने को मिली।

बीजेपी विधायक एवं पूर्व चिकित्सा मंत्री कालीचरण सराफ ने सुझाव दिया कि नए नियुक्त डॉक्टरों की पहली पोस्टिंग कम से कम पांच साल के लिए दूरदराज के गांवों में अनिवार्य की जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में करीब 2500 सरकारी अस्पताल छोटे जिलों और ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित हैं तथा 75 प्रतिशत मेडिकल स्टाफ के पद भी वहीं स्वीकृत हैं, लेकिन डॉक्टर, नर्सिंगकर्मी और पैरामेडिकल स्टाफ ग्रामीण इलाकों में जाने से बचते हैं।

■ **विधायक सराफ ने कहा कि ''प्रदेश में करीब 2500 सरकारी अस्पताल छोटे जिलों और ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित हैं तथा 75 प्रतिशत मेडिकल स्टाफ के पद भी वहीं स्वीकृत हैं, परंतु डॉक्टर, नर्सिंगकर्मी और पैरामेडिकल स्टाफ ग्रामीण इलाकों में जाने से बचते है।''**

सराफ ने आरोप लगाया कि राजनीतिक रसूख के चलते कई कर्मचारी शहरों में डेपुटेशन करवा लेते हैं, जिससे गांवों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित होती हैं। इसका खामियाजा गरीब और ग्रामीण जनता को भुगतना पड़ता है, जिन्हें सामान्य इलाज के लिए जिला या संभाग मुख्यालय और गंभीर स्थिति में जयपुर तक जाना पड़ता है।

उन्होंने प्रस्ताव रखा कि नए डॉक्टरों से कम से कम 50 लाख रुपये का बॉन्ड भरवाया जाए और उनकी पहली नियुक्ति पांच वर्ष के लिए ग्रामीण क्षेत्र में सुनिश्चित की जाए। साथ ही स्पष्ट और प्रभावी ट्रांसफर नीति लागू की जाए, ताकि पूरे प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं संतुलित रूप से संचालित हो सकें। सराफ ने शहरी भत्ता बंद कर ग्रामीण क्षेत्रों में तैनात डॉक्टरों को विशेष ग्रामीण भत्ता देने की भी मांग की। उनका कहना था कि यदि गांवों में सेवा देने वाले डॉक्टरों को प्रोत्साहन मिलेगा तो वे अधिक उत्साह से काम करेंगे। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि ग्रामीण सेवा में लगे डॉक्टरों के बच्चों को शहरों के अच्छे स्कूलों में प्रवेश दिलाने की सरकारी व्यवस्था हो, ताकि शिक्षा को लेकर उनकी चिंताएं दूर की जा सकें।

इसके अलावा उन्होंने राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइन्स का नाम पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत के नाम पर रखने तथा जयपुर के गणगौरी अस्पताल का नाम दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर किए जाने का सुझाव भी दिया।

विधायक सिफारिशें करना बंद कर दें, किसी अस्पताल में पद खाली नहीं रहेंगे : चिकित्सा मंत्री

जयपुर (विसं)। स्वास्थ्य की अनुदान मांगों पर बहस का जवाब देते हुए स्वास्थ्य मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने कहा कि सरकार मेडिकल क्षेत्र को लेकर गंभीर है। वर्ष 2019-20 में 13 हजार करोड़ तथा 2022-23 में 20 हजार करोड़ रुपए बजट था। जब राजस्थान में हमारी सरकार जब आई तो हमने 27 हजार करोड़ का बजट रखा। इसके बाद हमने 2026-27 में 31 हजार करोड़ से ज्यादा का बजट रखा है। कांग्रेस सरकार से हमारा बजट 53 फीसदी से ज्यादा है। सरकार ने मेडिकल पर दिल खोलकर खर्च किया है। पैसों का कोई अभाव नहीं है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल खोलकर बजट दिया है।

खींवसर ने कहा कि मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने पर 10 हजार करोड़ से ज्यादा खर्च हो रहे हैं।

■ **'कांग्रेस सरकार से हमने 53 फीसदी ज्यादा स्वास्थ्य बजट रखा'**

मेडिकल कॉलेजों में फूड कोर्ट बनेंगे। करीब 500 करोड़ की लागत से हम संभाग मुख्यालयों पर मेडिकल कॉलेजों के पास धर्मशालाएं बना रहे हैं, जहां मरीजों के अटेंडेंट को रहने की फ्री सुविधा मिलेगी। सरकारी अस्पतालों में खाली पदों को लेकर स्वास्थ्य मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने कहा कि अस्पतालों में खाली पदों की बात हो रही थी। आप मुझे एक वादा कर दो कि आप लोग सिफारिश नहीं करोगे। सब विधायक बोल देंगे कि सिफारिश नहीं करवाएंगे तो एक भी अस्पताल में पद खाली नहीं रहेगा।

कोविड वैक्सीन से हार्ट अटैक बढ़ने की बात पर हंगामा मचा

जयपुर । विधानसभा में स्वास्थ्य विभाग की अनुदान मांगों पर चर्चा के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायकों के बीच तकरार हो गयी। कोरोना वैक्सीन से हार्ट अटैक बढ़ने का आरोप लगाते हुए कांग्रेस विधायक घनश्याम मेहर ने कहा कि कोरोना के बाद देश-प्रदेश में हार्ट अटैक के मामलों में भारी बढ़ोतरी हुई है। 20-30 साल के युवकों की हार्ट अटैक से मौतें हो रही हैं।

उन्होंने कहा कि लोगों में भ्रम है कि कोरोना में 2 तरह कर वैक्सीन लगी थी। भ्रम है कि कोवीशील्ड वैक्सीन लगाने वालों को हार्ट अटैक हो रहे हैं। इस पर रिसर्च करना चाहिए। इसी दौरान बीजेपी विधायक श्रीचंद कृपलानी ने टोकते हुए पूछा- आपको कौनसी वैक्सीन लगी थी। मेहर ने कहा, मुझे तो सरकार ने लगा दी पता नहीं कौनसी थी। हो सकता है इलेक्टोरल बॉन्ड से चुनावी चंदा लेने के लिए नकली वैक्सीन लगा दी गई हो। 20-20 साल के युवकों को हार्ट अटैक आ रहे हैं। आए दिन हम हार्ट अटैक की घटनाएं सुनते हैं। कृपलानी के बाद मंत्री मदन दिलावर सहित कई बीजेपी विधायकों ने आपत्ति करते हुए कहा कि कांग्रेसी वैक्सीन पर सवाल उठाते हैं, इनकी पुरानी आदत रही है। बीच में टोकने पर मेहर के अलावा कांग्रेस विधायकों ने आपत्ति जताई। इस पर काफी देर तक नोकझोंक और हंगामा चलता रहा। मेहर ने कहा कि टोकने वाले विधायक के इलाके में मेंटल हॉस्पिटल खुलवा दीजिए, इनका इलाज करवाइए। मैं इतना ही तो कह रहा हूं कि वैक्सीन से हार्ट अटैक को लेकर रिसर्च करवाना चाहिए, इसमें गलत क्या हैं।

ज्यादा अंक वाले अभ्यर्थी को नियुक्ति क्यों नहीं : हाईकोर्ट

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने शिक्षक भर्ती-2012 से जुडे मामले में शिक्षा सचिव व जिला परिषद जालौर सहित अन्य से पूछा है कि जब कम अंक वाले काम कर रहे हैं तो उनसे अधिक अंक लाने वाले अभ्यर्थी को नियुक्ति क्यों नहीं दी गई। इसके साथ ही अदालत ने यह भी बताने के लिए कहा है कि सुप्रीम कोर्ट की ओर से नमो नारायण शर्मा के मामले में दिए आदेश का लाभ याचिकाकर्ता को क्यों नहीं दिया गया। जस्टिस आनंद शर्मा की एकलपीठ ने यह आदेश रामावतार की याचिका सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता राम प्रताप सैनी ने बताया कि भर्ती को लेकर जारी परिणाम के बाद कुछ सफल अभ्यर्थियों को नियुक्ति दी गई। वहीं बाद में जारी संशोधित परिणाम में याचिकाकर्ता के अंक बढ़ गए। इसके बावजूद उसे नियुक्ति नहीं दी गई, जबकि उससे कम अंक वाले अन्य अभ्यर्थी शिक्षक के पद पर नियुक्त होकर काम कर रहे हैं। याचिका में कहा गया कि सुप्रीम कोर्ट ने उसके समान ही एक अन्य मामले में अभ्यर्थी को नियुक्ति का आदेश दिया है। इसलिए उसे भी सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार सेवा परिलाभ देकर नियुक्ति दी जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

'भर्तियों में संविदाकर्मियों के समायोजन का प्रयास'

जयपुर (विसं)। स्वायत्त शासन राज्य मंत्री झाबरमल खर्रा ने विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार द्वारा भविष्य में भर्तियां निकाले जाने पर प्राथमिकता के आधार पर संविदाकर्मियों के समायोजन का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि संविदाकर्मियों के हितों की रक्षा के लिए पीएफ और ईएसआई की राशि जमा कराना अब अनिवार्य कर दिया है। प्रश्नकाल के दौरान विधायक डॉ. शिखा मील बराला के प्रश्नों के जवाब में मंत्री ने बताया कि पहले प्लेसमेंट एजेंसियों के माध्यम से नियुक्त कार्मिकों के वेतन से पीएफ व ईएसआई की राशि तो काट ली जाती थी, लेकिन संबंधित विभागों में जमा नहीं कराई जाती थी। नई व्यवस्था में प्रथम माह का बिल बिना रसीद पारित किया जाएगा, लेकिन दूसरे माह के बिल के साथ पिछले माह की पीएफ-ईएसआई राशि का चालान अनिवार्य है।

'द्रव्यवती नदी में सीधे ही अनट्रीटेड वाटर छोड़ा जा रहा, अवैध पंपिंग से हो रही खेती'

न्यायमित्रों ने हाईकोर्ट में अपनी निरीक्षण रिपोर्ट पेश की

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । शहर की द्रव्यवती नदी के संरक्षण से जुडे मामले में नियुक्त न्यायमित्रों ने अदालती आदेश की पालना में हाईकोर्ट में अपनी निरीक्षण रिपोर्ट पेश की है। जिसमें कहा गया कि गत 7 और 8 फरवरी को द्रव्यवती नदी पर बने एसटीपी प्लांट और रिवर फ्रंट सहित अन्य जगहों का निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण में पता चला कि विश्वकर्मा औद्योगिक एरिया, बनीपार्क आर्मी एरिया, विद्याधर नगर, सुशीलपुरा, रीको एसटीपी तरुछाया नगर, रेलवे ब्रिज फन किंगडम के पास, ग्रासफील्ड श्याम नगर के पास, आतिश मार्केट, बम्बाला पुलिया, मानसरोवर, नारायणा अस्पताल प्रताप नगर व राणा सांगा मार्ग पर अनट्रीटेड वाटर को सीधे ही द्रव्यवती में छोड़ा जा रहा है। वहीं गोनेर में अवैध तौर पर पंपिंग कर खेती की जा रही है। कई जगह पर रिवर फ्रंट का अवैध तरीके से उपयोग किया जा रहा है। वहां पर सुरक्षा की व्यवस्था नहीं है। वहीं एसटीपी प्लांट व रिवर फ्रंट पर संसाधनों की कमी है। एसटीपी प्लांट पर सफाई की व्यवस्था नहीं है।

वहीं द्रव्यवती के प्लांट के सबस्टैंडर्ड होने के चलते चंदलाई बांध का पानी भी प्रभावित हो रहा है। इसके जवाब में जेडीए ने कहा कि सुशीलपुरा पर जयपुर नगर निगम की सीवरेज लाइन, जो देहलावास एसटीपी के लिए है, वहां से सरप्लस फ्लो सीधा ही द्रव्यवती में डायवर्ट हो रहा है। वहीं अन्य जगहों पर भी कई नालों से भी अनट्रीटेड सीवरेज नगर निगम नदी में छोड़ रहा है। इसके अलावा विश्वकर्मा, सुदर्शनपुरा और सीतापुरा सहित सांगानेर सांगानेर औद्योगिक क्षेत्र से केमिकल वाला कचरा सीधे द्रव्यवती नदी में छोड़ा जा रहा है। जेडीए, पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के साथ मिलकर संयुक्त निरीक्षण की कार्रवाई कर रहा है। जेडीए ने जिम्मेदारों को नोटिस जारी करने व दोषी इंडस्ट्रियल यूनिट्स को सील करने की कार्रवाई भी की है। अदालत में मामले की सुनवाई 19 मार्च को होगी।

गौरतलब है कि पीएन मैंदोला ने द्रव्यवती नदी में अतिक्रमण व अवैध निर्माण को हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर कर चुनौती दी थी। इसमें कहा था कि इस नदी को प्रदूषित कर दिया है और इससे वास्तविक स्वरूप नष्ट हो रहा है। इसलिए इसे मूल स्वरूप में लाया जाए।

मावठ और ठंडी हवाओं ने बढ़ाई ठिठुरन

राजधानी जयपुर में मंगलवार रात से शुरू हुई बारिश बुधवार को भी दिनभर जारी रही। मावठ से तापमान में कमी होने से ठंड ने वापस जोर पकड़ा है। दिनभर बारिश और सर्द हवाओं ने एक बार फिर शहरवासियों को ठिठुरन का एहसास करवा दिया। हालांकि बारिश के कारण स्कूली बच्चों और रोजमर्रा के कामों के लिए घरों से निकले लोगों को काफी परेशानियां झेलनी पड़ी।

अंतर्राज्यीय शादी रैकेट का भंडाफोड़ : मुख्य आरोपी गिरफ्तार

बंगाल, असम, बिहार, यूपी और झारखंड से युवतियां लाकर रचते थे सौदेबाजी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । विवाह के नाम पर ठगी और मानव तस्करी के सनसनीखेज मामले में लंबे समय से फरार चल रहे मुख्य आरोपी भंवरलाल शर्मा को आखिरकार पुलिस ने धर दबोचा।

आरोपी को जयपुर के भांकरोटा क्षेत्र स्थित जयसिंहपुरा इलाके से पुलिस मुख्यालय की सीआईडी अपराध शाखा की टीम ने दस्तयाब कर लिया और उसे पुलिस थाना गिड़ा, जिला बालोतरा से आई टीम के सुपुर्द कर दिया गया। आरोपी की गिरफ्तारी पर 10 हजार का इनाम घोषित है। आरोपी शादी के नाम पर ठगी और मानव तस्करी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का मुख्य सूत्रधार है। यह गिरोह असम, बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड से युवतियां लाकर शादी के नाम पर सौदेबाजी की वारदातों में लिप्त था।

क्राइम ब्रांच की एसपी ज्येष्ठा मैत्रयी ने बताया कि जांच में सामने आया है कि आरोपित भंवरलाल शर्मा का नेटवर्क देश के कई राज्यों में फैला हुआ था। यह गिरोह कोलकाता, असम, बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों से गरीब युवतियों को शादी या काम का झांसा देकर राजस्थान लाता था।

■ **सीआईडी क्राइम ब्रांच ने विवाह के नाम पर ठगी और मानव तस्करी के मामले में बड़ी कार्रवाई की**

इसके बाद इन लड़कियों को पश्चिमी राजस्थान के सीमावर्ती जिलों में उन कुंवारे लड़कों को ऊँची कीमतों पर बेच दिया जाता था। जिनकी शादियां नहीं हो रही थीं। शादी के कुछ समय बाद ही यह गिरोह पीड़ितों को कानूनी मुकदमों में फंसाने की धमकी देकर दोबारा अवैध वसूली और ठगी का खेल खेलता था।

ज्येष्ठा मैत्रयी ने बताया कि लंबे समय से फरार और इनामी अपराधियों की तलाश के लिए विशेष टीम गठित की गई थी। इसी क्रम में भंवरलाल शर्मा की लोकेशन पर सतत निगरानी रखी जा रही थी।

जिस पर सब इंस्पेक्टर शैलेंद्र कुमार शर्मा और कांस्टेबल बृजेश कुमार से प्राप्त पुख्ता सूचना के आधार पर टीम ने भांकरोटा के जयसिंहपुरा इलाके में दबिश दी और आरोपी को पकडने में सफलता हासिल की।

इस महत्वपूर्ण कार्रवाई में सहायक उप निरीक्षक शंकर दयाल शर्मा, हेड कांस्टेबल कुलदीप सिंह और कांस्टेबल नरेश कुमार की विशेष भूमिका रही। टीम की समन्वित रणनीति और तकनीकी निगरानी के चलते दो साल से फरार चल रहा आरोपी आखिरकार पुलिस के शिकंजे में आ गया।

पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपी भंवरलाल शर्मा का आपराधिक इतिहास पुराना रहा है। उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार वर्ष 2005 से उसके विरुद्ध विभिन्न थानों में कई प्रकरण दर्ज हैं। इनमें थाना सांगानेर सदर, थाना सदर जयपुर, थाना श्याम नगर जयपुर, थाना गांधी नगर अजमेर, थाना केकड़ी सिटी जिला केकड़ी, थाना गिड़ा जिला बालोतरा सहित अन्य स्थानों के मामले शामिल बताए गए हैं। जिनमे उसके विरुद्ध अपहरण, फिरौती के लिए धमकाना, धोखाधड़ी और दुष्कर्म, बलवा करने, अवैध रूप से संपत्ति को नुकसान पहुँचाने, आर्म्स एक्ट तथा अन्य गंभीर धाराओं के मामले शामिल रहे हैं। पुलिस को उम्मीद है कि पूछताछ में गिरोह के अन्य नेटवर्क और संभावित पीड़ितों के बारे में महत्वपूर्ण खुलासे हो सकते हैं।

एसपी मैत्रयी ने बताया कि आरोपी भंवरलाल शर्मा एक शातिर किस्म का अपराधी है, जिसके खिलाफ पूर्व में भी कई गंभीर मामले दर्ज हैं। वह पिछले कई वर्षों से बाहरी राज्यों की युवतियों को लाकर उनकी सौदेबाजी करने वाले संगठित गिरोह का संचालन कर रहा था।

पुलिस मुख्यालय की इस कार्रवाई के बाद अब इस गिरोह के नेटवर्क से जुड़े अन्य चेहरे बेनकाब होने की उम्मीद है।

जयपुर के भविष्य की यातायात व्यवस्था को मिलेगा नया विज़न

जयपुर (कासं)। जयपुर शहर की वर्तमान और भविष्य की यातायात आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) द्वारा तैयार किए गए कॉम्प्रीहेंसिव मोबिलिटी प्लान (सीएमपी) का प्रारूप सार्वजनिक कर दिया गया है। इस महत्त्वपूर्ण योजना का उद्देश्य शहर में सुगम, सुरक्षित, समावेशी और टिकाऊ परिवहन व्यवस्था विकसित करना है। जेडीए ने इस ड्राफ्ट को आमजन, विभिन्न हितधारकों, विशेषज्ञों, शैक्षिणक संस्थानों तथा गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के सुझाव एवं अभिमत प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक किया है, ताकि शहर के विकास में व्यापक जनभागीदारी सुनिश्चित हो सके। सीएमपी का ड्राफ्ट बुधवार से जेडीए की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है और आगामी 7 (सात) दिनों तक अवलोकन के लिए ऑनलाइन देखा जा सकता है। नागरिक, संबंधित विभाग एवं संगठन अपने सुझाव, अभिमत अथवा आपत्तियाँ 26 फरवरी को दोपहर 12 बजे तक प्रेषित कर सकेंगे।

सार-समाचार

राज्यपाल ने किया पुस्तक का किया

जयपुर । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष को समर्पित पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की छवि: भ्रम बनाम सत्य' की प्रथम प्रति का बुधवार को लोक भवन में विमोचन किया गया। पुस्तक में हिंदू समाज को संगठित करने के उद्देश्य में आने वाली चुनौतियों तथा समाज में फैलाए गए भ्रम और तथ्यों के बीच अंतर को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करने, अनुशासन एवं चरित्र निर्माण के माध्यम से राष्ट्र को सशक्त बनाने तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण जैसे विषयों को तथ्य और तर्क की कसौटी पर प्रस्तुत किया गया है। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े को पुस्तक की प्रथम प्रति भेंट की गई। राज्यपाल ने पुस्तक लेखन के लिए लेखिका डॉ. निमिषा गौड़ एवं स्निग्धा को बधाई देते हुए उन्हें सार्वजनिक जीवन में निरंतर सक्रिय रहकर समाजहित में कार्य करने की प्रेरणा दी।

जयपुरिया इंस्टीटयूट में युवा सम्मेलन

जयपुर । जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जयपुर में यूथ फॉर इंडिया (2047) श्रृंखला के अंतर्गत 13वें अंतर्राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का आयोजन 20 और 21 फरवरी को होगा। इस सम्मेलन का विषय एआई डिसरप्शन एंड ऑपर्च्युनिटीज: प्रिपेरिंग यूथ फॉर ग्लोबल चैलेंजेज है। यह दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विद्यार्थियों, शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं और उद्योग जगत के नेताओं को एक सशक्त मंच प्रदान करेगा, जहां वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नवाचार, नेतृत्व और युवा सशक्तिकरण की बदलती भूमिका पर विचार-विमर्श करेंगे। इसमें विश्वभर के 40 महाविद्यालयों से 1000 विद्यार्थियों की सहभागिता होगी। सम्मेलन का उद्घाटन डॉ. सतीश पूनिया, भाजपा हरियाणा के प्रदेश प्रभारी करेंगे। इसमें प्रसिद्ध सेलिब्रिटी एवं युवा आइकन रणविजय सिंहा भी शामिल होंगे। समापन सत्र में युवा विकास और उच्च शिक्षा से जुडे वरिष्ठ शिक्षाविद एवं नीति-निर्माता उपस्थित रहेंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री पर टिप्पणी से हंगामा

जयपुर (विसं)। विधानसभा में भाजपा विधायक संदीप शर्मा ने बिना नाम लिए कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री को लेकर टिप्पणी की तो उनकी विपक्ष के सदस्यों के साथ जमकर नोंकझोंक हो गयी। नेता प्रतिपक्ष ने आपत्ति जताते हुए कहा कि जिस सदस्य का उल्लेख किया जा रहा है वह सदन में उपस्थित नहीं है, इसलिए उनके बारे में की गई टिप्पणी कार्यवाही से हटाई जानी चाहिए। इस पर दोनों पक्षों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई। संदीप शर्मा ने कहा कि उन्होंने कोई अभद्र टिप्पणी नहीं की है और वे केवल पहले की गई टिप्पणियों का जवाब दे रहे हैं। दोनों ओर से आरोप-प्रत्यारोप के बीच कुछ समय के लिए हंगामे की स्थिति बन गई। बाद में सभापति के हस्तक्षेप से स्थिति को शांत कराया गया। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के प्रस्ताव और राजनीतिक टिप्पणियों पर हुए हंगामे ने सदन की कार्यवाही को गरमा दिया, लेकिन बहस के केंद्र में गांवों तक बेहतर चिकित्सा सुविधाएं पहुंचाने का मुद्दा प्रमुख रूप से उभरकर सामने आया।

'एका : द वन' प्रदर्शनी का समापन

जयपुर । जवाहर कला केन्द्र की अलंकार दीर्घा में केरल की वरिष्ठ चित्रकार डॉ. बीना एस. उन्नीकृष्णन की ट्रैवल एग्जीबिशन की प्रदर्शनी एका: द वन का बुधवार को समापन हुआ। प्रदर्शनी में 64 योगिनियों के विभिन्न स्वरूपों को प्रदर्शित किया गया। ये सभी स्वरूप मानव के जीवन के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले, सकारात्मक ऊर्जा से प्रेरित करने वाले नजर आए। अपनी ट्रैवल एग्जीबिशन के बारे में केरल की वरिष्ठ चित्रकार डॉ. बीना एस. उन्नीकृष्णन ने बताया कि जयपुर के जवाहर कला केंद्र में प्रदर्शनी लगाने का अनुभव बेहद सुखद रहा है। यहां लोगों ने इस प्रयास को काफी सराहा और प्रदर्शनी में दिखाए गए 64 योगिनियों के विभिन्न स्वरूपों की प्रशंसा की। एक कलाकार के लिए कला की प्रशंसा पारितोषिक से कम नहीं होता। जयपुर के बाद 64 योगिनियों के विभिन्न स्वरूपों की यह प्रदर्शनी दिल्ली, ग्वालियर, वाराणसी, कोलकाता, भुवनेश्वर, नागपुर, हैदराबाद, विजयवाड़ा लगाई जाएगी। अगस्त में यह प्रदर्शनी इंटरनेशनल एग्जीबिशन में शामिल होगी।

'जेडीए बताए कब तक खाली करेंगे सामुदायिक केन्द्र'

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर के पत्रकार कॉलोनी के सामुदायिक केन्द्र में जेडीए का जोन ऑफिस खोलने से जुडे मामले में कहा है कि किसी अधिकारी या प्राधिकरण को सार्वजनिक उपयोगी सेवाओं पर अतिक्रमण की अनुमति नहीं दी जा सकती। अदालत ने जेडीए को 16 मार्च तक बताने को कहा है कि सामुदायिक केन्द्र को खाली कर ऑफिस को कब तक दूसरी सरकारी भवन या किराए की बिल्डिंग में शिफ्ट कर लिया जाएगा। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश श्याम सुंदर शर्मा व अन्य की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि किसी भी कॉलोनी में स्थापित सामुदायिक केन्द्र जनता के उपयोग के लिए है और यहां कार्यालय स्थापित करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। ऐसे में जेडीए को अपना कार्यालय यहां से शिफ्ट करना चाहिए, ताकि जनता सामुदायिक केन्द्र का उपयोग कर करे। सुनवाई के दौरान जेडीए की ओर से अधिवक्ता अमित कुड़ी ने अदालत को बताया कि पृथ्वीराज नगर का जोनल ऑफिस पहले मानसरोवर के हाउसिंग बोर्ड की इमारत में चल रहा था। इस इमारत को अस्पताल के लिए जून, 2024 में खाली करने का निर्देश दिया गया था। ऐसे में इसे पत्रकार कॉलोनी के सामुदायिक केन्द्र में अस्थायी रूप से शिफ्ट किया गया था।

बृज विश्वविद्यालय के वीसी पद से हटाने के खिलाफ दायर याचिका खारिज

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय के कुलपति पद से हटाने को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया है। अदालत ने कहा कि चांसलर ने वैधानिक अधिकारों के अन्तर्गत और विधि प्रक्रिया अपनाकर कुलपति को हटाया है। जस्टिस आनंद शर्मा की एकलपीठ ने यह आदेश पूर्व कुलपति प्रोफेसर रमेश चन्द्र की ओर से दायर याचिका को खारिज करते हुए दिए। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि न्यायिक समीक्षा का दायर केवल निर्णय प्रक्रिया की वैधता की जांच तक सीमित होता है। मामले में संबंधित आदेश पारित करने का क्षेत्राधिकार एमएसबीयू अधिनियम की धारा 11ए के तहत चांसलर के पास था। वहीं मामले में राज्य सरकार से जरूरी परामर्श भी लिया गया था और जांच कमेटी की रिपोर्ट मिलने के बाद याचिकाकर्ता को सुनवाई का मौका देकर यह आदेश दिया गया है।

याचिका में कहा गया कि याचिकाकर्ता को 8 मार्च, 2023 को तीन साल के लिए महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया था। उसने अपने कार्यकाल के दौरान कुछ कॉलेजों की जांच करवा कर उनकी संबद्धता समाप्त करने की कार्रवाई की थी। वहीं बाद में इन कॉलेजों के प्रतिनिधियों ने चांसलर से उसकी शिकायत की। इस पर चांसलर ने शिकायतों की जांच के लिए चार सदस्यीय कमेटी गठित की। वहीं 28 मार्च 2025 को याचिकाकर्ता को निलंबित कर दिया गया। याचिका में कहा गया कि उसे निलंबन से पूर्व कोई नोटिस नहीं दिया गया और ना ही सुनवाई का मौका मिला। यहां तक की निलंबन अवधि के दौरान वेतन-भत्तों का भी भुगतान नहीं किया गया। याचिका में कहा गया कि उसे जांच रिपोर्ट देकर जवाब के लिए पर्याप्त समय नहीं दिया। जब याचिकाकर्ता ने गत 10 नवंबर को निलंबन को हाईकोर्ट में चुनौती दी तो अगले दिन ही उसे कुलपति पद से हटा दिया गया। ऐसे में उसके निलंबन और पद से हटाने के आदेशों को रद्द किया जाए। जिसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि याचिकाकर्ता के खिलाफ वित्तीय अनियमिता और पद के दुरुपयोग की शिकायत थी।

80 लाख रु.के विदेशी गांजे के साथ 3 तस्कर दबोचे

जयपुर । राजधानी जयपुर में पुलिस कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने ड्रग्स माफियाओं के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत थाईलैंड (बैंकॉक) से तस्करी कर लाए गए हाई-क्वालिटी हाईड्रोफोनिक वीड (ऑर्गेनिक विदेशी गांजा) की बड़ी खेप पकड़ी है। जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में इस 910 ग्राम गांजे की कीमत करीब 80 लाख रुपये आंकी गई है। पुलिस ने इस मामले में एक लग्जरी कार सहित तीन हाई-प्रोफाइल तस्करों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल ने बताया कि ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत सीएसटी टीम ने सांगानेर और प्रताप नगर थाना इलाके में दबिश दी। जहां सीएसटी टीम ने हाई-क्वालिटी हाईड्रोफोनिक वीड (ओर्गेनिक विदेशी गांजा) बरामद किया है। विशेष पुलिस कमिश्नर (ऑपरेशन्स) राहुल प्रकाश ने बताया कि सांगानेर थाना इलाके से आरोपी मौलिक निवासी वैशाली नगर और फोरमेन सैनी निवासी टोंक हाल जगतपुरा को दबोचा गया। इनके पास से 541 ग्राम विदेशी गांजा, 1.55 लाख रुपये कैश और एक लग्जरी कार बरामद हुई। वहीं प्रतापनगर थाना इलाके में स्थित कुम्भा मार्ग पर कार्रवाई करते हुए नितिन शर्मा निवासी बांदीकुई जिला दौसा हाल प्रतापनगर को गिरफ्तार किया।

'तीन सप्ताह के भीतर पेश करो अतिक्रमण हटाने की पालना रिपोर्ट, वरना पेश हों अधिकारी'

■ **राजस्थान हाईकोर्ट ने सांगानेर में हाऊसिंग बोर्ड द्वारा अवाप्त जमीन पर बसी कॉलोनियों और अतिक्रमण को लेकर जवाब मांगा**

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने सांगानेर इलाके में आवासन मंडल की अवाप्ति वाली जमीन पर बसी कॉलोनियों और अतिक्रमण के मामले में आदेश की पालना रिपोर्ट तीन सप्ताह में पेश करने को कहा है। ऐसा नहीं होने पर अदालत ने आवासन आयुक्त को पेश होकर जवाब देने को कहा है। एक्टिंग सीजे एसपी शर्मा और जस्टिस संगीता शर्मा की खंडपीठ ने यह आदेश पब्लिक अगेंस्ट करप्शन की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता पीसी भंडारी और अधिवक्ता टीएन शर्मा ने बताया कि हाईकोर्ट ने गत 20 अगस्त को आवासन मंडल की अवाप्ति वाली जमीन पर बसी 87 कॉलोनियों को हटाकर अतिक्रमण के जिम्मेदार अफसरों पर कार्रवाई के आदेश दिए थे। इसके बावजूद छह माह बीतने पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया मौके पर निर्माण कार्य किए जा रहे हैं और अफसर कोई कार्रवाई नहीं कर रहे। ऐसे में आवासन मंडल के अफसरों पर अवमानना की कार्रवाई की जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने तीन सप्ताह में पालना रिपोर्ट पेश नहीं करने पर आवासन आयुक्त को तलब किया है।

अधिवक्ता टीएन शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार ने गत 12 मार्च को एक आदेश जारी कर सांगानेर में आवासन मंडल की अवाप्ति वाली जमीन पर बसी करीब 87 कॉलोनियों को नियमित करने को कहा था। इसके खिलाफ दायर याचिका पर अदालत ने गत 20 अगस्त को सुनवाई करते हुए सरकारी जमीन पर कब्जे को नियमित करने पर सवाल करते हुए 12 मार्च के आदेश पर रोक लगाकर अतिक्रमण हटाने को कहा था।

Prevent Plagiarism Day: Promoting Integrity in Work

Prevent Plagiarism Day, observed annually on February 19, emphasizes the importance of originality and ethical practices in academics, media, and professional work. The day serves as a reminder that presenting others' ideas or text as one's own is a serious breach, often carrying legal or academic consequences. It encourages proper citation, paraphrasing, and acknowledgment of sources to uphold integrity. Schools, colleges, and workplaces observe the day through workshops, discussions, and awareness campaigns. By educating students, educators, and professionals on responsible content creation, Prevent Plagiarism Day fosters respect for intellectual property and promotes a culture of honesty and creativity.

#CHANGED

They Didn't Look the Way They Do Today

Early versions of many common foods looked, tasted, and even grew very differently from their modern forms

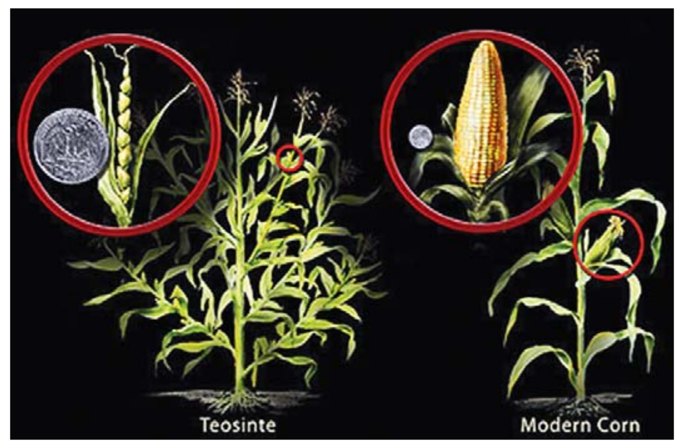

The fruits and vegetables we see in markets today are the result of thousands of years of human cultivation and selective breeding. Early versions of many common foods looked, tasted, and even grew very differently from their modern forms. Through careful selection of desirable traits such as size, sweetness, colour, and yield, humans gradually transformed wild plants into the foods we recognize today. Tomatoes, corn, eggplants, carrots, and bananas are excellent examples of how dramatically food has changed over time.

Tomatoes: From Golden Apples to Red Staples

Tomatoes were originally small, yellow or golden in colour and were often referred to as 'golden apples.' Native to South America, early tomatoes resembled berries more than the large, juicy fruits we know today. When first introduced to Europe in the 16th century, they were grown mainly as ornamental plants because many people believed they were poisonous. Over centuries of cultivation, tomatoes were selectively bred for larger size, red colour, and improved flavour, becoming a key ingredient in cuisines worldwide.

Corn: From Wild Grass to Global Crop

Modern corn looks nothing like its ancient ancestor, teosinte, a wild grass native to Mexico. Teosinte had small, hard kernels encased in tough shells and grew in thin, branching stalks. Through thousands of years of selective breeding by early farmers, corn developed larger cobs, softer kernels, and higher yields. Today's corn is one of the most productive and widely grown crops in the world.

Eggplants: Bitter and Spiny Beginnings

Early eggplants were far from the smooth, purple vegetables commonly used today. Ancient varieties were small, round, and often yellow, white, or green, with bitter flesh and even spines on the stems. Native to South and Southeast Asia, eggplants were gradually bred to reduce bitterness, eliminate spines, and develop the deep purple colour and tender texture favoured in modern cooking.

Carrots: From Purple and White to Orange

Carrots were originally purple, white, or yellow, not orange. Early carrots, first cultivated in Central Asia, were often thin, forked, and less sweet. The familiar orange carrot was developed much later, particularly in Europe, through selective breeding for colour and sweetness. Today, while orange carrots dominate, heirloom varieties in purple, red, and yellow still exist.

Bananas: Seed-Filled and Hard

Wild bananas were very different from the soft, sweet, seedless fruit we eat today. Early bananas were filled with large, hard seeds and had very little edible flesh. Through selective breeding and hybridization, seedless varieties with more pulp and sweeter flavour were developed. Modern bananas are sterile and reproduce through cloning, making them uniform in appearance and taste.

Conclusion

The foods we take for granted today are the result of long-term human intervention in nature. Through selective breeding rather than modern genetic engineering, early farmers reshaped wild plants into reliable food sources. Understanding how tomatoes, corn, eggplants, carrots, and bananas have changed over time highlights the deep connection between agriculture, culture, and human innovation.

A Real-Life Robinson Crusoe to a Noblewoman Marooned With Her Lover

Selkirk was rescued by an English vessel called the Duke in 1709. Its captain later noted that while the castaway was overjoyed to be saved, his outlook suggested that perhaps "solitude and retirement from the world is not such an unsufferable state of life as most men imagine." Selkirk's experiences, the captain argued, "may likewise instruct us how much a plain and temperate way of living conduces to the health of the body and the vigor of the mind, both which we are apt to destroy by excess and plenty."

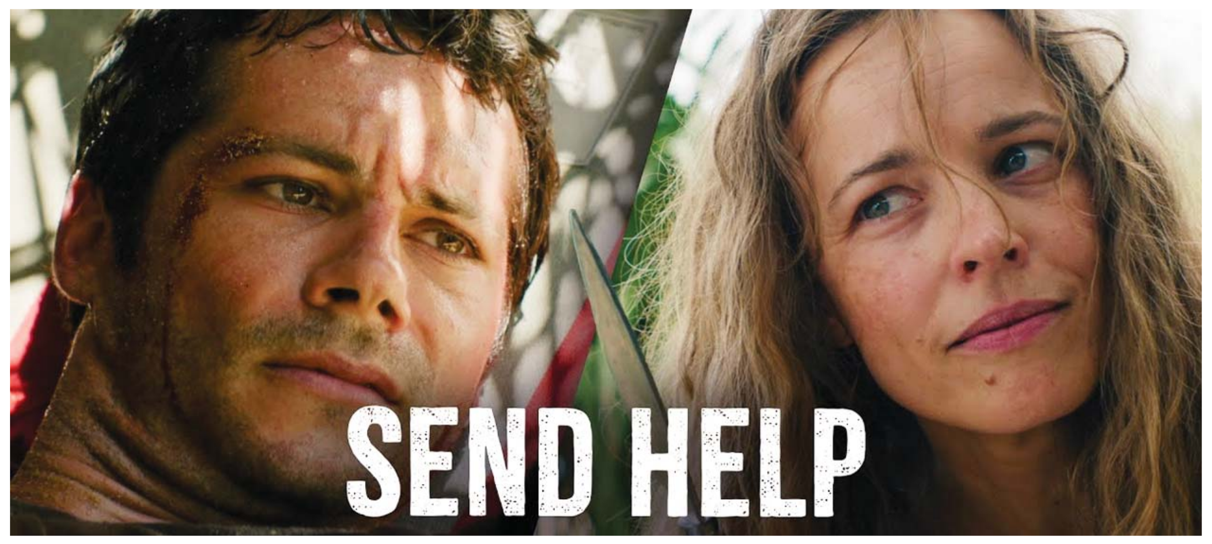

● Verna Mohon

Countless books, movies and television shows chronicle the adventures (or misadventures) of people stranded on remote islands.

Consider, for example, Daniel Defoe's *Robinson Crusoe*, the beloved Tom Hanks movie *Cast Away* and the classic 1960s sitcom 'Gilligan's Island.' Now *Send Help*, a new Sam Raimi horror-thriller about a woman (played by Rachel McAdams) stuck with her overbearing boss (Dylan O'Brien) after a plane crash, is set to join the ranks of these survivalist stories. Narratives about deserted islands often depict the ingenuity required to build shelter and acquire food and water, as well as the mental fortitude needed to patiently wait for rescue. Many of these storylines are exaggerated and sensationalized for dramatic effect. Still, the challenge of being pitted against nature, secluded from civilization and forced to live with only the barest essentials taps into themes of resilience and adventure that have always fascinated humans.

When real-life stories of people somehow surviving on uninhabited islands emerge, the castaways quickly become celebrities. The public wants to know every detail of their experience, especially what it took for them to endure not just a handful of days but sometimes months, years or even decades of isolation. To mark Send Help's release on January 30, read seven stories of people who found themselves stuck on remote islands and learn how they survived long enough to be rescued.

#UNREAL

SEVEN SURVIVALS

1. Alexander Selkirk

It's only fitting to start with Scotsman Alexander Selkirk, whose tale of being marooned for four years and four months on

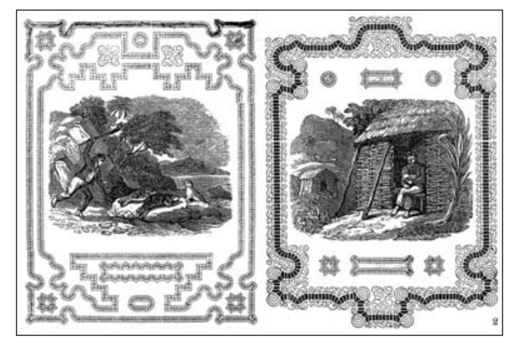

Más a Tierra, an island 416 miles off the coast of the Chilean mainland, is widely cited as an inspiration for Defoe's 1719 novel, Robinson Crusoe. Born in the fishing village of Fife in 1676, Selkirk reportedly attracted the ire of local church authorities for assaulting his father, his brother and his sister-in-law. Afterward, he decided to leave home, finding work on various ships. One of the vessels was the Cinque Ports, which Selkirk believed was unfit to sail. Upon arriving on Más a Tierra, one of three landmasses that make up the Juan Fernández Islands, in 1704, he boldly proclaimed that he'd rather stay behind than get back onto the leaky ship. Expecting the other sailors to make the same declaration, Selkirk was shocked when the Cinque Ports proceeded to sail off without him. "The ship itself was in poor condition, and he believed it would sink, which indeed it did," Andrew Lambert, a naval historian at King's College London, told National Geographic in 2016. "So, his basis for putting himself ashore was quite sound. The ship sank, and half the crew drowned."

Initially, Selkirk eked out a living with only a musket, a hatchet, a knife, a Bible, a cooking pot, bedding and some clothing left behind by the crew. After mating sea lions on the shore forced him inland, he survived by milking and butchering goats, whose skin he turned into clothing. He also found wild turnips, plants and fruits to supplement his diet. Selkirk was rescued by an English vessel called the Duke in 1709. Its captain later noted that while the castaway was overjoyed to be saved, his outlook suggested that perhaps "solitude and retirement from the world is not such an unsufferable state of life as most men imagine." Selkirk's experiences, the captain argued, "may likewise instruct us how much a plain and temperate way of living conduces to the health of the body and the vigor of the mind, both which we are apt to destroy by excess and plenty." When Selkirk returned to England in 1711, he attracted a great deal of media attention. He eventually sailed to West Africa in hopes of fighting pirates but soon caught a disease, likely yellow fever or typhoid, and died on December 13, 1721.

2. Tongan castaways

In 1966, a real-life parallel to William Golding's 1954 novel, *Lord of the Flies*, captivated the world. In June 1965, six teenage boys had run away from their boarding school in the Polynesian nation of Tonga, stolen a boat and set sail for Fiji. On the night of the group's departure, however, a storm destroyed the rope they'd used to anchor the vessel, as well as its sail and rudder. Over the next eight days, the boys drifted some 100 miles south. Upon spotting the deserted island of 'Ata, they abandoned their sinking ship and swam to land.

At first, the teens survived on fish, coconuts and birds. Then, they discovered traces of the island's previous inhabitants, who'd been kidnapped and sold into slavery in 1863. These individuals had planted taro and bananas and raised chickens whose descendants still wandered the area a century later.

In the late 19th and early 20th centuries, slave traders forced tens of thousands of Pacific Islanders to work on cotton and sugar plantations in Fiji and Australia. In some cases, the slave traders kidnapped their victims outright; in others, they employed coercive tactics to lure the islanders into slavery. The onetime residents of 'Ata were victims of this practice, which was known as "blackbirding" because of the slave traders' dark clothing and late-night raids.

The boys built a makeshift house and "started organizing everything in a roster: how to keep the fire, how to say our prayers, along with taking care of the banana palms," recalled Sione Filipe Totau, one of the six boys, in a 2021 interview with Vice. Unlike the characters in Lord of the Flies, Totau added, "We all worked together as though we'd live on the island for a long time." Speaking with the Australian Broadcasting Company in 2020, Tongan storyteller Meleika Gesa-Fatafehi attributed the boys' survival to their Tongan upbringing. "When we find other Tongans, we stick together," she said. "That is very much in our value system, and it's very different to how those fictional boys would have been raised."

In September 1966, Australian fisherman Peter Warner noticed smoke from a fire while sailing past 'Ata, which he knew to be uninhabited. He sailed closer to the island, enabling the castaways to spot his boat. One of the boys swam out and explained the situation. When Warner radioed in the teens' names, the astonished operator replied, "These boys had been given up for dead. Funerals have been held." After a huge celebration to mark the boys' return, Warner hired all six to work on his lobster boat. He remained especially close to Totau, who viewed him as a father figure.

4. Philip Ashton

Philip Ashton was near death when he was finally rescued in June 1724 after 16 months of seclusion on an island just off Honduras. It wasn't the first time the young man from Massachusetts had defied death in recent years.

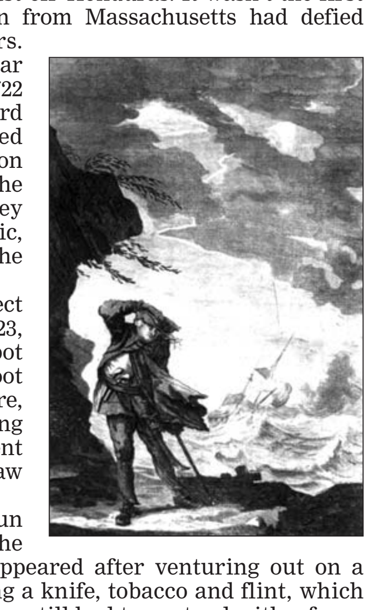

Ashton was fishing near Nova Scotia in June 1722 when pirates led by Edward Low (better known as Ned Low) attacked his boat. Ashton flatly refused to join up, so the pirates kept him captive as they made their way across the Atlantic, attacking ships near Brazil and the coast of Africa.

When the pirates stopped to collect fresh water off Honduras in March 1723, Ashton managed to secure himself a spot on a rowboat headed to shore. Setting foot on land for the first time since his capture, Ashton escaped the pirates' clutches by hiding in the woods. But he had no food or equipment to aid his survival. Despite finding fruit and raw turtle eggs to eat, Ashton started to waste away.

In November 1723, an Englishman on the run from the Spanish canoed to the island, where he encountered Ashton. Although the stranger disappeared after venturing out on a hunting trip, he left behind some supplies, including a knife, tobacco and flint, which enabled Ashton to hunt animals and cook meat. Ashton still had to contend with a fever, the island's intense heat, and threats from wild animals such as snakes and mosquitoes. He also endured constant hunger and fear of an attack by the Spanish. Finally, in June 1724, a British ship docked at the island and saved Ashton. Describing the moment he was finally rescued in a 1726 book about his escapades, Ashton said the sailor who found him "started back, frighted to see such a poor, ragged, lean, wan, forlorn, wild, miserable object so near him, but upon recovering himself, he came and took me by the hand, and we fell to embracing one another, he with surprise and wonder, I with a sort of ecstasy of joy." After his rescue, Ashton returned to his home state, where he died in 1746.

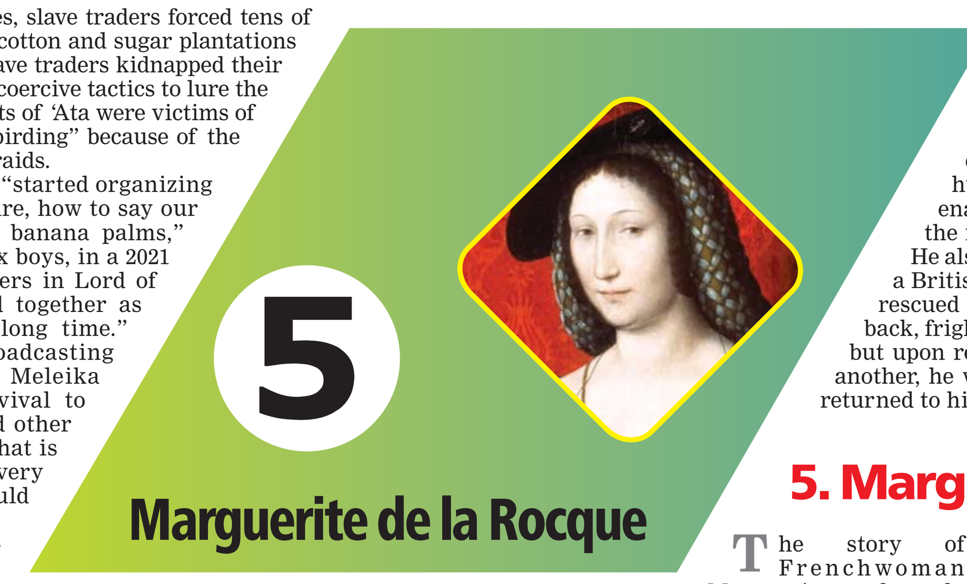

5. Marguerite de la Rocque

The story of Frenchwoman Marguerite de la Rocque's marooning on a Canadian island is one of romance and tragedy.

Little is known of de la Rocque's life prior to 1542, when she joined a relative, the adventurer Jean-François de la Rocque de Roberval, on his journey to the New World. En route to Canada, Roberval learned that de la Rocque had taken a young man on the ship as her lover. Incensed by the couple's actions, the Protestant Roberval left them with de la Rocque's servant on the Isle of Demons, off the coast of Newfoundland. While in exile, de la Rocque gave birth to a child. At some point afterward, both of her adult companions died, as did the child. Now entirely alone, de la Rocque survived by hunting wild animals with firearms given to the castaways by Roberval's departing crew.

One of the main historical accounts of de la Rocque's trials is the *Hemptaméron*, a collection of short stories by French noblewoman Marguerite de Navarre. The text, which was published posthumously in 1558, suggests that de la Rocque "passed the time in reading, contemplation, prayers and orisons, having a cheerful and contented spirit in a body emaciated and half dead." De la Rocque was eventually rescued by passing fishermen. She returned to France, where she became a schoolmistress. The date of her death is unknown, and whether Roberval faced any punishment for deserting her is unclear. He was assassinated in 1560 amid rising tensions between France's Protestant Huguenots and Catholics.

3. Fernão Lopes

Arguably no one on this list was left on their deserted island in a worse state than Fernão Lopes. A Portuguese soldier, Lopes, sailed with his compatriots to India in 1510 and participated in the capture of the port of Goa. Lopes reportedly rode into Goa with Afonso de Albuquerque, the governor of Portuguese India, following a priest who carried a cross and the banner of the Order of Christ. The procession signaled Portugal's ambition to convert India's Hindus and Muslims into Christians.

Lopes, however, did exactly the opposite, converting from Christianity to Islam alongside several of his fellow soldiers. When Albuquerque discovered this betrayal, he chopped off the men's noses, ears, tongues, right hands and left thumbs as punishment. Lopes survived this torture and spent the next several years living in disgrace. It was only in 1516, after Albuquerque's death, that he received a royal pardon and permission to return to Portugal. On the way back home, however, Lopes got off the ship at St. Helena (an uninhabited island 1,210 miles off Africa's west coast) rather than face the reality of being viewed as a traitor in his home country. According to *The Other Exile*, a 2017 biography of Lopes by author A.R. Azzam, St. Helena was home to a "highly nutritious" selection of edible plants and herbs. The island's "shallows also boasted the reclusive but flamboyant angelfish and hundreds of butterfly and goatfish," Azzam wrote. "Fresh water was everywhere, with streams gushing thanks to the almost daily rain."

Lopes remained on St. Helena—the same island where Napoleon Bonaparte would die in exile in 1821—for about 14 years. He eventually returned to Portugal, where he met the king and queen. But the trip was brief, as Lopes was eager to return to St. Helena. He soon made his way back there, this time taking along pigs, chickens and goats. He died on the island in 1545.

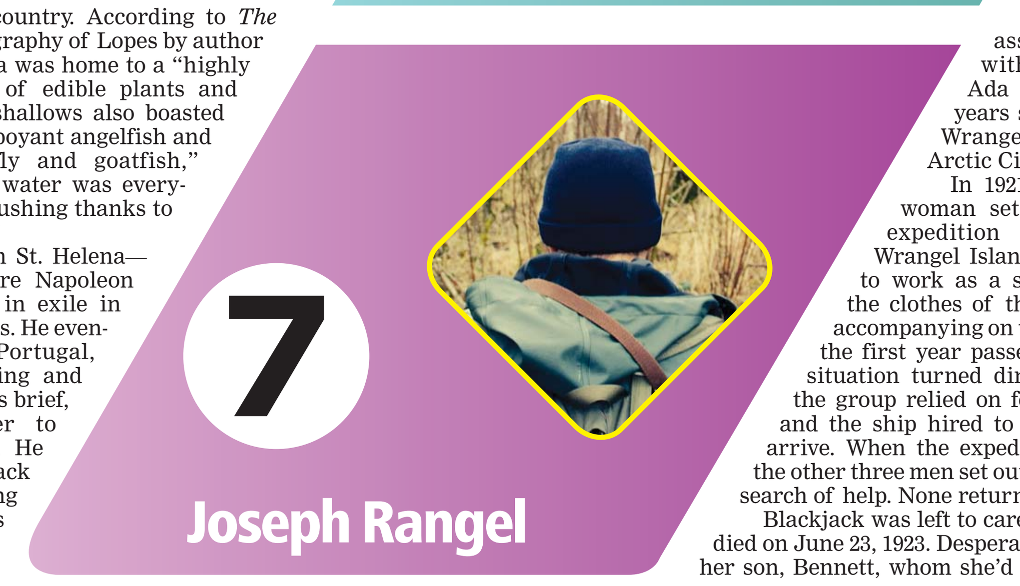

6. Ada Blackjack

Although popular culture tends to associate castaways with tropical islands, Ada Blackjack spent two years stuck on the freezing Wrangel Island, above the Arctic Circle.

In 1921, the young Iñupiat woman set off on a two year expedition from Alaska to Wrangel Island. She was supposed to work as a seamstress, repairing the clothes of the four men she was accompanying on the journey. Although the first year passed without issue, the situation turned dire after the animals, the group relied on for food, disappeared, and the ship hired to pick them up didn't arrive. When the expedition's leader fell ill, the other three men set out for Siberia on foot in search of help. None returned.

Blackjack was left to care for the captain, who died on June 23, 1923. Desperate to be reunited with her son, Bennett, whom she'd placed in an orphanage while she sought work to pay for his tuberculosis treatment, Blackjack survived by fighting off polar bears, catching foxes and shooting birds. She was rescued by a schooner sent to look for the missing expeditioners in August 1923. Upon meeting the rescuers, Blackjack reportedly told them, "There is nobody here but me. I am all alone."

While the press pleaded to hear every detail of Blackjack's story, praising her as a female Robinson Crusoe, the lone survivor of the expedition avoided the attention. Instead, she took Bennett to Seattle to undergo medical treatment. Blackjack died in Palmer, Alaska, in 1983, at age 85.

7. Joseph Rangel

The most recent entry on this list dates to the fall of 2000, when 51-year-old Joseph Rangel and 50-year-old Lorenzo Madrid, both California residents and lifelong friends, joined 24-year-old guide Jose Luis Ramos Garcia on a weeklong fishing trip in the Sea of Cortez. They were initially part of a larger group of 12 people, but one day, Garcia took the two men on a separate excursion in a smaller boat. When the 22-foot-long skiff encountered heavy winds, the trio decided to dock at an island off the coast of Baja California, Mexico. The men made driftwood oars to row themselves to the mainland, but the winds pushed them back to the island before ultimately wrecking the boat. On one occasion, Garcia attempted to swim some 30 miles to safety but turned back after seeing a shark, the *Los Angeles Times* reported in 2000. The trio's food options were limited to crabs, sea snails and sea cucumbers. As time passed, Madrid began to weaken. Eleven days into the ordeal, he died, apparently of dehydration and exposure. Rescuers found the two surviving men less than 48 hours later. When Rangel returned to shore, he criticized the organizers of the trip, suggesting that the skiff lacked adequate safety measures. "A simple radio would have taken care of it, simple safety equipment and a plan if something went wrong," Rangel told the *Associated Press*.

rajeshsharma1049@gmail.com

THE WALL

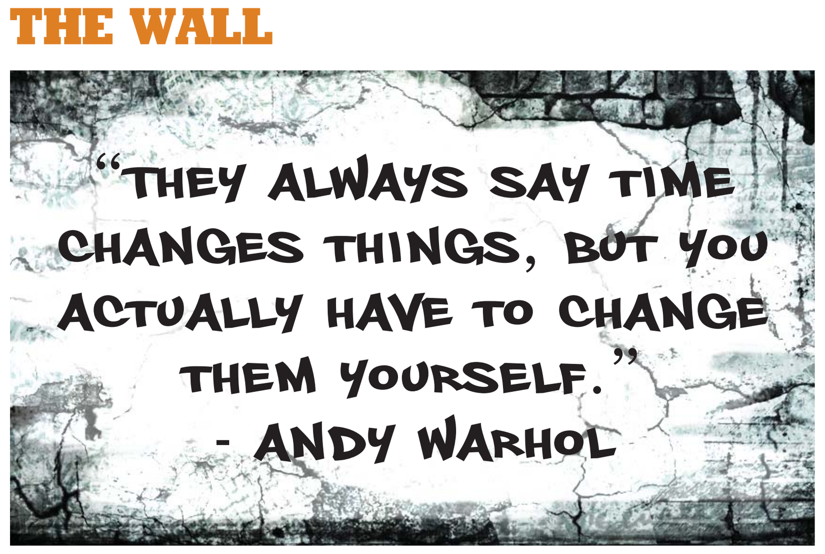

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

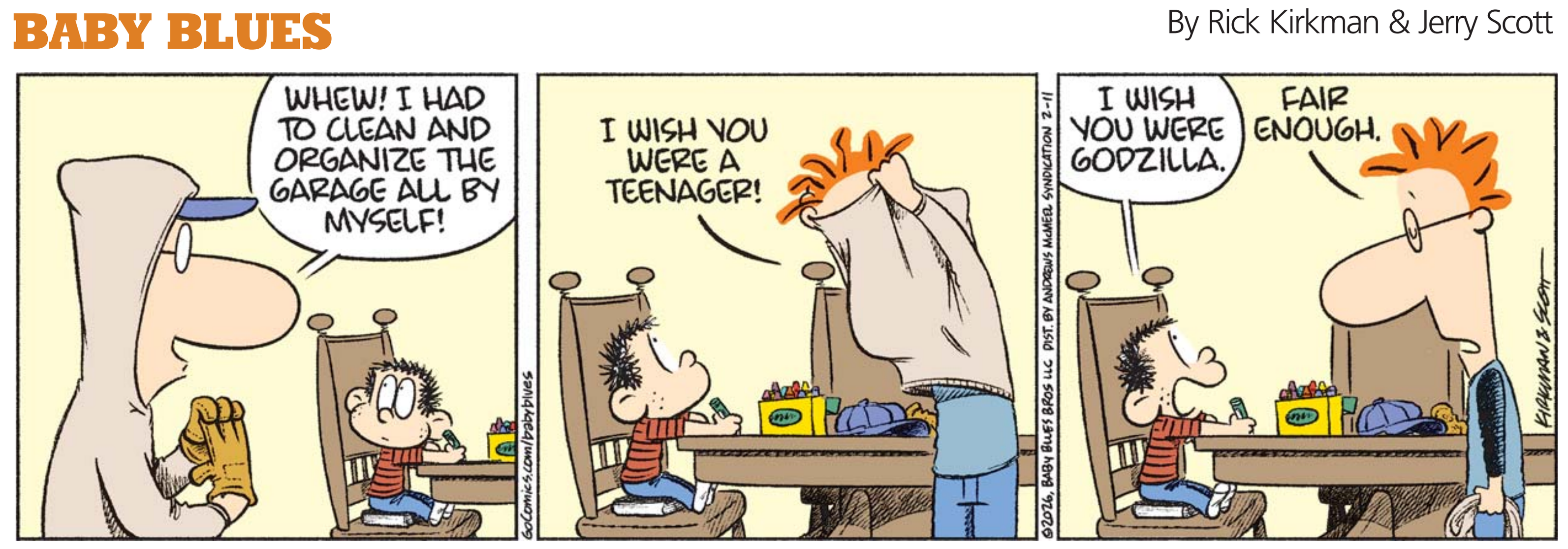

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

अजमेर : बोलेरो से कुचले गए पूर्व सरपंच गोविंदराम गुर्जर की उपचार के दौरान मौत

घायल पूर्व सरपंच गोविंदराम सात दिन से जेएलएन अस्पताल के आईसीयू में भर्ती था

- पूर्व सरपंच की मौत की खबर फैलते ही गुर्जर समाज का गुस्सा फूट पड़ा
- परिजनों ने पुलिस प्रशासन पर ढिलाई का आरोप लगाते हुए पोस्टमार्टम से इनकार किया
- आरोपियों की दो दिन में गिरफ्तारी का अल्टीमेटम, आश्वासन पर माने ग्रामीण

अजमेर, (निसं)। जिले के मांगलियावास थाना क्षेत्र के डूमाडा गांव में अतिक्रमण के विरोध के दौरान बोलेरो से कुचले गए पूर्व सरपंच गोविंद राम गुर्जर की बुधवार सुबह उपचार के दौरान मौत हो गई। गोविंदराम पिछले सात दिन से जेएलएन अस्पताल के आईसीयू में जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहे थे। मौत की खबर फैलते ही गुर्जर समाज का गुस्सा फूट पड़ा और अस्पताल की मोर्चरी के बाहर भारी संख्या में ग्रामीण जमा हो गए।

मामला 11 फरवरी का है, जब डूमाडा गांव में एक सार्वजनिक रास्ते पर हो रहे अतिक्रमण को लेकर ग्रामीण विरोध जताने पहुंचे थे। आरोप है कि विवाद के दौरान वार्डपंच के परिजनों ने विरोध कर रहे ग्रामीणों पर अपनी तेज रफ्तार बोलेरो चढ़ा दी। इस दर्दनाक हादसे में पूर्व सरपंच गोविंदराम गुर्जर समेत तीन लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। बुधवार को गोविंदराम के दम तोड़ने के बाद पुलिस ने इस मामले में हत्या (धारा 302) की धारा जोड़ दी है।

मोर्चरी पर हंगामा और पोस्टमार्टम से इनकार :-गोविंदराम की मौत की सूचना मिलते ही भारी संख्या में ग्रामीण और समाज के लोग जेएलएन मोर्चरी पहुंचे। परिजनों ने पुलिस प्रशासन पर ढिलाई का आरोप लगाते हुए पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया। ग्रामीणों का कहना था कि घटना के एक सप्ताह बाद भी नामजद 4 आरोपी पुलिस की पकड़ से बाहर हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मौके पर भारी पुलिस जाब्ता तैनात किया गया। प्रदर्शनकारी अस्पताल के ट्रॉमा वार्ड तक जा पहुंचे और जमकर नारेबाजी की।

देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष (राज्य मंत्री) ओमप्रकाश भड़ाना भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि एक जनप्रतिनिधि का नाम इस षड्यंत्र में सामने आ रहा है, जिसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। यदि तय समय में आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई, तो आंदोलन उग्र होगा। वहीं गुर्जर समाज के नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई, तो अजमेर दौरे पर आ रहे मुख्य सचिव और डीजीपी का घेराव किया जाएगा।

तनाव बढ़ता देख एडिशनल एसपी ग्रामीण दीपक कुमार और एडिशनल एसपी सिटी हिमांशु जांगिड़ ने मोर्चा संभाला। जेएलएन अस्पताल के लेक्चर हॉल में पुलिस अधिकारियों और समाज के 21 प्रतिनिधियों के बीच लंबी वार्ता हुई।

वार्ता समझौते के मुख्य बिंदु :-पुलिस ने लिखित आश्वासन दिया कि अगले 48 घंटों में शेष सभी फरार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। अतिक्रमण संबंधी मामलों की जांच के लिए एक विशेष कमेटी गठित की जाएगी। पुलिस ने बताया कि मुख्य आरोपी परमेश्वर गुर्जर को पहले ही गिरफ्तार कर बोलेरो जब्त की जा चुकी है। सहमति बनने के बाद मेडिकल बोर्ड द्वारा पोस्टमार्टम करवाया गया। पुलिस अब फरार आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है और इलाके में शांति बनाए रखने के लिए एहतियात बरती जा रही है।

कार की टक्कर से बाइक सवार की मौत

कोटा, (निसं)। महावीर नगर थाना इलाके में मंगलवार देर रात्रि को कार की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार हादसा उस समय हुआ जब बाइक पर सवार एक युवक अपने कार्य से घर की ओर जा रहा था, तभी महावीर नगर तृतीय चौराहे के समीप एक तेज रफ्तार कार चालक ने लापरवाही पूर्वक वाहन को चलाते हुए बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसे में घायल बाइक सवार युवक रोहित राठौर को अस्पताल लाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि हरिओम नगर कच्ची बस्ती निवासी रोहित राठौर (21) जो होटल में काम करता है, मंगलवार देर रात्रि को कार्य से घर की ओर जाते समय महावीर नगर तृतीय चौराहे पर तेज रफ्तार कार ने बाइक को साईड से टक्कर मार दी, टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार युवक बाइक से उछल कर दूर जाकर गिरा, हादसे में बाइक सवार की मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। मृतक के परिजनों की रिपोर्ट पर अज्ञात कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

कमरे पर सो रहे युवक की सिर फोड़कर हत्या

लोहे का पाइप मारकर जान ली, शराब पार्टी के बाद कहासुनी हुई थी

- डॉग स्क्वॉड और एफएसएल की टीमों ने मौके से सबूत जुटाये

बीकानेर, (निसं)। कमरे में सो रहे युवक की लोहे के पाइप से सिर फोड़कर हत्या कर दी गई। जांच में सामने आया है कि हत्या से पहले वह अपने दो परिचितों के साथ शराब पार्टी कर रहा था। इसी शराब पार्टी में हुई कहासुनी के बाद उसकी हत्या की गई है। वारदात के दौरान युवक नींद में था। उसके सिर पर लोहे के पाइप से वार किया गया और वह बिस्तर पर ही ढेर हो गया।

मामला बीकानेर के खाजूवाला थाना क्षेत्र के चक 18 केजेडी का है। मौके पर डॉग स्क्वॉड और एफएसएल टीम ने कमरे की जांच की है। घटना की सूचना के बाद खाजूवाला पुलिस मौके पर पहुंची। प्रशिक्षु आरपीएस एवं थानाधिकारी रोहित चौधरी, सीओ अमरजीत चावला तथा सब इंस्पेक्टर हरपाल सिंह सहित पुलिस टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। खाजूवाला थानाधिकारी प्रशिक्षु आरपीएस रोहित चौधरी ने बताया कि जगदीश नायक की हत्या की सूचना मिली थी। यहां पहुंचे और मामले की जांच की है। बीकानेर से डॉग स्क्वॉड और एफएसएल की टीमों को भी सूचना दी है। फिलहाल मामले में जांच चल रही है। अब तक की जांच में सामने आया है कि सीयासर चौगान के चक 18 केजेड़ी फांटा स्थित सीसी ब्लॉक फैक्ट्री में जगदीश नायक और उसके साथ 2 लोग और थे। तीनों शराब पार्टी कर रहे थे। इसी दौरान किसी बात को लेकर बहस हुई थी। बाद में जब जगदीश नायक कमरे में सो रहा था, तब उस पर लोहे की पाइप से हमला कर दिया गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

ओलावृष्टि और बारिश से ठिठुरा अजमेर शहर, तापमान में गिरावट दर्ज

16 दिनों बाद हुई बारिश से किसान और आमजन प्रभावित

अजमेर, (निसं)। अजमेर में पश्चिमी विक्षोभ ने एक बार फिर अपना असर दिखाया है। बुधवार को तड़के हुई तेज बारिश और ओलावृष्टि ने शहर की रफ्तार पर ब्रेक लगा दिया और तापमान में भारी गिरावट दर्ज की गई। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दो-तीन दिनों में ठंड का प्रकोप और बढ़ सकता है।

जानकारी के अनुसार मंगलवार देर रात से ही आसमान में बादलों ने डेरा डाल लिया था। करीब रात 2:30 बजे बादलों की गड़गड़ाहट और तेज हवा के साथ झमाझम बारिश का दौर शुरू हुआ, जो सुबह चार बजे तक रुक-रुक कर चलता रहा। सुबह जब शहरवासी जागे, तो उन्हें घनी घटाओं और ओलों की सफेद चादर के साथ कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ा। मंगलवार रात और बुधवार को हुई बारिश को मिलाकर अब तक इस सीजन की कुल 13 दिन मावठ दर्ज की जा चुकी है। 16 दिनों के लंबे अंतराल के बाद हुई इस बारिश ने किसानों और आम जनजीवन दोनों को प्रभावित किया है।

मौसम विभाग की मानें तो अभी राहत मिलने के आसार कम है। 19 फरवरी सुबह और शाम के समय ठंड का असर काफी अधिक रहेगा। 20 फरवरी तड़के हल्की सर्द हवाएं चलने की संभावना है। पूर्वानुमान है कि अगले 2-3 दिनों में न्यूनतम तापमान में 3 से 4 डिग्री सेल्सियस तक की और गिरावट आ सकती है। हालांकि इस दौरान रात के तापमान में मामूली बढ़ोतरी भी देखी जा सकती है।

मसूदा में बारिश और ओलावृष्टि

मसूदा, (निसं)। प्रदेश में सक्रिय हुए पश्चिमी विक्षोभ का असर मसूदा उपखंड क्षेत्र में भी देखने को मिला। मंगलवार रात और बुधवार सुबह तेज बिजली की गड़गड़ाहट के साथ बारिश हुई तथा कई स्थानों पर ओले भी गिरे।

अचानक बदले मौसम से कस्बे में ठंडक बढ़ गई और आमजन का जनजीवन प्रभावित हुआ। दो दिनों से बढ़े तापमान के कारण लोग हल्के कपड़ों में नजर आ रहे थे, लेकिन बारिश के बाद फिर से सर्दी का एहसास होने लगा और लोगों ने गर्म कपड़ों का सहारा लिया। ओलावृष्टि से खेतों में खड़ी पकी फसलों को नुकसान की आशंका से किसानों की चिंता बढ़ गई है। कई किसानों ने बताया कि यदि मौसम में सुधार नहीं हुआ तो तैयार फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। बारिश के कारण कस्बे की सड़कों पर पानी भर गया तथा जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं होने से कुछ स्थानों पर नालियों का पानी सड़कों पर बहता दिखाई दिया।

दौसा में बरसात से किसान चिंतित

दौसा, (निसं)। दौसा जिले में पश्चिमी विक्षोभ के असर के चलते तेज गर्जना के साथ बारिश का दौर रुक-रुक कर जारी है। इधर बरसात के बाद ठंडी हवाओं के चलते एक बार फिर सर्दी का असर बढ़ गया है। वहीं दूसरी ओर बेमौसम की बरसात ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है।

उल्लेखनीय है कि पश्चिमी विक्षोम के चलते बुधवार को दौसा सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में बरसात का दौर शुरु हो गया है। सुबह से देर रात्रि तक बरसात को दौर जारी रहा, जिसमें चलते तापमान में भारी गिरावट आई है, जिसके चलते ठंडक बढ़ गई है। बेमौसम की बरसात ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। सरसों की अगेती फसल की कटाई पहले ही हो चुकी है और खेतों में थ्रेसर से कुटाई का काम चल रहा है। ऐसे में कटी हुई फसल के भीगने से नुकसान की आशंका है। किसानों का कहना है कि अगर बारिश का दौर जारी रहा तो तैयार उपज खराब हो सकती है और उत्पादन घटने का खतरा है।

चोरी का प्रयास, दो आरोपी गिरफ्तार

डूंगरपुर, (निसं)। कोतवाली थाना अंतर्गत शहर के सुभाष नगर में एक रिहायशी मकान में चोरी करने के प्रयास के मामले में सीसीटीवी फुटेज के आधार पर दो आरोपी को गिरफ्तार करने मे सफलता प्राप्त की। पुलिस सूत्रों के अनुसार सुभाष नगर निवासी नारायण पुत्र लालजी खराडी ने 7 फरवरी को प्राथमिकी दर्ज कराई थी। 5 फरवरी को हॉस्पीटल ड्यूटी कर घर लौटा तो देखा कि दरवाजे की कुंडी टूटी हुई है तथा ताले को तोड़ने की कोशिश की गई है, लेकिन जब ताला खोल कर मकान में देखा तो सभी सामान सुरक्षित था। घर पर लगे कैमरों का फुटेज देखा तो बाइक पर दो युवकों ने आकर चोरी का प्रयास करते हुए दिखाई दिए। प्रार्थी की रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर आरोपियों की पहचान कर ली तथा इस मामले में गौरव पुत्र कालूराम आमलिया निवासी न्यू कॉलोनी तथा मुस्तफा उर्फ बोड़ा पुत्र जावेद खान निवासी शास्त्री कॉलोनी जो कि पूर्व के कई मामलों में भी चालानशुदा है, गिरफ्तार कर लिया गया।

उद्घाटन समारोह में विधायक को नहीं बुलाने पर अधिकारी एपीओ

- विधानसभा अध्यक्ष के निर्देश पर समसा के अतिरिक्त जिला समन्वयक गिर्राज प्रसाद मीणा को एपीओ किया

दौसा, (निसं)। दौसा विधायक दीनदयाल बैरवा को कक्षा-कक्ष के उद्घाटन समारोह में नहीं बुलाना शिक्षा विभाग के एक अधिकारी को भारी पड़ गया। विभाग ने विधानसभा अध्यक्ष के निर्देश पर इसे गंभीरता से लेते हुये बुधवार को समसा के अतिरिक्त जिला समन्वयक गिर्राज प्रसाद मीणा को एपीओ कर दिया। इधर मीणा के एपीओ होने के साथ ही अन्य विभाग के आला अधिकारियों में हड़कंप मच गया है।

जानकारी के अनुसार दौसा जिले के लवाण ब्लॉक में एक विद्यालय में कक्षा-कक्ष का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया था, जिसमें निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का आमंत्रित तक नहीं किया गया तथा शिक्षा विभाग ने इसका उद्घाटन दौसा विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी रहे जगमोहन मीणा से करवा लिया। इस पर दौसा विधायक दीनदयाल बैरवा ने नाराजगी व्यक्त करते हुये इसकी शिकायत जिला कलैक्टर सहित उच्च अधिकारियों से की तथा समारोह आयोजन कराने वाले समसा के अतिरिक्त जिला समन्वयक गिर्राज प्रसाद मीणा से भी आमंत्रित नहीं किये जाने पर सवाल किया। जिस पर गिर्राज प्रसाद मीणा विधायक दीनदयाल बैरवा को संतोषप्रद जवाब नहीं दे पाये तथा दो दिन बाद पुनः एक ओर आयोजन किया, जिसमें भी विधायक सहित अन्य निर्वाचितत जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित नहीं किया।

इस पर दौसा विधायक दीनदयाल बैरवा ने विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को इसकी शिकायत की। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने मामले को गंभीरता से लेते हुये शिक्षा विभाग को अतिरिक्त जिला समन्वयक गिर्राज प्रसाद मीणा के खिलाफ कार्रवाही के निर्देश जारी कर दिये। विधानसभा अध्यक्ष के हस्तक्षेप के बाद बुधवार को शिक्षा विभाग ग्रुप-2 की संयुक्त शासन सचिव रंजीता गौतम ने एक आदेश जारी कर अतिरिक्त जिला समन्वयक गिर्राज प्रसाद मीणा को एपीओ कर दिया। सूत्रों ने बताया कि दौसा विधायक दीनदयाल बैरवा ने अपने कार्यकाल में हुये सभी उद्घाटन समारोह की रिर्पोट बनाकर विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का सौंपी है, जिसमें निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की उपेक्षा की गई है।

बदमाशों ने मोबाइल छीना

कोटा, (निसं)। गुमानपुरा थाना इलाके में बाइक सवार तीन बदमाशों द्वारा एक बाइक सवार युवक से उसका मोबाइल छीनने का मामला सामने आया है। पीड़ित ने इसकी रिपोर्ट गुमानपुरा थाने में दर्ज कराई है। गुमानपुरा थानाधिकारी महेश कुमार ने बताया कि विक्रम नाम के युवक ने रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में कहा कि गुमानपुरा इलाके में एक दुकान पर काम करता है जो बाइक से अपने मित्र को बजरंग नगर छोड़कर घर की ओर जा रहा था। इलाके में स्थित पेट्रोल पम्प के समीप बाइक पर आये तीन बदमाशों ने उसे रोका और धमकाकर उसका मोबाइल छीन ले गये। रिपोर्ट में कहा कि मोबाइल के कवर में करीब 1900 रूपये भी थे।

मादक पदार्थ के आरोपी को दस साल की सजा

जोधपुर, (कासं)। एनडीपीएस न्यायालय जोधपुर के विशिष्ट न्यायाधीश मधुसूदन मिश्रा ने 12 साल पुराने अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त के मामले में फैसला सुनाते हुए आरोपी को 10 वर्ष का कठोर कारावास और एक लाख रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है।

विशिष्ट लोक अभियोजक एनडीपीएस जोधपुर गोविन्द जोशी ने बताया कि 16 जनवरी 2014 को धवा से लुणावास जाटान रोड से धतरवालों की ढाणी जाने वाले रास्ते पर भागीरथराम की ढाणी के बाहर एक व्यक्ति दो कट्टे लेकर रास्ते के किनारे खड़ा था जो झंवर पुलिस थाना के तत्कालीन थानाधिकारी नरपतसिंह भाटी मय पुलिस जाब्ता को देखकर भागने लगा। पुलिस द्वारा पीछा करने पर दोनों कट्टो को फेंककर भागने में कामयाब रहा। जाब्ता में शामिल संबंधित बीट कॉन्स्टेबल रामपाल ने भागने वाले व्यक्ति की भागीरथराम पुत्र पप्पाराम विश्नोई निवासी गांव धवा पुलिस थाना झंवर के रूप में पहचान की। दोनों कट्टों में से 48 किलोग्राम डोडा-पोस्त का चूरा बरामद हुआ। पुलिस ने दूसरे दिन आरोपी को गिरफ्तार किया तथा बाद अनुसंधान आरोपी के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र प्रस्तुत किया। विशिष्ट लोक अभियोजक एनडीपीएस जोधपुर ने आरोपी को कठोरतम सजा देने की मांग की जबकि आरोपी ने नरमी बरतने का आग्रह किया।

चार सिलेंडर जब्त

अलवर, (निसं)। जिला कलैक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में घरेलू गैस के व्यावसायिक कार्य में दुरूपयोग को रोकने हेतु गठित जांच दल द्वारा अलवर शहर में विभिन्न स्थानों पर कार्रवाई कर 4 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए गए।

जिला रसद अधिकारी विनोद जुनेजा ने बताया कि टीम द्वारा सतीश गुर्जर, जयराम नगर खुदनपुरी 200 फीट रोड के व्यावसायिक स्थल पर जांच के दौरान 4 घरेलू गैस सिलेंडरों को व्यावसायिक कार्यों में उपयोग किया जाना पाया गया, जिसे जब्त कर सुरक्षा की दृष्टि से मैसर्स प्रसन्ना गैस एजेंसी के प्रतिनिधि को सुपुर्द किया गया। इसी प्रकार मैसर्स अलवर इंडेन के भगवानपुरा स्थित शोरूम एवं गोदाम की जांच के दौरान कई अनियमितताएं पाई गई।

पी.एम. की प्रस्तावित यात्रा को लेकर मुख्य सचिव और डीजीपी अजमेर पहुंचे

- मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास और पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार ने सभा स्थल, हेलिपैड, पार्किंग, संपर्क मार्गों और सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया

अजमेर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 28 फरवरी को कायड़ विश्राम स्थली में प्रस्तावित आगमन को लेकर तैयारियों की समीक्षा मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास और पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार ने की। अधिकारियों ने सभा स्थल, हेलिपैड, पार्किंग, संपर्क मार्गों और सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश दिए।

मुख्य सचिव और डीजीपी ने अजमेर का दौरा किया।

निरीक्षण के दौरान प्रवेश और निकास के पृथक मार्ग, प्रभावी ट्रैफिक प्लान, पर्याप्त पार्किंग, भीड़ नियंत्रण और आपातकालीन व्यवस्थाओं को सुदृढ़ रखने पर जोर दिया गया। पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं, अग्निशमन, स्वच्छता और विद्युत आपूर्ति जैसी मूलभूत सुविधाओं की समीक्षा की गई। सीसीटीवी निगरानी, संकेतक बोर्ड और पर्याप्त पुलिस जाप्ता तैनाती के निर्देश दिए गए।

सर्किट हाउस में आयोजित बैठक में अधिकारियों ने लाभार्थियों के बैठने की व्यवस्था, पार्किंग की निकटता, एम्बुलेंस और दमकल की उपलब्धता, हाईटेंशन लाइनों की ऊंचाई तथा शिलान्यास, लोकार्पण और सीधा लाभ हस्तांतरण जैसे कार्यक्रमों की तैयारियों पर चर्चा की गई। अधिकारियों को 26 फरवरी तक सभी व्यवस्थाएं पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। बैठक में संभागीय आयुक्त, जिला कलैक्टर, पुलिस अधीक्षक सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

नीमकाथाना : बारिश में भी जारी रहा गिरिजन नदी बचाओ आंदोलन

गिरिजन नदी के किनारे पहाड़ी पर कथित अवैध खनन के विरोध में डटे ग्रामीण

- ग्रामीणों ने कहा जब तक पहाड़ी पर खनन पूरी तरह बंद नहीं किया जाएगा और नदी की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक आंदोलन जारी रहेगा

पाटन, (निसं)। नीमकाथाना क्षेत्र के दीपावास गांव में गिरिजन नदी के किनारे पहाड़ी पर कथित अवैध खनन के विरोध में ग्रामीणों का धरना बारिश के बावजूद लगातार जारी रहा। ग्रामीणों का कहना है कि यह केवल खनन रोकने का आंदोलन नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व और पर्यावरण संरक्षण की लड़ाई है।

बारिश के दौरान भी बड़ी संख्या में महिलाएं, बुजुर्ग और युवा धरनास्थल पर छाता लेकर डटे रहे।

ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि न्यायालय के स्पष्ट आदेशों को दरकिनार कर पहाड़ी क्षेत्र में खनन कार्य किया जा रहा है, जिससे गिरिजन नदी के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। उनका कहना है कि खनन से नदी का प्राकृतिक प्रवाह प्रभावित हो रहा है और आसपास के पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंच रहा है। बारिश के दौरान भी बड़ी संख्या में महिलाएं, बुजुर्ग और युवा धरनास्थल पर डटे रहे। ग्रामीणों ने स्पष्ट किया कि जब तक पहाड़ी पर खनन पूरी तरह बंद नहीं किया जाएगा और नदी की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। धरनास्थल पर मौजूद वक्ताओं ने कहा कि गिरिजन नदी क्षेत्र की जीवनरेखा है, इससे जुड़े जलस्त्रोत, खेती और पशुधन ग्रामीणों की आजीविका का आधार हैं। यदि खनन जारी रहा तो आने वाली पीढ़ियों को जल संकट और पर्यावरणीय दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ेगा। ग्रामीणों ने प्रशासन से तत्काल हस्तक्षेप कर न्यायालय आदेशों की पालना सुनिश्चित करने तथा खनन पर रोक लगाने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी कि मांगें नहीं मानी गई तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। बारिश की बूंदों के बीच भी आंदोलनकारियों का उत्साह कम नहीं हुआ। उनके नारों में साफ झलक रहा था कि यह संघर्ष केवल आज का नहीं, बल्कि आने वाले कल को बचाने की जंग है।

दो बाइकों की भिड़ंत में चार युवक घायल

गंगापुर सिटी, (निसं)। मंगलवार देर शाम गंगाजी की कोठी के पास दो बाइक में आमने-सामने टक्कर हो गई। इस हादसे में चार युवक गंभीर रूप से घायल हो गए।

जानकारी के अनुसार एक बाइक पर रिजवान पुत्र जमील और संतोष तमोली सवार थे। ये दोनों युवक काम खत्म कर अपने घर लौट रहे थे। दूसरी बाइक पर धर्मेंद्र सिंह चौहान और गोलू बैरवा सवार थे। ये गंगापुर से अपने घर बाढ़ सलेमपुर की ओर जा रहे थे। गंगा जी की कोठी के पास दोनों बाइक की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। टक्कर के बाद चारों युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। सूचना मिलते ही 108 एंबुलेंस मौके पर पहुंची और सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल गंगापुर सिटी ले जाया गया। डॉक्टरों ने घायलों का उपचार शुरू किया। डॉक्टरों के अनुसार, संतोष तमोली की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर कर दिया गया है। वहीं, रिजवान, गोलू बैरवा और धर्मेंद्र सिंह चौहान का उपचार जिला अस्पताल गंगापुर सिटी में जारी है। हादसे की सूचना पर कोतवाली थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का जायजा लिया। पुलिस ने दोनों मोटरसाइकिलों को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है।

एस.डी.एम. ने सी.एच.सी. मेड व अन्नपूर्णा रसोई का निरीक्षण किया

पावटा, (निसं)। विराटनगर क्षेत्र के मेड कस्बा स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेड एवं अन्नपूर्णा रसोई योजना का विराटनगर उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय ने औचक निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान अस्पताल में चिकित्सा व्यवस्थाओं, साफ-सफाई, दवा वितरण, लैब सुविधाओं एवं मरीजों को दी जा रही सेवाओं की विस्तार से जानकारी ली गई।

उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय ने अस्पताल में भर्ती मरीजों से बातचीत कर उपचार और सुविधाओं के बारे में फीडबैक लिया व चिकित्सकों एवं स्टाफ को समय पर उपस्थित रहने तथा मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। दवाइयों की उपलब्धता और रिकॉर्ड संधारण की भी जांच की गई। इसके बाद उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय ने अन्नपूर्णा रसोई पहुंचकर भोजन की गुणवत्ता, स्वच्छता, रसोई संचालन एवं लाभार्थियों को परोसे जा रहे भोजन का निरीक्षण किया गया। एसडीएम ने भोजन का स्वाद चखकर गुणवत्ता पर संतोष जताया तथा नियमित साफ-सफाई बनाए रखने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान संबंधित विभागीय अधिकारियों को व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने और आमजन को किसी प्रकार की असुविधा न हो, यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। स्थानीय लोगों ने भी प्रशासनिक पहल की सराहना की।

अजमेर में अस्थायी सफाई कर्मियों की हड़ताल जारी

अजमेर, (कासं)। अजमेर में अस्थायी सफाई कर्मचारियों की हड़ताल बुधवार को तीसरे दिन भी जारी रही। वेतन भुगतान की मांग को लेकर काम बंद कर चुके कर्मचारियों के कारण शहर की सफाई व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो रही है। स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित हो रहे अजमेर में जगह-जगह कचरे के ढेर लग गए हैं, जिससे आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

अस्थायी सफाई कर्मचारियों का कहना है कि पिछले कुछ समय से उनका वेतन समय पर नहीं दिया जा रहा है। कई कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि उन्हें कई महीनों से भुगतान नहीं मिला है, जिसके चलते उनके परिवारों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। कर्मचारियों ने स्पष्ट किया है कि जब तक उनका बकाया वेतन नहीं दिया जाएगा, तब तक वे काम पर वापस नहीं लौटेंगे।

बीती देर रात से बुधवार दिनभर रुक-रुक कर हो रही बारिश ने हालात और बिगाड़ दिए हैं। सड़कों और मोहल्लों में जमा कचरे के ढेर बारिश के पानी में भीगकर सड़ने लगे हैं, जिससे तेज बदबू फैल रही है। कई इलाकों में जलभराव की स्थिति भी बन गई है, जिससे लोगों का घरों से निकलना मुश्किल हो रहा है। कचरे के ढेर और गंदगी के कारण मच्छरों व कीटाणुओं के पनपने की आशंका बढ़ गई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि जल्द ही सफाई व्यवस्था दुरुस्त नहीं की गई तो डेंगू, मलेरिया और अन्य संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। शहरवासियों ने प्रशासन से तुरंत हस्तक्षेप कर समस्या का समाधान करने की मांग की है। शहरवासियों का मानना है कि यदि जल्द ही हड़ताल समाप्त नहीं हुई तो आने वाले दिनों में स्थिति और अधिक गंभीर हो सकती है।

शिव मंदिर में मूर्ति स्थापना

शाहपुरा । नगर परिषद क्षेत्र के खोरी की ढाणी बिरजू सिंह में बाबा भोलेनाथ की मूर्ति स्थापना एवं विशाल भंडारे का भव्य आयोजन किया गया। नर्मदेश्वर महादेव चमत्कारेश्वर मंदिर में बाबा भोलेनाथ की मूर्ति से पूर्व कलश यात्रा के साथ नगर भ्रमण भी कराया गया। इस पावन अवसर पर आयोजन समिति द्वारा एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया और रात्रि में विशाल जागरण का आयोजन संपन्न हुआ। पंडित कमल किशोर शर्मा ने वैदिक मंत्रोचार के साथ शिव मूर्ति की स्थापना करवाई। इस अवसर पर हनुमान सिंह, शेर सिंह, गणपत सिंह, मंगल सिंह, त्रिलोक सिंह, नाथू सिंह, माल सिंह, ईश्वर सिंह, शिंभू सिंह, छीतर सिंह, सावंत सिंह, प्रहलाद सिंह शैतान सिंह, सुमेर सिंह, राम सिंह, बलबीर सिंह, रामकरण सिंह, महेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

विकास कार्यों पर विस्तृत चर्चा

कोटपूतली। क्षेत्रीय विधायक हंसराज पटेल ने बुधवार को राजधानी जयपुर पहुंचकर वरिष्ठ भाजपा नेता व पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र सिंह राठौड से संगठनात्मक मुलाकात की। इस मौके पर पटेल ने कोटपूतली विधानसभा क्षेत्र में चल रहे एवं प्रस्तावित विकास कार्यों पर विस्तृत चर्चा की। जिनमें विशेष रूप से नई ग्राम पंचायतों के सुदृढ़ीकरण, आधारभूत सुविधाओं के विस्तार एवं जनहित से जुड़े विषयों पर विचार-विमर्श हुआ।

दौसा में भूकम्प से निपटने की तैयारियों के लिए मॉक ड्रिल

दौसा। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) वडोदरा यूनिट की ओर से जिले में भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदा से निपटने की तैयारियों को सुदृढ़ करने के लिए बुधवार को यहां जिला कलक्ट्रेट परिसर में मॉक ड्रिल (पूर्वाभ्यास) का सफल आयोजन किया गया, जिसमें बचाव के प्रायोगिक तरीकों का प्रदर्शन किया गया। इसके माध्यम से आपदा के समय विभिन्न विभागों के बीच समन्वय स्थापित करना और रेस्क्यू टीमों के रिस्पॉन्स टाइम (प्रतिक्रिया समय) की जांच की गई। दोपहर बाद तीन बजे जिला कंट्रोल रूम से विभिन्न विभागों को बहुमंजिला इमारत में उच्च तीव्रता के भूकंप से नुकसान होने की सूचना दी गई।

सूचना मिलते ही एनडीआरएफ के साथ स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स, नागरिक सुरक्षा, पुलिस प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और अग्निशमन दल तत्काल मौके पर पहुंचे। पुलिस ने सबसे पहले प्रभावित क्षेत्रा को कवर किया और अन्य संबंधित एजेंसियों ने कटर और सर्च लाइट जैसे आधुनिक उपकरणों का उपयोग कर मलबे में फंसे लोगों को निकालने की कार्यवाही की। साथ ही छत पर फंसे लोगों को जिप

दौसा जिला कलेक्टर देवेन्द्र कुमार की मौजूदगी में मॉकड्रिल का अभ्यास किया।

लाइन के जरिए उतारने का लाइव अभ्यास किया गया। घायल व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार देने के लिए मौके पर ही 'मेडिकल एड पोस्ट' बनाया गया। इस दौरान पांच घायलों को चिह्नित कर उन्हें समय पर एम्बुलेंस के माध्यम से जिला अस्पताल पहुंचाया गया। इस अभ्यास में स्काउट-गाइड्स ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। जिला कलक्टर देवेन्द्र कुमार और पुलिस अधीक्षक सागर राणा ने स्वयं मौके पर उपस्थित रहकर पूरी कार्रवाई की समीक्षा की। जिला कलक्टर ने बताया कि भूकंप से बिल्डिंग गिरने के कारण मलबे में दबने और छत पर फंसे लोगों को बचाने का अभ्यास किया गया।

इसमें एनडीआरएफ, सिविल डिफेंस, मेडिकल, पुलिस और होमगार्ड इन सभी ने मिलकर बहुत ही बेहतरीन प्रदर्शन किया है। हमारा रिस्पॉन्स टाइम अच्छा रहा। उन्होंने रेस्क्यू टीमों के तालमेल की सराहना की और भविष्य में इन कौशलों को और अधिक उन्नत करने के निर्देश दिए। एनडीआरएफ के सहायक कमांडेंट प्रवीण कुमार ने बताया कि

■ **विभिन्न विभागों के बीच समन्वय और रेस्क्यू टीमों के रिस्पॉन्स टाइम को परखा**

एनडीआरएफ की तरफ से साल में एक बार हर जिले में एक मॉक ड्रिल का आयोजन किया जाता है। बुधवार को दौसा में भूकंप के संबंध में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। इसमें भूकंप के दौरान बिल्डिंग्स के गिरने और लोगों के नुकसान होने पर उनके बचाव और राहत कार्य को अंजाम देने का अभ्यास किया गया। इसमें जिला प्रशासन, जिला पुलिस, एनडीआरएफ, सिविल डिफेंस, फायर ब्रिगेड और अस्पताल इन सब एजेंसीज ने मिलकर अच्छा काम किया है। उन्होंने बताया कि यहां पर क्रिएट किए गए सीन में पांच लोगों के दबे होने की सूचना थी। उनको सभी एजेंसीज ने मिलकर जल्द से जल्द रेस्क्यू किया और सबको वहां से निकालकर हॉस्पिटल पहुंचाया गया। उसके बाद एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसमें रेस्क्यू एजेंसीज के उपयोग में आने वाले उपकरणों के बारे में बताया गया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हेमन्त कलाल, अतिरिक्त जिला कलक्टर अरविन्द शर्मा, उपखंड अधिकारी संजू मीणा, नगर परिषद आयुक्त कमलेश मीणा, नगर सुधार न्यास सचिव मूलचंद लूणिया सहित विभिन्न विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। इसी प्रकार जिले के नांगल राजावतान क्षेत्र अंतर्गत रामथला गांव में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) की ओर से बुधवार को जिला कलेक्टर देवेन्द्र कुमार की उपस्थिति में मॉक ड्रिल का सफल आयोजन किया गया। इस अभ्यास के माध्यम से भूमिगत पेट्रोलियम पाइप लाइन में संभावित लीकेज या आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए कंपनी और स्थानीय प्रशासन की तैयारियों एवं समन्वय को परखा गया। जिला कलक्टर देवेन्द्र कुमार ने बताया कि मॉक ड्रिल में आईओसीएल की पाइपलाइन में लीकेज होने के बाद उसमें आग लगने का सिनेरियो रखा गया था, जिसमें मेडिकल, आईओसीएल की अपनी टीम और फायर ब्रिगेड ने मिलकर अभ्यास को पूरा किया।

नि:शुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया

दौसा। महिला अधिकारिता विभाग के आयुक्त राकेश राजोरिया ने यहां 'साक्षी कम्प्यूटर्स' संस्थान पर महिला एवं बाल विकास विभाग के सौजन्य से चलाए जा रहे नि:शुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निरीक्षण कर जमीनी प्रगति जानी। उन्होंने पूर्व एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों से संवाद कर प्रशिक्षण से प्राप्त लाभ, शिक्षा की गुणवत्ता तथा प्रशिक्षण उपरांत रोजगार एवं प्लेसमेंट की स्थिति के संबंध में जानकारी ली। विद्यार्थियों ने बताया कि इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से उन्हें कंप्यूटर दक्षता, अंठोजी संप्रेषण कौशल एवं लेखांकन संबंधी व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ है, जिससे उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त हुए हैं। आयुक्त राजोरिया ने केन्द्र में डिजिटल बोर्ड एवं नवीनतम कंप्यूटर तकनीक के माध्यम से प्रदान की जा रही शिक्षा की विशेष सराहना की तथा इसे आधुनिक एवं प्रभावी शिक्षण प्रणाली बताते हुए केन्द्र को निरंतर तकनीकी उन्नयन के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि डिजिटल संसाधनों के उपयोग से विद्यार्थियों की समझ एवं कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। अधिकारियों ने प्रशिक्षण की गुणवत्ता, अधोसंरचना एवं विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की तथा अधिकाधिक युवाओं को कौशल आधारित शिक्षा से जोड़ने पर बल दिया। केन्द्र प्रमुख सतीश कुमार शर्मा ने अधिकारियों का स्वागत करते हुए केन्द्र में संचालित राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित आरएससीआईटी, इंग्लिश स्पोकन एवं टैली पाठ्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

जनगणना के लिए कार्मिक प्रशिक्षित

दौसा। जिले में आगामी जनगणना के सफल आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए जिला कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित दो दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण का समापन हुआ। प्रशिक्षण कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कलक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी देवेंद्र कुमार ने की । जिला कलक्टर ने कहा कि जनगणना से प्राप्त आंकडे भविष्य की सरकारी योजनाओं, संसाधन आवंटन तथा नीति निर्धारण का आधार होते हैं। उन्होंने फील्ड स्तर पर कार्यरत प्रगणकों एवं संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि डेटा संठाहण में शत-प्रतिशत सटीकता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता सुनिश्चित की जाए। जनगणना कार्य निदेशालय, जयपुर से नियुक्त राष्ट्रीय ट्रेनर मेघा शर्मा एवं मास्टर ट्रेनर ज्योति मीना ने जिले के नगरीय एवं ठाामीण क्षेत्रों के चार्ज अधिकारियों तथा अतिरिक्त चार्ज अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान सीएमएमएस पोर्टल, एचएलबीसी वेब पोर्टल तथा एचएलओ मोबाइल ऐप के बारे में बताया गया और डिजिटल प्रविष्टि की प्रक्रिया, वेब पोर्टलों के व्यावहारिक संचालन एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। अतिरिक्त जिला कलक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी अरविंद शर्मा ने जानकारी दी कि प्रथम चरण की कार्ययोजना के अंतर्गत स्वगणना 1 मई से 15 मई तक तथा फील्ड कार्य (मकान सूचीकरण एवं मकान गणना) 16 मई से 14 जून तक संपादित किया जाएगा। प्रशिक्षण सत्रों में प्रपत्रों के संधारण, डिजिटल एंट्री की बारीकियां, क्षेत्रवार गणना प्रक्रिया एवं नागरिकों से प्रभावी संवाद जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक के दौरान अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों के लिए तैयार की गई कार्ययोजना भी प्रस्तुत की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के उप निदेशक विजय कुमार शर्मा सहित जिले के सभी तहसीलदार, नायब तहसीलदार तथा नगर परिषद एवं नगर पालिकाओं के चार्ज अधिकारी उपस्थित थे।

खोया पाया

मेरे मकान 1-न-16 जवाहर नगर का मूल आवंटन पत्र, कब्जापत्र, डिक्लेरेशन, अदैय प्रमाणपत्र- जवाहर नगर में कहीं खो गए है, मिलने पर सूचित करें- मनीषा खत्री 8949005254

मेरे भूखण्ड सं.-जी-12 श्री गणपति गृह निर्माण सहकारी समिति की योजना गणेश विहार विस्तार ग्राम-चन्दलाई, जयपुर का पंजीकृत जे.डी.ए. पट्टा, साईट प्लान और पट्टे के साथ संगलन स्टाम्प पेपर कही गुम हो गये है सूचित करे-अनुराधा मिश्रा मो.- 9414893496

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम हसीना बेगम से बदलकर हसीना खातून रख लिया है भविष्य में मुझे हसीना खातून के नाम से जाना जावे 10-A गणेश विहार एन.बी.सी के पीछे खातीपुरा रोड़ जयपुर

मेरे द्वारा हरिभाऊ उपाध्याय शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज हटूंडी, अजमेर से BSTC 1st Year 2006 की सप्लीमेन्ट्री नामांक 2098 व उत्तीर्ण मार्कशीट 2007 नामांक 12893 की मूख्य अंकतालिकाऐं कहीं खो गई है मिलने पर सूचित करें। नाहिन अख्तर 9414370661

I have changed my name from WASIM AHMED QURESHI to VASIM AHMED KURESHI for all purposes R/o- 4561 Mani Ram ji ki kothi ka rasta Sanganeri gate Jaipur

I have changed my name from AASMA BANO QURESHI to AASMA WASIM for all purposes R/o- 4561 Mani Ram ji ki kothi ka rasta, Sanganeri gate, Jaipur

कार्यालय नव ज्योति राजीविका महिला सर्वागिण विकास सहकारी समिति लि. श्रीचन्दपुरा
ग्राम-श्रीचन्दपुरा तह. राजगढ (अलवर) राज.
क्रमांक-244 दिनांक-15/2/26

नोटिस

नव ज्योति राजीविका महिला सर्वागिण विकास सहकारी समिति लिमिटेड श्रीचन्दपुरा कि विशेष साधारण सभा का आयोजन दिनांक 26/2/26 को 11.00 बजे स्थान-ग्राम पंचायत-कुण्डला में होगी, आपकी उपस्थित सादर आमंत्रण है।
मिथलेश, अध्यक्ष

पालिथीन उपयोग नहीं करने के लिए जागरूकता

निवाई। प्लास्टिक मुक्त राजस्थान के संकल्प के तहत प्रथम चरण में ग्राम पंचायत राहोली के मुख्य बाजार में विकास अधिकारी नन्दकिशोर शर्मा के नेतृत्व मे दुकानदारों एवं ग्रामीणों को सिंगल यूज प्लास्टिक की पालिथीन थैली, डिस्पोजल गिलास आदि का उपयोग नहीं करने के बारे में जागरूक किया । प्लास्टिक थैली का उपयोग करने पर प्रतीकात्मक रूप से जुर्माना भी लगाया गया। इस अवसर पर ग्राम विकास अधिकारी नन्दकिशोर शर्मा ने बताया कि द्वितीय चरण में सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने के लिए अभियान चलाया जाएगा। जिसके दौरान पालिथीन का उपयोग करते पाए जाने पर जुर्माना भी लगाया जाएगा। इस अवसर पर ग्रामीणों को प्लास्टिक बेग के स्थान पर कपड़े या जूट का थैला इस्तेमाल करने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर सहायक विकास अधिकारी कैलाश गुर्जर, प्रशासक फूलादेवी मीणा, राकेश बैरवा, ललिता स्वामी व नरेंद्र जैन सहित कई अधिकारी व ग्रामीण मौजूद थे।

15 लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति पत्र बांटे

भरतपुर (निस)। जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, भरतपुर द्वारा बुधवार को होटल ईगल नेस्ट सारस चौराहा में डॉ. भीमराव अंबेडकर राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना एवं विभाग द्वारा संचालित अन्य स्वरोजगार ऋण योजनाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से जिला स्तरीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि एडीएम सिटी राहुल सैनी ने संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न स्वरोजगार एवं उद्यम प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी आमजन तक पहुँचाना और नए उद्योग स्थापित करने के लिए युवाओं एवं उद्यमियों को प्रोत्साहित करना इस शिविर का प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि उद्योग विभाग द्वारा उद्यमियों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में निरंतर सकारात्मक पहल की जा रही है।

जिला उद्योग महाप्रबंधक सी.एम. गुप्ता ने बताया कि राज्य सरकार की डॉ. भीमराव अंबेडकर राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना समाज के दलित, आदिवासी एवं पिछड़े वर्गों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने तथा उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने की एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं के माध्यम से पात्र लाभार्थियों को ऋण, अनुदान एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। शिविर में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रमोद शर्मा, उपनिदेशक, महिला अधिकारिता विभाग राजेश कुमार, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक, रीको एन.के. वर्मा, अठाणी जिला प्रबंधक पीएनबी भरतपुर प्रशांत कुमार एवं अठाणी जिला प्रबंधक पीएनबी डीग निखिल लाल उपस्थित रहे। जागरूकता शिविर में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे- युवा विश्वकर्मा उद्यमी प्रोत्साहन योजना, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, राजस्थान व्यापार नीति आदि के साथ-साथ एमएसएमई इकाइयों के कल्याण हेतु राज्य सरकार द्वारा संचालित राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, ओडीओपी, एमएसएमई पॉलिसी, निर्यात प्रोत्साहन नीति एवं एकीकृत क्लस्टर विकास योजना की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। शिविर के दौरान विभिन्न बैंकों द्वारा योजनाओं के अंतर्गत लगभग 15 लाभार्थियों को ऋण स्वीकृति हेतु प्रतीकात्मक चेक वितरित किए गए। साथ ही उत्कृष्ट कार्य करने वाले शाखा प्रबंधकों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष, सीए ब्रांच भरतपुर अंकुर खंडेलवाल, सीए गिरीश गर्ग, सीए गौरव गुप्ता, जिला उद्योग एवं वाणिज्य अधिकारी सूर्यकांत पांडे सहित लगभग 150 उद्यमियों एवं बैंक अधिकारियों ने भाग लेकरयोजनाओं की जानकारी प्राप्त की।

■ **शिविर का मुख्य उद्देश्य उद्योग लगाने के लिए प्रेरित करना रहा**

ब्रज होली महोत्सव की तैयारी

डीग भरतपुर (निस)। विश्व पटल पर ब्रज संस्कृति की अमिट छाप छोड़ने वाले ब्रज होली महोत्सव-2026 के सफल आयोजन एवं पूर्व तैयारियों की समीक्षा हेतु बुधवार को पंचायत समिति सभागार में एक उच्च स्तरीय बैठक की गई। इस बैठक की अध्यक्षता अतिरिक्त जिला कलेक्टर राजकुमार कस्वां ने की तथा पर्यटन विभाग के संयुक्त निदेशक संजय जौहरी विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि महोत्सव के दौरान कानून व्यवस्था एवं पर्यटकों की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाए ताकि ब्रज की यह गौरवशाली परंपरा पूर्ण गरिमा के साथ संपन्न हो सके। पर्यटन विभाग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार, दो दिवसीय महोत्सव का शुभारंभ 26 फरवरी को डीग में विविध आयोजनों के साथ होगा। इस दिन प्रात: 10 बजे मेला मैदान में रस्सा-कस्सी, कबड्डी, मटका दौड़ और अन्य पारंपरिक खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। तत्पश्चात, दोपहर 12 बजे डीग महल परिसर में मेहंदी, रंगोली, चित्रकला एवं मूंछ प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। सायं 4 बजे डीग महल के ऐतिहासिक रंगीन फव्वारों का संचालन होगा।

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय A.D.J-9 जयपुर - प्रथम, जयपुर
सेन्ट बैंक हो० फा० लि० विरुद्ध शरद माथुर
वाद बाबत CS -28/25,

1. नाम:- शरद माथुर पुत्र दिनेश चंद्र माथुर
जाति:- हिन्दू
स्थान:- प्लाट नं -82/98 पटेल मार्ग मानसरोवर जयपुर
2. नाम:- नेहा शरद माथुर पत्नी शरद माथुर
जाति:- हिन्दू
स्थान:- प्लाट नं -82/98 पटेल मार्ग मानसरोवर जयपुर

वादी- ने आपके विरुद्ध नकल संलग्न के लिए वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में **दिनांक 27 माह 03, सन् 2026 को दिन में 1:00 बजे** दावे का उत्तर देने के लिए उपसंजात (हाजिर) होने के लिए समन किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते हैं जिसे सम्यक अनुदेश दिये गये हों और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों के उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल/मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है, और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज़ पर, चाहे वह आपके कब्जे या शक्ति में हो, अपनी प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो आप ऐसे दस्तावेजों को लिखित कथन के साथ उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वादको सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह आज **दिनांक 09 माह 02 सन् 2026** को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगा कर दिया गया ।
न्यायाधीश

संख्याक 2
विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय उपखण्ड अधिकारी सांगानेर जयपुर द्वितीय
हनुमान सहाय बनाम रामसहाय मीणा वगैरहा
वाद/प्रार्थना पत्र घोषणा एवं स्थायी निषेधाज्ञा
वाद संख्या 268/2025

नाम सीताराम मीणा पुत्र स्वर्गीय नन्दा मीणा निवासी मीणा की ढाणी ग्राम असरपुरा नारायण विहार तहसील सांगानेर जयपुर-302020 (प्रतिवादी संख्या 2) श्री मोहन लाल मीणा पुत्र स्वर्गीय नन्दा मीणा निवासी मीणा की ढाणी ग्राम असरपुरा नारायण विहार तहसील सांगानेर जयपुर-302020 (प्रतिवादी संख्या 3) ने आपके विरूद्ध उक्त के लिये वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय मे दिनांक 26 माह 02 सन् 2026 को दिन में 10:00 पूर्वहान बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये समन किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी ऐसे प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते है जिसे सम्यक आदेश दिये गये हो और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नो के उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति ही ऐसे दे सके। आपको यह निर्देश दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित कथन दाखिल करें और उस दिन ऐसी सब दस्तावेज जो आपके कब्जे वा शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा वा मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है, और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर चाहे वह आपके सामने या शक्ति में हो या न हो, अपनी प्रतिरक्षा या मुजरा के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो आप ऐसी दस्तावेजों को लिखित कथन के साथ उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होगे तो वादकी सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह आज दिनांक 26.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगा कर दिया गया ।
मोहर अदालत
रीडर-न्यायालय
उपखण्ड अधिकारी, जयपुर द्वितीय

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता एडली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय उपखण्ड अधिकारी सांगानेर जयपुर द्वितीय
हनुमान सहाय
बनाम
रामसहाय मीणा वगैरहा
वाद/प्रार्थना पत्र अस्थायी निषेधाज्ञा
प्रार्थना पत्र संख्या 230/2025

नाम सीताराम मीणा पुत्र स्वर्गीय नन्दा मीणा निवासी मीणा की ढाणी ग्राम असरपुरा नारायण विहार तहसील सांगानेर जयपुर-302020 (अप्रार्थी संख्या 2) श्री मोहन लाल मीणा पुत्र स्वर्गीय नन्दा मीणा निवासी मीणा की ढाणी ग्राम असरपुरा नारायण विहार तहसील सांगानेर जयपुर-302020 (अप्रार्थी संख्या 3) उक्त प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 26 माह 02 सन् 2026 को 10:30 एएम बजे पूर्वाह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 06.02.2026 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।
मोहर अदालत
रीडर-न्यायालय
उपखण्ड अधिकारी, जयपुर द्वितीय

आरटीओ कार्यालय के बाहर लोक परिवहन बस संचालकों का प्रदर्शन

भरतपुर (निस)। राजस्थान लोक परिवहन सेवा से जुड़े बस संचालकों ने भरतपुर स्थित आरटीओ कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। संचालकों का आरोप है कि रूट के समय में बदलाव और बसों के ठहराव (स्टॉपेज) का समय कम किए जाने से उन्हें आर्थिक नुकसान हो रहा है।

इसी के विरोध में बस संचालकों ने अपनी बसें आरटीओ कार्यालय के सामने खड़ी कर विरोध जताया। संचालकों का कहना है कि पूर्व निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार ही बसों का संचालन किया जाए। उनका आरोप है कि बिना सभी संचालकों की सहमति के समय में परिवर्तन कर दिया गया। जानकारी के अनुसार, तीन बस संचालकों ने बस रोकने के समय को लेकर आरटीओ को लिखित शिकायत दी थी, जबकि आठ अन्य संचालकों ने किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं करने की मांग की थी। प्रदर्शन कर रहे संचालकों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि जब तक समय परिवर्तन को वापस नहीं लिया जाता, तब तक वे आरटीओ कार्यालय पर डटे रहेंगे। इन बसों का संचालन भरतपुर से धौलपुर, बयाना, करौली, हिंडौन, डीग और रूपवास सहित विभिन्न रूटों पर किया जाता है। समय परिवर्तन के फैसले से इन सभी रूटों पर यात्रियों और संचालकों दोनों पर असर पड़ने की बात कही जा रही है। फिलहाल मामले को लेकर प्रशासन की ओर से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

■ **रूट समय परिवर्तन का विरोध**

रूट के समय में बदलाव और बसों के ठहराव (स्टॉपेज) का समय कम किए जाने के विरोध में बस संचालकों ने प्रदर्शन किया।

सिलाई मशीनें भेंट

निवाई। राजस्थान नॉलेज कॉरपोरेशन लिमिटेड एवं ऊषा इंटरनेशनल लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में उन्नयन समिति के सहयोग से विशेष अभियान के तहत कुल 105 गाँवों में 105 सिलाई स्कूल केंद्र सफलतापूर्वक स्थापित किए हैं। निवाई में जमात के सामुदायिक केन्द्र में 26 गाँवों की चयनित महिला शिक्षिकाओं के 9 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में जिले के 26 विभिन्न गाँवों से चयनित 26 महिला शिक्षिकाओं को सिलाई, कढ़ाई एवं मशीन मरम्मत का गहन प्रशिक्षण दिया गया। यह महिलाएँ अपने-अपने गाँवों में सिलाई स्कूल का संचालन करेंगी। जहाँ वह गाँव की अन्य लडकियों एंव महिलाओं को सिलाई सिखाकर उन्हें स्वरोजगार से जोडेंगी। कंपनी सेक्रेटरी मधु राठी ने बताया कि यदि महिलाओं के हुनर पर काम किया जाए, तो इससे न केवल परिवार बल्कि देश की आर्थिक स्थिति में भी बडा सुधार आएगा। संस्थान के चेयरमैन रविकुमार सुरपुर ने बताया कि बोर्ड का मत है कि महिलाओं की भागीदारी से ही एक समृद्ध देश का निर्माण संभव है। इस अवसर पर ऊषा इंटरनेशनल के क्षेत्रीय प्रबंधक मोहन लाल, उन्नयन समिति के सचिव विजय पाराशर, मोती लाल, जिला कोर्डिनेटर धोली वर्मा व प्रशासन से प्रहलाद ने भी विचार व्यक्त किए ।

सुबोधमति माताजी का मंगल प्रवेश

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में जैन आर्यिका श्रुतमति एवं सुबोध मति माताजी संघ का गांव चतुर्भुजपुरा में गाजे बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ। मीडिया प्रभारी सुनील भाणजा एवं विमल जौंला ने बताया कि माताजी के मंगल प्रवेश को लेकर अठावाल समाज चौरासी के ब्लॉक अध्यक्ष महेंद्र चंवरिया, त्रिलोक रजवास, विमल बगड़ी व विमल पाटनी सहित कई श्रद्धालुओं ने आर्यिका माताजी के समक्ष श्रीफल चढ़ाकर निवाई प्रवास के लिए निवेदन किया।

आम सूचना

मैं कि कृष्ण बाबू शर्मा पुत्र स्व. श्री मिश्रीलाल शर्मा आयु 74 वर्ष निवासी वासन गेट, भरतपुर तहसील व जिला भरतपुर (राज.)का हूं। मैं शपथपूर्वक बयान करता हूं कि मेरे पुत्र भूपेन्द्र शर्मा, हेमन्त शर्मा व उनकी पत्नियां पूनम शर्मा व अनीता शर्मा जो कि मुझे, मेरे परिजन पुत्र राजीव, पुत्रवधू हेमन्त कुमारी व बहिन शकुन्तला से लडाई झगडा करते हैं, इनके आचार विचार सही नहीं हैं ये चारों मुझ पर जायदाद को पूनम व अनीता के नाम कराने का दबाव डालते हैं तथा ऐसा नहीं करने पर ये चारों मुझे व मेरे परिजनों को जान से खत्म करने व झूठे केसों में फंसाने की धमकी देते हैं तथा चारों हम सभी को तंग व परेशान करते हैं व मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताडित करते व उल्टे सीधे कार्य व लेन देन करते हैं। मैं व मेरे अन्य परिजन इनके द्वारा किये गये कृत्यों से बुरी तरह आहत हैं इसलिये मैं अपनी समस्त चल अचल सम्पत्ति व परिवार से भूपेन्द्र शर्मा, हेमन्त शर्मा, पूनम शर्मा व अनीता शर्मा को बेदखल करता हूं भविष्य में इनके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य व लेन-देन के लिये मैं व मेरे अन्य परिजन जिम्मेदार नहीं होंगे।

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक : 10399 **आम जाहिर सूचना** दिनांक : 18.02.2026

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 63/15 (MIG-A), (एरिया 90.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन **श्री राधेश्याम अग्रवाल पुत्र श्री विजय लाल अग्रवाल** को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 679 दिनांक 22.04.1993 को जारी किया गया। **श्री राधेश्याम अग्रवाल** की मृत्यु दिनांक 28.02.1985 को हो जाने के कारण इनकी पत्नी **श्रीमती गिरनी देवी पत्नी स्व. श्री राधेश्याम अग्रवाल** द्वारा उक्त आवास को स्वयं के नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। **श्रीमती गिरनी देवी** के आवेदन पर कार्यालय आदेश क्रमांक 3010 दिनांक 02.05.1994 द्वारा नाम दर्ज किया गया। **श्रीमती गिरनी देवी** की मृत्यु दिनांक 10.05.2008 को हो जाने के कारण इनकी पुत्री **श्रीमती आशा अग्रवाल पत्नी श्री बलराम स्वरूप गोयल** द्वारा उक्त आवास को स्वयं के नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। **श्रीमती आशा अग्रवाल** के आवेदन पर कार्यालय आदेश क्रमांक 823 दिनांक 06.10.2008 द्वारा नाम दर्ज किया गया। **श्रीमती आशा अग्रवाल** के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 26.03.2013 को उप पंजीयक जयपुर-षष्ठम्, के यहां पंजीकृत करवाये गये। **श्रीमती आशा अग्रवाल** की मृत्यु दिनांक 03.01.2016 को हो जाने के कारण पंजीकृत हकत्याग पत्र के आधार पर इनके पुत्र **श्री निखिल कुमार गोयल पुत्र श्री बलराम स्वरूप गोयल** द्वारा उक्त आवास को स्वयं के नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। अत: उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही है, **श्री निखिल कुमार गोयल पुत्र श्री बलराम स्वरूप गोयल** का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा। **सम्पदा प्रबन्धक वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर**

राजस्थान आवासन मण्डल वृत्त-तृतीय
जे.एल.एन. मार्ग, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर 0141-4901853
क्रमांक 558 **आम जाहिर सूचना** दिनांक-18.02.2026

राजस्थान आवासन मण्डल जयपुर द्वारा आवास संख्या-4/9 मालवीय नगर जयपुर क्षेत्रफल 198.00 वर्ग मीटर का कार्यालय आदेश क्रमांक 556 दिनांक 19.09.1997 द्वारा श्रीमती अनिता माथुर पत्नी स्व. श्री लक्ष्मीचंद माथुर के पक्ष में नाम हस्तान्तरण जारी किया गया था। श्रीमती अनिता माथुर की मृत्यु दिनांक 22.11.2020 को हो जाने के कारण पुत्र श्री संदीप माथुर पुत्र स्व. श्री लक्ष्मीचंद माथुर के द्वारा आवेदन पत्र के साथ जमा प्रशासनिक शुल्क की छाया प्रति, शपथ-पत्र, क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, स्वयं एवं गवाह के पहचान पत्र की छाया प्रति एवं रजिस्टर्ड हकत्याग की छाया प्रति प्रस्तुत कर उक्त आवास का प्रतिस्थापन अपने नाम करने का निवेदन किया गया है। अंतः उक्त आवास के प्रतिस्थापन के संबंध में किसी भी व्यक्ति/बैंक/संस्था को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत रुप से उपस्थित होकर साक्ष्य सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नही होने पर उक्त आवेदनकर्ता श्री संदीप माथुर पुत्र स्व. श्री लक्ष्मीचंद माथुर के पक्ष में आवास के प्रतिस्थापन की कार्यवाही करदी जायेगी।
संपदा प्रबंधक, वृत तृतीय, राज. आ. मण्डल, जयपुर

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कमर्शियल प्रोजेक्ट जो कि प्लाट नंबर 26, स्कीम फतेह टीबा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्द मार्ग, आदर्श नगर, जयपुर राजस्थान में स्थित है जो त्रिमूर्ति लैंडकॉन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रस्तावित है। यह मंजूरी प्रस्ताव संख्या SIA/RJ/INFRA2/545069/2025 दिनांक 07.02.2026 को प्रदान कर दी गई है एवं वेबसाइट https://parivesh.nic.in पर भी उपलब्ध है।
वास्ते त्रिमूर्ति लैंडकॉन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

मिलावटी पनीर नष्ट कराया

कोटपूतली। आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रक व जिला कलेक्टर के निर्देशन में गुरुवार को बानसूर के गांव मल्लुवास हरसौरा में मिलावटी पनीर बनाने की सूचना मिलने पर खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम अपने जांच दल के साथ मौके पर पहुंची।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आशीष सिंह शेखावत ने बताया कि गांव मल्लुवास हरसौरा बानसूर में स्थित तीज़ा मिल्क प्रोजेक्ट पर कार्यवाही कर लगभग 150 किलोग्राम खराब एवं बदबूदार पनीर को मौके पर ही नष्ट कराया गया । निरीक्षण के दौरान फर्म का मालिक कुलदीप सिंह यादव मौके पर मौजूद था। मिलावटी पनीर का खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के तहत नमूना लिया गया जिसे जांच हेतु प्रयोगशाला में भिजवाया जाएगा। जांच रिपोर्ट के आधार पर सम्बन्धित विक्रेता एवं फर्म के विरुद्ध कारवाही की जाएगी ।निर्माण इकाई पर साफ़ सफाई नहीं पाए जाने पर नोटिस जारी किया गया। साथ ही गांव हरसौरा में स्थित फर्म नरेश कुमार पंकज कुमार से काली मिर्च एवं जीरा का भी खाद्य सुरक्षा एवम् मानक अधिनियम के तहत एक एक नमूना भी लिया गया। उक्त सैंपलों को प्रयोगशाला जयपुर में भिजवाया गया एवं जांच रिपोर्ट आने पर एफएसएसए एक्ट के तहत नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। सीएमएचओ ने आमजन से अनुरोध किया है।

अवैध पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त

टोंक । वन विभाग ने बनेठा क्षेत्र में अवैध खनन और परिवहन की रोकथाम के लिए बड़ी कार्यवाही में गश्त के दौरान चैजा पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया गया। उनियारा के क्षेत्रीय वन अधिकारी पंकज शर्मा ने बताया कि अवैध खनन पर प्रभावी रोक लगाने के उद्देश्य से उनियारा की गश्ती दल टीम ने यह कार्रवाई की।

टीम ने ककोड वन क्षेत्र से एक ट्रैक्टर-ट्रॉली का पीछा किया, जो चेजा पत्थर से भरी हुई थी, और उसे जब्त कर लिया। मंगलवार रात्रि गश्त के दौरान ककोड़ गांव के पास उन्हें चेजा पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली दिखाई दी, वन विभाग की टीम को देखते ही ट्रैक्टर चालक ट्रैक्टर-ट्रॉली छोड़कर फरार हो गया। जब्त की गई पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली को सुरक्षा के लिए बनेठा थाने के सुपुर्द कर दिया गया है।

पुलिस ने जांच के दौरान चैजा पत्थर से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया।

विश्वविद्यालय राजस्थान महाविद्यालय
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर (राज.)
दूरभाष: 0141-2710565, 0141-2703655

वाहन पार्किंग, मोबाईल/बैग संकलन ठेका हेतु बोली

राजस्थान महाविद्यालय में वाहन पार्किंग, मोबाइल/बैग संकलन के संचालन हेतु मोहरबन्द बोली दिनांक **24.02.2026 समय प्रातः 11.00 बजे तक** आमंत्रित की जाती हैं। शर्तें आदि संपूर्ण विवरण की जानकारी विश्वविद्यालय की वेबसाईट **www.uniraj.ac.in** एवं **http://sppp.raj.nic.in** पर उपलब्ध है। (अनुमानित लागत राशि 2,56,620/- रू.)।
NIB: URA2526A0078 UBN: URA2526SSOB00161
प्राचार्य

संक्षिप्त

मणियार का स्वागत

मनोहरपूर । शाहपुरा से सऊदी अरब में मक्का मदीना में अपने परिवार के साथ में उमराह पर जा रहे मोहम्मद रफ़ीक़ मणियार ने उनका स्वागत करने के लिए आए हुए पत्रकार साथियों का तहदिल से स्वागत करते हुए आभार जताया। इस अवसर पर पत्रकार विजय कुमार ताम्बी पत्रकार जाफ़र लोहानी मजदूर नेता अब्दुल अज़ीज़ लोहानी मोहसिन खान आदि का स्वागत किया गया वनस्थली न्यूज अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार और सामाजिक न्याय संगठन ने बाबू अंसारी को राजस्थान का मीडिया प्रभारी नियुक्त किया है। यह नियुक्ति संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. नीरज सिंह के द्वारा की गई। डॉ. नीरज सिंह ने कहा कि बाबू अंसारी का सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में लंबा अनुभव संगठन की गतिविधियों को नई दिशा देगा। उन्होंने विश्वास जताया कि अंसारी संगठन की नीतियों और अभियानों को मजबूती से आगे बढ़ाएंगे। वहीं, नव नियुक्त मीडिया प्रभारी बाबू अंसारी ने संगठन नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करेंगे तथा मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के उद्देश्य को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। संगठन के पदाधिकारियों ने भी इस नियुक्ति को महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि बाबू अंसारी के जुड़ने से संगठन को राजस्थान में नई ऊर्जा और मजबूती मिलेगी।

खेल मैदान निर्माण की मांग

बौंली -बामनवास । क्षेत्र की बरनाला तहसील के ग्राम पंचायत मुख्यालय बिछोछ गांव में खेल मैदान निर्माण को लेकर युवा नेता राजकमल मीणा ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से जयपुर उनके निवास सिविल लाइंस में भेंटकर एक मांग पत्र सौंपा मांग पत्र में अंकित किया गया है कि ग्राम पंचायत मुख्यालय बिछोछ में खेल मैदान बनने से आसपास के करीब सात, आठ गांवों के युवाओं को पूर्ण फायदा मिलेगा एवं वह रोज खेलने का अभ्यास कर उच्च स्तर तक खेलने का मौका मिलेगा क्षेत्र में सरकारी जमीन पर्याप्त मात्रा में है लेकिन भूमाफियाओं ने कब्जा कर के खेती कर रखी है राजकमल मीणा ने बताया कि वार्तालाप के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मोबाइल पर क्षेत्रीय विधायक इंदिरा मीणा से मौके पर ही चर्चा कर इस कार्य को शुरू करवाने में सहयोग करने का निर्देश दिया हैं ।

इम्तियाज खान अध्यक्ष बने

टोंक। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा के निर्देशन में टोक निवासी इम्तियाज खान को कांग्रेस जिला खेल प्रकोष्ठ अध्यक्ष किया गया गया है। जिसके बाद इम्तियाज खान ने कहा कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वार दिये गये आदेश पर व कांग्रेस पार्टी के हित में लगातार कार्य करेंगे तथा कांग्रेस विचारधार को आगे बढायेंगे।

खो-खो में सिविल टीम जीती

दौसा। राजेश पायलट राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, दौसा में बुधवार को खेल महोत्सव "पराक्रम -2026" के तहत खो-खो प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें छः टीमों ने भाग लिया। प्राचार्य अशोक कुमार शर्मा ने टीमों की हौसला हफजाई की। फाइनल मुकाबला सिविल व टीम यांत्रिकी शाखा के मध्य खेला गया। जिसमें टीम सिविल ने यांत्रिकी शाखा को हराकर जीत दर्ज की। प्रतियोगिता को शारीरिक प्रशिक्षिक अधिकारी महेश चन्द मीना, राजेश कुमार मीना प्रवक्ता व कैलाश चन्द मीना विभागाध्यक्ष ने प्रतियोगिता कराई। खेल महोत्सव के दौरान डॉ रेणु भूतडा, कौशल कुमार मीना, अनिल शर्मा, प्यार सिंह जाटव, जितेश खण्डेलवाल एवं संस्थान के समस्त अधिकारी, कर्मचारियों, एवं विद्यार्थियों ने खिलाडियों का उत्साहवर्धन किया।

किशोर गृह का निरीक्षण

दौसा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दौसा के सचिव एवं अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश संतोष अठावाल ने बुधवार को राजकीय सम्प्रेषण एवं किशोर गृह, दौसा एवं दत्तक ग्राहण एजेंसी दौसा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान राजकीय सम्प्रेषण गृह में विधि से संघर्षरत एवं देखरेख एवं संरक्षण की जरूरतमंद बालकों से वार्ता कर प्रदान की जाने वाली भोजन, आहार, चिकित्सा व्यवस्था, स्वच्छता, साफ-सफाई, कपडे, बिस्तर, आदि व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया।

कलेक्टर को किसानों ने अतिक्रमण, पेयजल की समस्या बताई

- जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में नगरफोर्ट तहसील की ग्राम पंचायत फुलेता में रात्रि चौपाल का आयोजन हुआ।
- जनसुनवाई में कलेक्टर ने ग्रामीणों को किसान गिरदावरी योजना के विषय में बताया

टोंक जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने नगरफोर्ट तहसील की ग्राम पंचायत फुलेता में रात्रि चौपाल में किसानों की समस्याएं सुनी ।

टोंक । जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में मंगलवार को नगरफोर्ट तहसील की ग्राम पंचायत फुलेता में रात्रि चौपाल का आयोजन हुआ। जनसुनवाई में जिला कलेक्टर ने ग्रामीणों को किसान गिरदावरी योजना के विषय में बताया। किसानों को स्वंय ही ऑनलाइन गिरदावरी करने के लिए जागरुक किया जिससे किसानों को समय पर फसल नुकसान का लाभ मिल सकें। सभी किसानों को फार्मर आईडी बनाने के लिए प्रेरित किया एवं इसकी उपयोगिता के विषय में बताया।

रात्रि चौपाल में फुलेता को जोडने वाले सडक मार्गो की मरम्मत,पेयजल आपूर्ति, साफ-सफाई, अतिक्रमण जैसी समस्याएं सामने आई। जिला कलेक्टर ने परिवादियों की समस्याओं को सुनकर संबंधित विभागों के अधिकारियो को समयबद्ध सीमा में समाधान करने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने ककोड से नगर, फुलेता से बुहारिया रोड पर जगह-जगह गड्ढे एवं डामरीकरण नही होने की शिकायत की। बीसलपुर के पानी की सप्लाई आपूर्ति पूरे गांव में व्यवस्थित तरीके से नही होने के विषय में बताया एवं बीसलपुर नहर की मांग की। रात्रि चौपाल में कलेक्टर ने समस्याओं का जल्द से जल्द निराकरण करवाये जाने का ग्रामीणों को आश्वासन दिया। जनसुनवाई के समय उपखंड अधिकारी देवली रुबी अंसार, तहसीलदार नगर रामधन मीना, भू-अभिलेख निरीक्षक मनीष मीना, पटवारी दीपक बैरवा, सरपंच सरिता देवी समेत जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी मौजूद रहें।

पहला रोज़ा आज

मनोहरपूर । सऊदी अरब में चांद दिखने के दूसरे दिन भारत में चाँद दिखने पर मुसलमान में खुशी की लहर दौड गई हैं । चांद के साथ लोगों ने सेल्फी व फोटो ली। उसके बाद इसकी सूचना अपने चाहने वालों को दी और दुआएं ली ।

इसी के साथ में रोजा रखने वाले लोगों की किराने की दुकानों पर भीड़ दिखाई दी वहां पर फिरनी सेवइयां दूध बिस्किट ठोस दही छाछ डबल रोटी आदि खरीदी गई । इसी प्रकार अन्य दुकान से टोपी मिस्वाक तस्वीह इत्र लौटा आदि खरीदा गया । इधर मस्जिदों में 20 रकात तरावीह यानी (विशेष नमाज) शुरू हो गई जो की पूरे रमजान तक चलेगी । डॉक्टर रिजवान अहमद ने बताया की 19 फरवरी 2026 को प्रथम रोजा है इसकी सेहरी खत्म होने का समय प्रातःकाल 5:36 पर होगा और सांयकाल 6:26 बजे अजान लगने के बाद में रोजा खोला जाएगा यह प्रथम रोजा लगभग 12 घण्टे 50 मिनट का होगा ।

5 साल गारंटी वाली सड़क 5 महीने में टूटी

- पूर्व विधायक सांसद हरीश चंद मीणा ने देवली से बोरडा गणेश जी तक कि सड़क बनवाने के लिए किए थे कथक प्रयास

देवली । इन दिनों शहर और आसपास के क्षेत्र मे करवाये जा रहे सरकारी निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार इस कदर बढ़ गया है कि। अब शायद इस पर अंकुश लगपाना मुमकिन नहीं ना मुश्किल होता चला जा रहा है। इसलिए की यहां अभी हाल ही में करोडों की लागत से बनाई गई सड़क छह महीने में टूटकर अपने साथ हुए भ्रष्टाचार की दास्ता खुद बे खुद बयां कर रही है । देखने वाली बात तो यह है कि इस सड़क का निर्माण देवली शहर के सार्वजनिक निर्माण विभाग ने करवाया है। ऐसे यह भी जग जाहिर है कि देवली नगर पालिका के द्वारा करवाए गए निर्माण कार्य तो भ्रष्टाचार से अछूते तो नहीं है इसी बीच देवली सार्वजनिक निर्माण विभाग के द्वारा बनवाई गई । सड़क में हुए भ्रष्टाचार की पोल खुलकर सामने आ गई। ऐसे में मामला यह भी देखा जा रहा है कि। ठेकेदार और कार्य से संबंधित अधिकारी की मिली भगत से 5 साल तक की गारंटी वाली सड़क भी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई। वह ऐसे कि 6 महीने पहले लगभग 5 किलोमीटर तक बनाई गई इस सड़क कि गिट्टी उखड़ने के साथ साथ डामर कि सड़क फटना शुरू हो गई है । ऐसे में 5 साल की गारंटी पर बनाई गई इस सड़क का दम 5 महीने में ही टूटना शुरू हो गया है । एक तरफ तो प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा राजस्थान मे जीरो टॉलरेंस कि नीति को सफल बनाने में जी तोड़ प्रयास कर रहे हैं। तो वहीं दूसरी तरफ देवली शहर की नगर पालिका और पीडब्ल्यूडी के कार्यों में, बढ़ता भ्रष्टाचार मुख्यमंत्री के जीरो टॉलरेंस कि उम्मीदों पर पानी फेरता चला जा रहा है। मामला यह है कि। अभी हाल ही में राज्य सरकार ने लगभग 2 करोड रुपए की लागत पर शहर से बोरडा गणेश जी तक जाने वाली 5 से 6 किलोमीटर की ग्रामीण सड़क का निर्माण करवाया है । इस सड़क के निर्माण की जिम्मेदारी देवली पीडब्ल्यूडी को दी गई थी। ऐसे में पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों की निगरानी में बनाई गई सीसी और डामर सडक बीच से फटना शुरू हो गई है।

इसी के साथ उक्त सड़क की गिट्टीया भी उखाड़ना शुरू हो गई. है। ऐसे में ग्रामीणों का मानना है कि कार्य से संबंधित अधिकारी और ठेकेदार के बीच मिली भगत से सड़क निर्माण मे घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया है। ग्रामीणों मानना है कि सांसद या विधायक को इस सड़क कार्य के निर्माण में ली गई सामग्री कि और गुणवंता की जांच करवाई जानी चाहिए। इसलिए की देवली शहर से बोरडा गांव के गणेश मंदिर तक जाने वाली लगभग 5 किलोमीटर लंबी सीसी और डामरीकरण सड़क का निर्माण पीडब्ल्यूडी के अधीन ठेकेदार ने किया था लोकार्पण के चंद दिनों बाद ही सड़क टूटना शुरू हो गई । इस पर पीडब्ल्यूडी के सहायक अभियंता अमित मीणा का कहना है कि रोड पर पेच हो गए हैं। एक आध जगह से रोड क्रेक भी हो गया है। ठेकेदार ने एक जगह सीसी रोड पर स्लोप भी नहीं मिलाया है। यह कार्य,एल,एस,जी योजना 2023 24 के तहत करवाया गया है। यह काम नगर पालिका का होता है। लेकिन इसके टेंडर से हुए हैं। ठेकेदार से कहकर इस रोड पर पेज वर्क करवा दिया जाएगा। इसी प्रकार पीडब्ल्यूडी के कनिष्ठ अभियंता भीम सिंह गुर्जर ने कहा कि ठेकेदार ने रोड की साइडों पर जी, एस,वी कार्य नहीं किया है। ठेकेदार को लेटर दे दिए गए हैं। रोड को ठीक करवा देंगे ठेकेदार को पूरा भुगतान नहीं किया है। इस मामले में नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी सुरेश कुमार मीणा ने कहा कि इस रोड निर्माण से देवली नगर पालिका का कोई लेना-देना नहीं राज्य सरकार ने इस कार्य को करवाने के लिए पीडब्ल्यूडी को बजट जारी किया था और पीडब्ल्यूडी नहीं इस रोड का निर्माण कराया है।

गोलमा पर टिप्पणी करने वाले सिंगर के खिलाफ मामला दर्ज

पूर्व राज्यमंत्री गोलमा देवी के समर्थकों ने दौसा कोतवाली थाना में पूर्व मंत्री गोलमा पर अमर्यादित एवं अशोभनीय गीत गाने वाले सिंगर के खिलाफ मामला दर्ज कराया है।

- मेले में सिंगर ने गीत के माध्यम से पूर्व मंत्री के खिलाफ अमर्यादित भाषा का उपयोग किया था

दौसा। पूर्व राज्यमंत्री गोलमा देवी के समर्थकों ने दौसा कोतवाली थाना में पूर्व मंत्री गोलमा पर अमर्यादित एवं अशोभनीय गीत गाने वाले सिंगर के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। इधर कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है ।

उल्लेखनीय है कि 16 फरवरी को नईनाथ महादेव में मेले का आयोजन किया गया था। इस मेले में मीणा समाज के सिंगर ताराचंद ने अपने गीत के माध्यम से पूर्व मंत्री गोलमा देवी के खिलाफ अमर्यादित भाषा और अशोभनीय टिप्पणी कर दी। इस टिप्पणी के बाद गोलमा देवी एवं डॉ. किरोडीलाल मीणा के समर्थको में आक्रोश व्याप्त हो गया। साथ ही विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों ने भी पूर्व मंत्री गोलमा देवी पर की गई अमर्यादित टिप्पणी पर तिखी प्रतिक्रिया दी है साथ ही इसे पूरी नारी जाति का अपमान माना है। इधर गोलमा देवी के समर्थक दौसा कोतवाली पहुंचे तथा कोतवाल को गायक कलाकार ताराचंद के खिलाफ लिखित शिकायत सौंपी। मांदलगांव निवासी अशोक कुमार मीणा ने कोतवाल से कहा कि आरोपी के खिलाफ त्वरित और कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए। उन्होने बताया कि सार्वजनिक मंचों या आयोजनों में अभद्र भाषा का प्रयोग न केवल व्यक्ति विशेष का अपमान है, बल्कि पूरे समाज की गरिमा को ठेस पहुंचाता है।

भविष्य में इस प्रकार की पुनरावृत्ति रोकने के लिए सख्त कदम उठाना आवश्यक है। इस पर थाना प्रभारी भगवान सहाय ने आश्वस्त किया कि संबंधित थाना क्षेत्र तूंगा की पुलिस प्रकरण की तत्परता से जांच कर रही है और नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान अशोक मांदलगांव, शिवराज मीणा, जलसिंह कोठीन, आरसी मीना छारेडा, पिंटू पापड़दा, अनिराज, सतीश, रवि रानिवास, विक्रम, पंकज मीनावाड़ा, राजेंद्र काली पहाड़ी सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने विरोध दर्ज कराया।

बिना अनुमति के डीजे बजाया तो कार्रवाई निश्चित

- एसडीएम ने प्रागपुरा थानाधिकारी को दिये कार्यवाही के निर्देश
- बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी में जुटे विद्यार्थियों व अभिभावकों ने की थी कार्यवाही की मांग
- शादियों, उत्सवों समेत धार्मिक कार्यक्रमों के दौर में इन दिनों कस्बा सहित आसपास के क्षेत्र में सड़कों पर बेखौफ तेज ध्वनि के डीजे बजाने से लोगों को हो रही है कार्रवाई

पावटा। उपखंड पावटा में अब बिना अनुमति के डीजे बजाने वालों की खैर नहीं। इसको लेकर उपखंड अधिकारी पावटा डॉ.साधना शर्मा ने प्रागपुरा थानाधिकारी भजनाराम को कार्यवाही के निर्देश दिये हैं। उल्लेखनीय है कि बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी में जुटे विद्यार्थियों व अभिभावकों ने उपखंड अधिकारी पावटा को बिना अनुमति के तेज ध्वनि में डीजे बजाने वालों पर कार्यवाही की मांग की है।

विद्यार्थियों व अभिभावकों ने बताया था कि शादियों, उत्सवों समेत धार्मिक कार्यक्रमों के दौर में इन दिनों कस्बा सहित आसपास के क्षेत्र में सड़कों पर बेखौफ घुम रहे तेज ध्वनि के डीजे से बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी में जुटे विद्यार्थियों के सामने भी बड़ी समस्या खडी कर दी हैं। जिसे देखते हुए उपखंड अधिकारी पावटा डॉ.साधना शर्मा ने बताया कि उपखंड पावटा में विभिन्न अवसरों पर बिना प्रशासन एवं पुलिस की पूर्व अनुमति के अत्यधिक तेज आवाज में डीजे बजाए जा रहे हैं। वर्तमान में विद्यार्थियों की बोर्ड की परीक्षाएं चल रही है। जिससे विद्यार्थियों की पढ़ाई गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है। हालात इस कदर विकट हैं कि इन कर्कस आवाज वाले डीजे को रोकने के लिये ना कोई नियम हैं एवं ना कोई कायदा, आबादी क्षेत्र में कितन आवाज पर डीजे बजाया जायें इसका कोई मानक भी नहीं हैं। जिस पर उपखंड अधिकारी पावटा डॉ.साधना शर्मा ने प्रागपुरा थानाधिकारी भजनाराम को बिना अनुमति के अत्यधिक आवाज में डीजे बजाने वालों के खिलाफ कार्यवाही के निर्देश दिए है।

मत्स्य निदेशक ने दौसा में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के कार्यों का जायजा लिया

मत्स्य विभाग की निदेशक संचिता बिश्नो ने दौसा जिले में संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की प्रगति का निरीक्षण किया ।

- किसान से मछली की विभिन्न प्रजातियों के चयन, मछलियों में होने वाले रोगों के प्रबंधन और बाजार में मछली की मांग को लेकर विस्तृत चर्चा की।

दौसा । मत्स्य विभाग की निदेशक संचिता बिश्नोई दौसा जिले के दौरे पर रहीं। इस दौरान उन्होंने जिले में संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की प्रगति का निरीक्षण किया और लाभार्थियों से सीधा संवाद किया। दौरे के तहत निदेशक ने ग्राम ठिकरिया (नांगल राजावतान) में योजना के लाभार्थी किसान रामधन मीना द्वारा निर्मित मत्स्य पालन तालाब का अवलोकन किया।

उन्होंने किसान से मछली की विभिन्न प्रजातियों के चयन, मछलियों में होने वाले रोगों के प्रबंधन और बाजार में मछली की मांग को लेकर विस्तृत चर्चा की। बिश्नोई ने किसान के प्रयासों की सराहना करते हुए मत्स्य पालन को आय बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम बताया। निरीक्षण के उपरांत निदेशक ने मत्स्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे जिले के अधिक से अधिक कृषकों को विभाग की कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ें। उन्होंने कहा कि विभागीय योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के किसान तक पहुंचना चाहिए ताकि नीली क्रांति के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। अपने दौरे के दौरान निदेशक ने भांकरी रोड स्थित मत्स्य विभाग के कार्यालय का भी निरीक्षण किया और वहां की कार्यप्रणाली व अभिलेखों का जायजा लिया। इस अवसर पर उप निदेशक मत्स्य (योजना) मनोज कुमार मीणा, उप-निदेशक, मत्स्य बीज डॉ. बृजेश कुमार एवं मत्स्य अधिकारी दौसा डॉ. राजपाल यादव सहित विभाग के अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

सम्मेलन में होगा 31 जोड़ों का विवाह

राजगढ़ । उपखंड क्षेत्र के अनावडा ग्राम में आदिवासी मीणा समाज की ओर से प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन, वरदान एम्पायर कॉलोनाइजर एंड डेवलपर पांडे परिवार, श्री श्याम सेवा समिति एवं भोरंगी गौशाला की ओर से सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन भो रंगी गौशाला में आयोजित किया जाएगा। आदिवासी मीणा समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन में 19 एवं सर्वजातीय विवाह सम्मेलन में 12 जोडों का विवाह होगा।फुलेरा दूज पर आयोजित होने वाले इन कार्यक्रमों को लेकर आयोजन से जुड़े लोगों में खुशी का आलम है। आदिवासी मीणा समाज की ओर से आयोजित प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन से जुड़े विवाह समिति के संयोजक सेवानिवृत्ति इंजीनियर आर जी मीणा ने बताया कि इस कार्यक्रम की तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। आदिवासी बहुल क्षेत्र में प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर समाज के लोगों में उत्साह का आलम है। इसमें अनेक जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियों के शिरकत करने की संभावना है। दूसरी और राजगढ़ के भोरंगी गौशाला में राजगढ़ निवासी जयपुर में कार्यरत तरुण पांडे परिवार की ओर से सर्वजातीय विवाह सम्मेलन का गौशाला में आयोजन किया जा रहा है।

सार-समाचार

'समय-समय पर मॉक ड्रिल करें'

कोटपूतली। जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी की अध्यक्षता में बुधवार को उद्योगों में सुरक्षा संबंधी समिक्षा बैठक एनआईए (एसोसिएशन भवन) निमराना के सभागार में आयोजित हुई। इस दौरान जिला पुलिस अधीक्षक देवेन्द्र कुमार बिश्नोई और अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओमप्रकाश सहारण सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं औद्योगिक संस्थानों के प्रतिनिधि एवं औद्योगिक एसोसिएशन के पदाधिकारी भी मौजूद रहे। जिला कलेक्टर ने कहा कि औद्योगिक इकाइयों के सुरक्षा मानकों को बनाए रखें जिससे कि किसी प्रकार की अप्रिय घटना से बचा जा सके। रीको द्वारा आवंटित भूखंड पर वो ही गतिविधि की जाए जो आवंटन पत्र में निर्दिष्ट हो, यदि गतिविधि में परिवर्तन हो तो नियमानुसार परिवर्तन करवाए, भूखंड मालिक द्वारा यदि भूखंड किराए पर दिया जाता है तो नियमानुसार रिको में सूचना दी जाए ताकि उस भूखंड पर अवैध गतिविधियां न हो। जिला पुलिसअधीक्षक देवेंद्र कुमार द्वारा इकाइयों को लेबर वेरिफिकेशन के लिए राजकॉप ऐप और सिटीजन ऐप के बारे में जानकारी दी गई। एडीएम ओमप्रकाश सहारण द्वारा औद्योगिक इकाइयों के लिए आवश्यक अग्निशमन उपकरण, फोम, अलार्म सिस्टम, पॉवर बैक अप, स्मोक डिटेक्टर जैसे सुरक्षा मानकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई। बैठक में सुरेश खींची अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीमराना, भंवर लाल सैनी महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, राहुल भट्ट इकाई प्रमुख नीमराना, मनोज त्यागी इकाई प्रमुख घिलोठ, राजकुमार सेहरा क्षेत्रीय अधिकारी राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल नीमराना सहित कृष्ण गोपाल कौशिक नीमराना औद्योगिक संघ अध्यक्ष, अंशुन यादव केशवाना औद्योगिक संघ, जयप्रकाश , सोतानाला औद्योगिक संघ एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारी और औद्योगिक इकाइयों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

3 एलपीजी सिलेंडर सहित सामग्री जब्त

भरतपुर (निस)। जिले में अवैध गैस रिफिलिंग एवं घरेलू गैस के अवैध भण्डारण के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत बुधवार को जांच दल द्वारा कार्रवाई की गई। जिला रसद अधिकारी पवन अग्रवाल ने बताया कि जांच के दौरान डीग रोड स्थित एक ऑयल मिल पर घरेलू एलपीजी गैस को विद्युत मोटर की सहायता से अवैध रूप से कार में रिफिलिंग करते हुए पाया गया। मौके से 3 घरेलू एलपीजी गैस सिलेंडर, एक गैस रिफिलिंग विद्युत मोटर एवं एक इलेक्ट्रॉनिक कांटा बरामद किया गया। जब्त सामग्री को आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कब्जे में लेकर संबंधित गैस एजेंसी की अभिरक्षा में सुपुर्द किया गया। प्रारंभिक जांच में पाया गया कि घरेलू गैस सिलेंडरों का उपयोग अवैध रिफिलिंग कार्य में किया जा रहा था तथा इस कार्य के लिए कोई वैध अनुज्ञापन अथवा दस्तावेज उपलब्ध नहीं थे। जिस वाहन में रिफिलिंग की जा रही थी, उसे भी मौके से जब्त कर पुलिस थाने में अभिरक्षा हेतु भेजा गया। मामले में ऑयल मिल के मालिक के विरुद्ध आवश्यक वस्तु अधिनियम की धारा 3/7 के तहत प्राथमिकी दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार द्वारा घरेलू एलपीजी सिलेंडरों के व्यावसायिक उपयोग, अवैध रिफिलिंग, अवैध भंडारण एवं कालाबाजारी जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाने तथा मुख्यमंत्री रसोई गैस सब्सिडी योजना एवं एलपीजी आपूर्ति प्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 16 फरवरी 2026 से 27 फरवरी 2026 तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिला रसद विभाग ने आमजन से अपील की है कि वे अवैध गैस रिफिलिंग जैसी गतिविधियों की सूचना तत्काल प्रशासन को दें, ताकि प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

हादसे में दो की मौत व तीन घायल

टोंक। सदर थाना क्षेत्र के गोल डूंगरी में बुधवार शाम को शादी में डांस करते समय 4 बच्चों सहित पांच लोगों को पिकअप ने कुचल दिया। हादसे में 2 बच्चों की मौत एवं 2 बच्ची व एक महिला घायल हो गई। पुलिस के अनुसार, हादसे में कुलदीप पुत्र रामकिशोर उम्र 8 साल, दिलखुश पुत्र पप्पू उम्र 10 साल की मौत हो गई तथा अंता, ऊषा और नेहा गंभीर रूप से घायल हो गई, घायलों का सआदत अस्पताल में इलाज चल रहा है। हादसे के बाद लोगों ने शव और घायलों को खींचकर पिकअप के नीचे से बाहर निकाला तथा आक्रोशित परिजनों ने पिकअप ड्राइवर की पिटाई कर दी। थाना प्रभारी जयमल सिंह ने बताया कि गोल डूंगरी इलाके में शादी समारोह के दौरान डीजे बज रहा था, जहां बच्चे, महिलाएं और पुरुष डांस कर रहे थे। इस दौरान डीजे की पिकअप चला रहे ड्राइवर ने आगे लेने की बजाय बैक कर लिया। जिससे यह घटना हो गई, बाद में परिजनों ने पिकअप ड्राइवर को पीटने लगे। इस दौरान पीछे से बच्चों की रोने की आवाजें आ रही थीं। वही वायरल वीडियो में परिजन बच्चे को गाड़ी के नीचे से निकालते हुए नजर आ रहे हैं जबकि ग्रामीण पिकअप चला रहे युवक को ड्राइवर सीट से बाहर निकालते नजर आ रहे हैं। सआदत अस्पताल की मॉर्च्युरी में दोनो बच्चों के शव रखवाए गए हैं। ऐसे में शादी का माहौल मातम में बदल गया। वहां मौजूद प्रत्यक्षदर्शियो ने बताया कि डीजे वाले ने आगे ले जाने के बजाय डीजे को पीछे ले जाने से यह घटना हुई है। जिसमें चालक की गलती बतायी जा रही है।

नंदीकेश्वर मेले की परंपरा 1100 साल बाद भी सांभर में कायम

सांभरझील, (निसं)। सांभर प्राचीन नगरी में कई शताब्दियों से नंदीकेश्वर की सवारी प्रमुख धार्मिक आस्था का केंद्र है। प्राप्त जानकारी के अनुसार राजा गोगराज के समय से नंदीकेश्वर की सवारी निकाली जाने की परंपरा चली आ रही है। लगभग 1100 साल बीत जाने के बाद इस परंपरा को पूरे धूमधाम व उत्साह के साथ सांभर की धरा पर धूलंडी के रोज निभाया जाता है। आज भी बदस्तूर जारी है। नंदीकेश्वर की सवारी होली के दूसरे रोज धूलंडी पर भगवान सूर्य देव मंदिर के सामने स्थित स्थल से विधिवत पूजा अर्चना के बाद दोपहर को रवाना होती है। भगवान शिव के प्रतीक के रूप में नंदीकेश्वर की सवारी का लोग दर्शन करते हैं, बल्कि चरण स्पर्श कर उनसे अपने परिवार की कामना भी करते हैं। धूलंडी से पहले नगर पालिका चौक तक नंदीकेश्वर की सवारी को परंपरागत तरीके से निकाला जाता है, इसके बाद से ही यहां अनेक तरह के धार्मिक आयोजनों का दौर भी शुरू हो जाता है। करीब 15 दिनों तक लगातार इस उत्सव को मनाने के लिए सांभर के अनेक गली मोहल्ले में ढोल और चंग की थाप पर परंपरागत लावणिया गाई जाती है। बच्चे और युवा यहां तक की बुजुर्ग भी ढोल और चंग की थाप पर नाचने गाने से गुरेज नहीं करते हैं। धूलंडी के दिन रंगों से होली खेलने के बाद लोग स्नान करते हैं और उसके बाद दोपहर को नंदीकेश्वर की सवारी में शरीक होकर पुष्प और गुलाल की होली से धूमधाम के साथ गले मिल जयकारे के साथ भगवान शिव का उद्घोष भी करते हैं। नंदीकेश्वर की सवारी का रूप धारण करने वाले भगवान शिव के भक्त और नंदीकेश्वर मेला कमेटी के तमाम लोगों की तरफ से इससे पहले महाभारत काल के समय से स्थापित देवयानी सरोवर स्थित भगवान जागेश्वर दरबार में शिवलिंग की पूजा अर्चना कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और नगर की खुशी और तरक्की के लिए भोलेनाथ से प्रार्थना करते हैं। नंदीकेश्वर की सवारी का सबसे भव्य आयोजन पुरानी धान मंडी स्थित रामलीला रंगमंच के पास विशाल मंच लगाकर हजारों की संख्या में लोग नंदीकेश्वर के नृत्य और शिव की भावपूर्ण मुद्रा को देखने के लिए लालायित रहते हैं। नंदीकेश्वर की सवारी का सबसे रोचक पहलू यहां की लंबी गली से निकलने के दौरान होता है ।

कॉर्टिकल इम्प्लांट सर्जरी सफलतापूर्वक संपन्न

दौसा। विश्वास स्माइल एंड स्पाइन सेंटर में एक उन्नत एवं अत्याधुनिक कॉर्टिकल इम्प्लांट सर्जरी सफलतापूर्वक संपन्न की गई। यह सर्जरी डॉ. विश्वास शर्मा, डॉ. कनक पारीक एवं डॉ. आयुष की विशेषज्ञ टीम द्वारा की गई। इस विशेष प्रक्रिया में मरीज के जबड़े में 4 कॉर्टिकल इम्प्लांट लगाए गए और मात्र 72 घंटे (3 दिन) के भीतर स्थायी दांत प्रदान कर दिए गए। इस तकनीक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मरीज को लंबा इंतजार नहीं करना पड़ता और वह सिर्फ 3 दिनों में सामान्य रूप से चबाना शुरू कर सकता है। संभावित रूप से यह दौसा जिले में अपनी तरह की पहली सर्जरी है, जिसमें इम्प्लांट के तुरंत बाद 72 घंटे के भीतर फिक्स्ड दांत दिए गए हैं। यह उपलब्धि क्षेत्र में दंत चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। डॉ. विश्वास शर्मा ने बताया कि कॉर्टिकल इम्प्लांट तकनीक विशेष रूप से उन मरीजों के लिए लाभकारी है जिनकी हड्डी पतली या कमजोर होती है, क्योंकि इसमें इम्प्लांट को मजबूत कॉर्टिकल बोन में फिक्स किया जाता है, जिससे तुरंत लोडिंग संभव हो पाती है।

पहली बाधा पार करने पर उन्हें बेहद खुशी और गर्व महसूस हो रहा है। उन्होंने इस बात पर भी विचार किया कि उनका लक्ष्य देश के लिए और अधिक पहचान और सम्मान लाना है।

- सिकंदर रजा

जिम्बाब्वे के कप्तान, आईसीसी टी-20 विश्व कप के सुपर-8 चरण में टीम के क्वालीफाई करने के बाद।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

ईशान किशन

ईशान 17 पायदान चढ़कर बल्लेबाजों की लिस्ट में 8वें नंबर पर पहुंच गए हैं। लिस्ट में टॉप पर भारत के ही अभिषेक शर्मा हैं। गेंदबाजी में भारत के मिस्ट्री स्पिनर वरुण चक्रवर्ती दुनिया के नंबर-1 टी-20 गेंदबाज बने हुए हैं। वहीं, ऑलराउंडर्स की लिस्ट में पाकिस्तान के सईम अयूब एक बार फिर नंबर-1 बन गए हैं। ने टी-20 वर्ल्ड कप 2026 के बीच ताजा टी-20 रैंकिंग जारी कर दी है। इंडिया के विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन टॉप-10 बैटर्स में शामिल हो गए हैं। उन्हें पाकिस्तान के खिलाफ वर्ल्डकप में खेली गई 77 रनों की पारी का फायदा मिला।

क्या आप जानते हैं ?... भारतीय टीम ने 1932 में पहला टेस्ट मैच खेला था और 1970 के दशक से यह एक शक्तिशाली टीम के रूप में उभरी है।

ICC MEN'S T20 WORLD CUP

आज के मैच

वेस्टइंडीज व इटली के बीच सुबह 11 बजे

श्रीलंका व जिम्बाब्वे के बीच दोपहर 3 बजे

अफगानिस्तान व कनाडा के बीच शाम 7 बजे

दुबे की वर्ल्डकप में पहली फिफ्टी, चक्रवर्ती को 3 विकेट

भारत ने नीदरलैंड को 17 रन से हराया

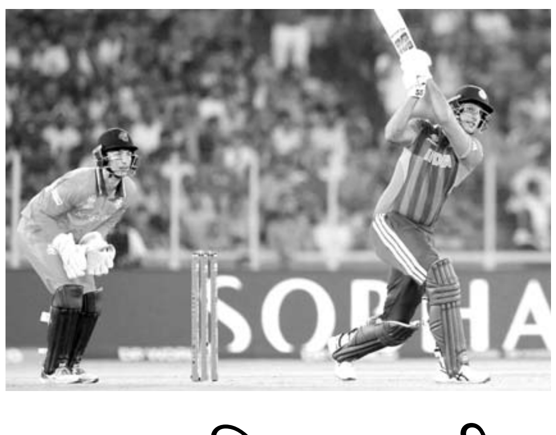

अहमदाबाद, 18 फरवरी। भारत ने टूर्नामेंट के ग्रुप चरण में एक भी मैच न हारने के बाद टी20 विश्व कप 2026 के सुपर आठ में अपराजित रहते हुए प्रवेश किया है। इतिहास रचने की उम्मीद में, मौजूदा चैंपियन भारत अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए अपने आखिरी लीग मैच में नीदरलैंड्स को 17 रनों से हराया। भारत ने लीग चरण में अपने सभी चार मैच जीतकर ग्रुप ए में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है।

अहमदाबाद में थोड़ी धीमी पिच पर बल्लेबाजी में शानदार प्रदर्शन करते हुए उन्होंने नीदरलैंड्स की जुझारू चुनौती को रोकने में कामयाबी हासिल की। इस से पहले शिवम दुबे के तूफानी अर्धशतक से भारत ने आईसीसी टी20 विश्व कप के ग्रुप ए मैच में बुधवार को यहां नीदरलैंड के खिलाफ धीमी शुरुआत से उबरते हुए छह विकेट पर 193 रन बनाए। दुबे ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ पारी के दौरान 31 गेंद में छह छक्कों और चार चौकों से 66 रन की पारी खेलने के अलावा हार्दिक पंड्या (21 गेंद में 30 रन, तीन छक्के) के साथ पांचवें विकेट के लिए 35 गेंद में 76 रन की साझेदारी की जिससे भारत अंतिम पांच ओवर में 75 रन जोड़ने में सफल रहा। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव (34) और तिलक वर्मा (31) ने भी उपयोगी पारियां खेली। नीदरलैंड की ओर से तेज गेंदबाज लोगान वान बीक सबसे सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 56 रन देकर तीन विकेट चटकाए। ऑफ स्पिनर आर्यन दत्त ने 19 रन देकर दो विकेट हासिल किए।

पाकिस्तान टी-20 वर्ल्डकप के सुपर-8 में पहुंचा, नामीबिया को 102 रन से हराया

कोलंबो, 18 फरवरी। आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के एक मुकाबले में पाकिस्तान ने नामीबिया को 102 रनों से हराकर टूर्नामेंट के सुपर आठ चरण में अपनी जगह पक्की कर ली। पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान ने सलामी बल्लेबाज साहिबजादा फरहान के नाबाद शतक की बदौलत 199/3 का स्कोर खड़ा किया। क्रैम्प्स से जूझते हुए फरहान ने 58 गेंदों पर 100 रन बनाए, जिसमें 11 चौके और चार छक्के शामिल थे। उनका स्ट्राइक रेट 172 रहा। यह उनका पहला टी20 अंतरराष्ट्रीय शतक था और पुरुष टी20 विश्व कप में किसी पाकिस्तानी बल्लेबाज द्वारा बनाया गया दूसरा शतक था। पाकिस्तान टॉप-8 में पहुंचने वाली 8वीं टीम बनी है। कोलंबो के सिंहलीज स्पोर्ट्स क्लब में पाकिस्तान ने ग्रुप-ए के इस मैच का टॉस जीतकर बैटिंग चुनी। टीम ने 20 ओवर में तीन विकेट पर 199 रन बनाए। जवाबी पारी में नामीबिया 17.3 ओवर में 97 रन पर ऑलआउट हो गई। उस्मान तारिक ने 4 विकेट झटके। जबकि शादाब खान को 2 विकेट मिले। ओपनर लॉरेन स्टीनकैंप ने 23 और एलेक्जेंडर वॉल्सचेंक ने 20 रन बनाए। टीम के 9 बैटर्स दहाई का आंकड़ा पार नहीं कर सके। पाकिस्तानी ओपनर साहिबजादा फरहान ने 58 बॉल पर नाबाद 100 रन की पारी खेली। उन्होंने 57 बॉल पर शतक बनाया। शादाब खान ने नाबाद 36 रन बनाए। कप्तान सलमान अली आगा 38 रन बनाकर आउट हुए। नामीबिया के लिए जैक ब्रेसल ने 2 विकेट झटके। जबकि जेरार्ड इरास्मस को एक विकेट मिला।

दक्षिण अफ्रीका की लगातार चौथी जीत, संयुक्त अरब अमीरात को छह विकेट से हराया

नई दिल्ली, 18 फरवरी। साउथ अफ्रीका ने टी-20 वर्ल्ड कप के 34वें मैच में संयुक्त अरब अमीरात को 6 विकेट से हरा दिया। टीम की इस वर्ल्डकप में लगातार चौथी जीत है। वहीं, संयुक्त अरब अमीरात की तीसरी हार है। साउथ अफ्रीका सुपर-8 में पहले ही पहुंच चुकी है और संयुक्त अरब अमीरात बाहर हो चुकी है। दोनों टीमों का यह आखिरी ग्रुप स्टेज मुकाबला था।

साउथ अफ्रीका ने दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में टॉस जीतकर बॉलिंग का फैसला किया। संयुक्त अरब अमीरात ने 20 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 122 रन बनाए। 123 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी साउथ अफ्रीका ने 13.2 ओवर में 4 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया।

साउथ अफ्रीका के लिए डेवाल्ड ब्रेविस ने 36, रयान रिकेल्टन ने 30, ऐडन मार्करम ने 28 और क्विंटन डी कॉक ने 14 रन बनाए। जेसन स्मिथ (3) और ट्रिस्टन स्टब्स (6) नाबाद रहें। संयुक्त अरब अमीरात के लिए मुहम्मद फारूक, हैदर अली, मुहम्मद अरफान और मुहम्मद जवादुल्लाह को 1-1 विकेट मिला।

संयुक्त अरब अमीरात के लिए अलीशान शराफू ने सबसे ज्यादा 45 रन बनाए। उनके अलावा कप्तान मुहम्मद वसीम 22, ओपनर अर्यांश शर्मा ने 13 और मुहम्मद अरफान ने 11 रन बनाए। साउथ अफ्रीका के लिए कॉर्बिन बॉश ने 3 और एनरिक नॉर्त्या ने 2 विकेट लिए। जॉर्ज लिंडे को 1 विकेट मिला। कॉर्बिन बॉश को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

ऑस्ट्रेलिया दौरे पर अव्यवस्था से नाराज पाकिस्तान कप्तान

अम्माद बट ने महासंघ पर लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली, 18 फरवरी। पाकिस्तान हॉकी टीम के ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद विवाद खड़ा हो गया है। टीम के कप्तान अम्माद शकील बट ने पाकिस्तान हॉकी महासंघ की व्यवस्थाओं पर गंभीर सवाल उठाए हैं और कहा है कि खिलाड़ियों को बेहद कठिन परिस्थितियों में खेलना पड़ा।लाहौर एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत में अम्माद शकील बट ने कहा कि मौजूदा प्रबंधन के साथ काम करना मुश्किल हो गया है। बता दें कि यह दौरा एफआईएच प्रो लीग के तहत आयोजित मुकाबलों का हिस्सा था, जहां पाकिस्तान को ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी के खिलाफ खेलना था।मौजूद जानकारी के अनुसार, टीम को सिडनी एयरपोर्ट पर 13 से 14 घंटे तक इंतजार करना पड़ा, क्योंकि आगे की उड़ान और ठहरने की व्यवस्था समय पर सुनिश्चित नहीं की गई थी। कप्तान ने आरोप लगाया कि होटल में पहुंचने पर उन्हें बताया गया कि अग्रिम भुगतान नहीं हुआ है, जिसके कारण बुकिंग की पुष्टि नहीं हो सकी। खिलाड़ियों को घंटों इंतजार करना पड़ा और कुछ समय सड़कों पर भी बिताना पड़ा। बट ने नाराजगी जताते हुए कहा कि मैच से पहले खिलाड़ियों को रसोई साफ करनी पड़ी और बर्तन धोने पड़े। उनका सवाल था कि ऐसी परिस्थितियों में टीम से बेहतर परिणाम की उम्मीद कैसे की जा सकती है। गौरतलब है कि पाकिस्तान को अपने पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया से 2-3 से हार का सामना करना पड़ा और ऑस्ट्रेलिया चरण के सभी मुकाबलों में उसे शिकस्त मिली। उन्होंने यह भी बताया कि टीम के लिए 13 दिन के प्रवास में से केवल 10 दिन के लिए ही एयरबीएनबी की व्यवस्था की गई थी, जिसके बाद उन्हें सस्ते ठिकाने पर शिफ्ट होना पड़ा।

पीपीएल में गिल व अभिषेक मचाएंगे धूम, 2026 का हुआ ऐलान

नई दिल्ली, 18 फरवरी। पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन जून 2026 में पंजाब प्रीमियर लीग (पीपीएल) का आयोजन करने जा रहा है। पंजाब की घरेलू टी20 क्रिकेट लीग अब एक नए नाम और नए प्रारूप के तहत खेली जाएगी। पीपीएल की सभी 6 टीमें फ्रेंचाइजी आधारित होंगी और खिलाड़ियों का चयन नीलामी के माध्यम से किया जाएगा। पीसीए की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, केवल पंजाब में पंजीकृत खिलाड़ी ही भाग लेंगे। पंजाब प्रीमियर लीग में पंजाब के सभी प्रमुख खिलाड़ी शामिल होंगे। भारतीय टेस्ट और सीमित ओवरों के सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल, भारत के नंबर 1 टी20 बल्लेबाज अभिषेक शर्मा और गेंदबाज अर्शदीप सिंह को प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में शामिल किया जाएगा। इनके अलावा, रमनदीप सिंह, नेहाल वढेरा, नमन धीर, अनमोलप्रीत सिंह और प्रभसिमरन सिंह सहित अन्य अनुभवी पंजाब के खिलाड़ियों को भी प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में शामिल किया जा सकता है। वर्तमान भारतीय अंडर-19 टीम के युवा खिलाड़ी विहान मल्होत्रा भी इसमें शामिल होंगे। वरिष्ठ खिलाड़ियों के साथ-साथ पंजाब के अंडर-23 खिलाड़ियों को भी खेलने का मौका मिलेगा। इन दिग्गज खिलाड़ियों के अलावा, पंजाब प्रीमियर लीग में पंजाब के कई अन्य उभरते हुए क्रिकेटर भी शामिल होंगे, जिन्होंने घरेलू और आईपीएल स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। मयंक मार्कंडे, अश्वनी कुमार, गुरनूर बराड़, हरनूर सिंह, रमन धीर और हरप्रीत बराड़ जैसे खिलाड़ी टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे, जिससे लीग को मजबूती और प्रतिस्पर्धा मिलेगी। इसके अलावा, सलिल अरोरा, रघु शर्मा और कई अन्य प्रतिभाशाली खिलाड़ी भी पीपीएल का हिस्सा होंगे।

वीमेन सीनियर एक दिवसीय ट्रॉफी : राजस्थान ने हरियाणा को हराया

जयपुर, 18 फरवरी। राजस्थान की जीत में तनूजा वैषणव का अर्धशतक व सुमन मीणा, रिंकू टांक, शानू व कौशल्या चौधरी का शानदार प्रदर्शन। वड़ोदरा में खेली जा रही वीमेन सीनियर एक दिवसीय ट्रॉफी में आज राजस्थान ने हरियाणा को 47 रन से हराया। राजस्थान-हरियाणा मैच (राजस्थान 47 रन से जीती) राजस्थान पारी 193/9, टीम के लिए तनूजा वैषणव 52, सुमन मीणा 45, आयुषी गर्ग 38 रन।हरयाणा की गेंदबाज प्रीती 22/3, सुमन, गुलशन 2-2 विकेट। हरियाणा पारी 146 आल आउट। टीम के लिए त्रिवेणी 60 व प्रीती 32 रन। राजस्थान की गेंदबाज रिंकू टांक 21/3, शानू 24/2, कौशल्या चौधरी 31/2 व सुमन मीणा, सोनल कलाल 1-1 विकेट।

टी-20 विश्वकप में टीम इंडिया का संभावित बदलाव, सैमसन और सिराज को मिल सकता है मौका

नई दिल्ली, 18 फरवरी। टी20 विश्व कप में भारत का अगला मुकाबला टीम संयोजन के लिहाज से अहम माना जा रहा है। लगातार मुकाबलों के बाद टीम प्रबंधन कुछ प्रमुख खिलाड़ियों को आराम देने पर विचार कर सकता है, ताकि नॉकआउट चरण से पहले सभी खिलाड़ी तरोताजा रह सकें। टी20 विश्व कप 2026 में अब तक ईशान किशन और कुलदीप यादव ने प्रभावशाली प्रदर्शन किया है। हालांकि मौजूद जानकारी के अनुसार, आगामी मुकाबले में उन्हें विश्राम दिया जा सकता है, जिससे संजू सैमसन और मोहम्मद सिराज को मौका मिलने की संभावना है।

संजू सैमसन ने नामीबिया के खिलाफ अभिषेक शर्मा की अनुपस्थिति में ईशान किशन के साथ पारी की शुरुआत की थी। उन्होंने आठ गेंदों में 22 रन बनाकर तेज शुरुआत तो की, लेकिन बड़ी पारी में तब्दील नहीं कर सके। दूसरी ओर ईशान किशन ने पाकिस्तान के खिलाफ अहम मुकाबले में 40 गेंदों पर 70 रन की शानदार पारी खेली। गौरतलब है कि यह उनका लगातार दूसरा अर्धशतक था, इससे पहले उन्होंने नामीबिया के खिलाफ 61 रन बनाए थे।

गेंदबाजी विभाग में मोहम्मद सिराज की वापसी की संभावना जताई जा रही है। कुलदीप यादव ने पाकिस्तान के खिलाफ इस टूर्नामेंट में अपनी पहली उपस्थिति दर्ज की थी, लेकिन टीम प्रबंधन तेज गेंदबाजी संयोजन पर भी विचार कर रहा है। सिराज ने अमेरिका के खिलाफ शुरुआती मैच खेला था, बाद में जसप्रीत बुमराह की वापसी के साथ उन्हें बाहर बैठना पड़ा।

इसके अलावा अर्शदीप सिंह को भी टीम में शामिल किए जाने की चर्चा है। पाकिस्तान के खिलाफ स्पिन-प्रधान आक्रमण को प्राथमिकता दी गई थी, लेकिन आगामी मुकाबले में परिस्थितियों को देखते हुए तेज गेंदबाजों को प्राथमिकता मिल सकती है।

मौजूदा संकेतों के आधार पर संभावित एकादश में अभिषेक शर्मा, ईशान किशन (विकेटकीपर), तिलक वर्मा, कप्तान सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पांड्या, रिंकू सिंह, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, मोहम्मद सिराज, जसप्रीत बुमराह और वरुण चक्रवर्ती शामिल हो सकते हैं। हालांकि अंतिम निर्णय पिच और विरोधी टीम की रणनीति को ध्यान में रखकर लिया जाएगा।

यूईएफए चैम्पियंस लीग

विजयी गोल करने के बाद विनीसियस जूनियर का नस्लीय दुर्व्यवहार का आरोप

नई दिल्ली, 18 फरवरी। यूईएफए चैंपियंस लीग के प्लेऑफ मुकाबले में फुटबॉल की दुनिया एक बार फिर नस्लवाद के मुद्दे पर गरमा गई है। रियाल मैड्रिड के स्टार फॉरवर्ड विनीसियस जूनियर ने बेनफिका के खिलाफ मैच के दौरान नस्लीय टिप्पणी किए जाने का गंभीर आरोप लगाया है। यह घटना तब हुई जब विनीसियस ने अपनी टीम के लिए विजयी गोल दागा और रियाल मैड्रिड को 1-0 से जीत दिलाई।खेल को तब रोक दिया गया जब विनीसियस ने दावा किया कि रियाल मैड्रिड की 1-0 से जीत के दौरान एक प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी ने नस्लीय टिप्पणी करके उनका अपमान किया। रियाल मैड्रिड के डिफेंडर ट्रेंट अलेक्जेंडर अर्नोल्ड ने मैच के बाद कहा, "अपने करियर के दौरान उन्हें कई बार इस तरह की स्थिति का सामना करना पड़ा है और उन्होंने इसे बखूबी संभाला है। लेकिन उनके प्रति इस तरह का व्यवहार जारी रहना और आज रात ऐसा होना फुटबॉल के लिए शर्मनाक है।" इस बीच मौजूदा चैंपियन पेरिस सेंट जर्मेन को मोनाको के खिलाफ जीत दर्ज करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। पीएसजी एक समय दो गोल से पीछे चल रहा था लेकिन स्थानापन्न खिलाड़ी डेज़ायर डूए के शानदार प्रदर्शन से वह आखिर में 3-2 से जीत हासिल करने में सफल रहा। अन्य मैचों में गैलाटासराय ने युवेंटस को 5-2 से हराया जबकि बोरुसिया डॉर्टमुंड ने अटलांटा के खिलाफ 2-0 से जीत दर्ज की।

के.एल. सैनी 'ए' डिवीजन लीग पी एंड टी क्रिकेट क्लब व जयपुर क्लब का मैच बारिश से धुला

जयपुर, 18 फरवरी। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित तथा वन रियलिटी द्वारा प्रायोजित के एल सैनी ए डिवीजन लीग में आज खेला जाने वाला मैच बारिश से धुला गया। दोनों टीमों को एक - एक अंक दिया गया।

नोट: दिनांक 19 फरवरी को जयपुरिया ग्राउंड पर पी एंड टी क्रिकेट क्लब बनाम यूनियन क्रिकेट क्लब के मध्य मैच खेला जाएगा।

स्मिथ को बाहर करना सबसे बड़ी भूल थी : मार्क वॉ

नई दिल्ली, 18 फरवरी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज मार्क वॉ ने आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप के लिए चयन समिति की खराब टीम चयन की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि चोटों से जूझ रही ऑस्ट्रेलिया की टीम का अभियान शुरू से ही नाकामयाब था। पल्लेकेले में बारिश ने जिम्बाब्वे पर मेहरबानी दिखाई और उन्हें सुपर आठ में जगह बनाने के लिए जरूरी एक अंक दिला दिया, जिसके चलते जिम्बाब्वे और श्रीलंका दोनों अपने ग्रुप से क्वालीफाई कर गए।

हालांकि, आयरलैंड पर जीत के साथ शुरुआत करने के बाद जिम्बाब्वे और श्रीलंका से शर्मनाक हार झेलते हुए 2021 के चैंपियन ऑस्ट्रेलिया के लिए ग्रुप स्टेज में ही सफर खत्म हो गया। ऑस्ट्रेलिया टूर्नामेंट से पहले चोटों से जूझ रही थी, उनके दो सबसे वरिष्ठ तेज गेंदबाज पैट कमिंस और जोश हेज़लवुड टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे।

उन्होंने आगे कहा कि मेरे लिए, स्टीव स्मिथ को शुरू में टीम में न चुनना सबसे हैरान करने वाला फैसला है जो मुझे लंबे समय से याद है। मुझे लगता है कि उन्होंने चयन में पूरी तरह से गलती की है और अपने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी स्टीव स्मिथ को बेंच पर बैठाए रखना... सच कहूं तो यह स्टीव स्मिथ का अपमान है।

बार्सिलोना पर गहराया संकट, ला लीगा में लगातार दो हार के बाद खिताब की दौड़ से बाहर होने का खतरा

बार्सिलोना, 18 फरवरी। स्पेनिश फुटबॉल में इस समय बार्सिलोना को लेकर सवालों का दौर जारी है। लगातार दो अहम मुकाबलों में हार के बाद टीम की लय और रणनीति पर चर्चा तेज हो गई है। पहले कोपा डेल रे में एटलेटिको मैड्रिड के खिलाफ शिकस्त और फिर ला लीगा में गिरोना से हार ने क्लब की स्थिति को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। बार्सिलोना को एटलेटिको मैड्रिड से कोपा डेल रे में हार का सामना करना पड़ा, जिससे खिताब बचाने की राह कठिन हो गई है। इसके बाद गिरोना के खिलाफ ला लीगा मुकाबले में मिली हार ने उन्हें अंक तालिका में शीर्ष स्थान से भी पीछे धकेल दिया।

मौजूद जानकारी के अनुसार, क्लब के पूर्व स्काउट बोयान क्रकिच सीनियर ने गिरोना के खिलाफ प्रदर्शन का विश्लेषण करते हुए कहा कि मौजूदा टीम पिछले सीजन जैसी धार नहीं दिखा पा रही है। उन्होंने माना कि कुछ प्रमुख खिलाड़ी चोटिल हैं, लेकिन टीम की खेल शैली ऐसी है जिसमें तेज और तकनीकी रूप से मजबूत खिलाड़ियों की जरूरत होती है, ताकि विरोधी की पंक्तियों को तोड़ा जा सके और अधिक मौके बनाए जा सकें।

उन्होंने यह भी कहा कि बार्सिलोना की असली ताकत गेंद की तेज गति से अदला-बदली और सीधा आक्रमण रहा है। गौरतलब है कि मिडफील्डर पेद्री की अनुपस्थिति में टीम का संतुलन बिगड़ा हुआ नजर आ रहा है। गेंद का प्रवाह धीमा होने से आक्रमण में धार कम दिख रही है।

हालांकि गिरोना के खिलाफ मुकाबले में बार्सिलोना ने 90 मिनट में 27 शॉट लगाए, जो उनके आक्रामक इरादों को दर्शाता है। लेकिन इतने प्रयासों के बावजूद टीम सिर्फ एक गोल कर सकी, जो पाउ क्यूबार्सी के हेडर से आया। यह आंकड़ा बताता है कि मौके बनाने के बावजूद फिनिशिंग में कमी टीम को भारी पड़ रही है। जानकारों का मानना है कि यदि बार्सिलोना को खिताबी दौड़ में बने रहना है तो उसे अपने खेल में गति और प्रभावशीलता दोनों बढ़ानी होंगी। आगामी मुकाबले टीम के लिए निर्णायक साबित हो सकते हैं, क्योंकि स्पेनिश लीग में प्रतिस्पर्धा इस सत्र में बेहद कड़ी बनी हुई है।

जयपुर में 27 से 'स्टार लीग-2026' का आगाज, विजेताओं को मिलेंगे 51 हजार तक नगद पुरस्कार

जयपुर, 18 फरवरी। जयपुर में शूटिंग खिलाड़ियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। एकलव्य स्पोर्ट्स शूटिंग अकादमी की ओर से 'स्टार शूटिंग लीग - जयपुर 2026' का आयोजन 27 फरवरी से 1 मार्च तक किया जाएगा। प्रतियोगिता को राजस्थान राइफल एसोसिएशन की मंजूरी प्राप्त है, जबकि इसे शूटर्स डेस्टिनेशन शूटिंग अकादमी का समर्थन प्राप्त है। आयोजकों के अनुसार यह प्रतियोगिता देशभर के शूटर्स के लिए खुली रहेगी और सभी मुकाबले इलेक्ट्रॉनिक स्कोरिंग टारगेट पर आयोजित किए जाएंगे। प्रतियोगिता का संचालन और के नियमों के अनुसार किया जाएगा। प्रतियोगिता तीन चरणों में आयोजित होगी। पहला चरण (क्वालिफिकेशन राउंड): 60 शॉट्स, देशभर से खिलाड़ी भाग ले सकेंगे। दूसरा चरण (सेमीफाइनल): 40 शॉट्स, शीर्ष खिलाड़ी आगे बढ़ेंगे। तीसरा चरण (फाइनल): 24 शॉट्स, शीर्ष खिलाड़ी फाइनल में मुकाबला करेंगे। कुल 16 टीमें बनाई जाएंगी। प्रत्येक टीम में 3 शूटर्स होंगे और टीमों का गठन ड्रॉ/लॉटरी सिस्टम से किया जाएगा। प्रतियोगिता में विजेताओं के लिए नगद पुरस्कार घोषित किए गए हैं- प्रथम पुरस्कार: 51,000, द्वितीय पुरस्कार: 31,000, तृतीय पुरस्कार: 21,000, चौथे से आठवें स्थान तक: 5,100 प्रत्येक। साथ ही सभी प्रतिभागियों को अतिरिक्त पुरस्कार एवं टी-शर्ट भी प्रदान किए जाएंगे।ऑनलाइन एंट्री 14 फरवरी 2026 से शुरू हो चुकी है, जबकि प्रवेश की अंतिम तिथि 25 फरवरी 2026 निर्धारित की गई है। रजिस्ट्रेशन के लिए 9929463559 और 9024171322 पर संपर्क किया जा सकता है। यह प्रतियोगिता प्रदेश सहित देशभर के उभरते शूटर्स को अपनी प्रतिभा दिखाने का एक बड़ा मंच प्रदान करेगी। आज लीग डायरेक्टर योगेश सिंह, जोगेंद्र सिंह, व हर्षवर्धन सिंह, सुरेंद्र सिंह, कुलदीप सिंह, नवेंदु शर्मा तथा शूटर बलराम गुर्जर उपस्थित रहे।

जम्मू-कश्मीर ने बंगाल को धूल चटाकर पहली बार रणजी ट्रॉफी के फाइनल में रखा कदम

कोलकाता, 18 फरवरी। जम्मू-कश्मीर की क्रिकेट टीम ने बुधवार को भारतीय घरेलू क्रिकेट के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय लिख दिया। ईडन गार्डन्स पर खेले गए सेमीफाइनल के चौथे दिन, जम्मू-कश्मीर ने दो बार के चैंपियन बंगाल को छह विकेट से करारी शिकस्त दी। इसके साथ ही, 67 साल के अपने रणजी इतिहास में जम्मू-कश्मीर पहली बार फाइनल में पहुँचने में सफल रहा है।

बंगाल द्वारा दिए गए 126 रनों के मामूली लक्ष्य का पीछा करते हुए जम्मू-कश्मीर ने चौथे दिन की शुरुआत सतर्कता के साथ की। जम्मू कश्मीर में 34.4 ओवर में चार विकेट खोकर यह लक्ष्य हासिल कर दिया। उसकी तरफ से वंशज शर्मा ने नाबाद 43 और अब्दुल समद ने नाबाद 30 रन बनाए। इससे पहले तेज गेंदबाज आकिब नबी

ने मैच में नौ विकेट लेकर बंगाल की जीत की संभावनाओं को पूरी तरह से खत्म कर दिया था।

आकिब नबी के शानदार प्रदर्शन और आईपीएल स्टार अब्दुल समद की बेखौफ बल्लेबाजी ने यह सुनिश्चित किया कि जिस टीम को कभी लगातार अच्छा प्रदर्शन नहीं करने वाली टीम के रूप में जाना जाता था वह अब खिताब से सिर्फ एक कदम दूर है। समद ने 22 वर्षीय वंशज को विजयी रन बनाने का मौका दिया और इस युवा बल्लेबाज ने मुकेश कुमार की गेंद पर लॉन्ग ऑन के ऊपर से छक्का मारकर जम्मू कश्मीर की टीम में जबरदस्त जश्न का माहौल बना दिया। जम्मू कश्मीर ने पहली बार 1959-60 के सत्र में रणजी ट्रॉफी में हिस्सा लिया था और तब से लेकर अब तक उसे मजबूत दावेदार नहीं माना जाता था।

जम्मू कश्मीर ने इस सत्र से पहले 334 रणजी मैच खेले थे, जिनमें से उसने केवल 45 जीते थे। उसे अपनी पहली जीत दर्ज करने में 44 साल लग गए, जो उसने 1982-83 में सेना के खिलाफ हासिल की थी। उसके लिए नॉकआउट में पहुंचना कभी आसान नहीं रहा लेकिन 2013-14 में उसे एक बड़ी सफलता मिली जब उसने नेट रन रेट के आधार पर गोवा को पीछे छोड़कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। उसने 2015-16 में परवेज़ रसूल की कप्तानी में वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई को हराकर अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की थी।

लेकिन दशकों तक जम्मू कश्मीर के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही, लेकिन इस सत्र में कोच अजय शर्मा और कप्तान पारस डोगरा के नेतृत्व में उसने अपने विश्वास को परिणामों में तब्दील कर दिया। मुंबई के खिलाफ शुरुआती हार के बाद जम्मू कश्मीर ने राजस्थान के खिलाफ पारी की जीत तथा दिल्ली और हैदराबाद के खिलाफ महत्वपूर्ण जीत हासिल करके नॉकआउट में प्रवेश किया। उसने क्वार्टर फाइनल में मध्य प्रदेश को 56 रन से हराकर पहली बार सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

जब-जब भाजपा की सरकार रही, जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने बुधवार को कोटा, अजमेर व भरतपुर संभाग के पार्टी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों से संवाद किया

जयपुर, 18 फरवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता राष्ट्र के लिए समर्पित भाव से कार्य करते हैं तथा जनता का उन पर अटूट विश्वास है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आ ान किया कि केन्द्र एवं राज्य

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने अपने समय में बजट में भेदभाव किया था, जबकि हमने 200 विधानसभा क्षेत्रों को समान बजट दिया है।**

सरकार के बजटीय प्रावधानों एवं जनकल्याणकारी योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार कर जन-जन तक पहुंचाएं।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर कोटा, अजमेर एवं भरतपुर संभाग के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के साथ संवाद कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में जब-जब हमारी भाजपा की सरकार रही है, हमने जनता के बीच में रहकर सदैव विकास और जनकल्याण के कार्य किए हैं। पूर्व उपराष्ट्रपति स्व. भैंरोसिंह शेखावत, वसुन्धरा राजे से लेकर वर्तमान सरकार के कार्यकाल में जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। भामाशाह, अन्नपूर्णा जैसी योजनाएं भाजपा सरकार के कार्यकाल में लाई गईं, कांग्रेस सरकार ने केवल योजनाओं का नाम बदलने का कार्य किया है। कांग्रेस सरकार ने अपने समय में बजट में भेदभाव किया था, जबकि हमने सभी 200 विधानसभा क्षेत्रों को समान बजट दिया है।

इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, पूर्व मुख्यमंत्री एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वसुन्धरा राजे, प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, अशोक परनामी, सांसद सी. पी. जोशी, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, राजस्थान धरोहर प्राधिकरण अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत सहित, कोटा, अजमेर एवं भरतपुर संभाग के जिला अध्यक्ष, विधायक, पूर्व विधायक, प्रभारी, सह प्रभारी तथा जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर कोटा, अजमेर एवं भरतपुर संभाग के कार्यकर्ताओं से संवाद किया। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी, पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे, प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, अशोक परनामी, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ मौजूद थे।

कूनो में मादा चीता गामिनी दूसरी बार माँ बनी

श्योपुर, 18 फरवरी। मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में उत्सव की लहर दौड़ गई है, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका से आई चीता, गामिनी, दूसरी बार मां बनी है। गामनी ने 18 फरवरी 2026 को तीन नन्हें शावकों को जन्म दिया है। यह खुशखबरी दक्षिण अफ्रीकी चीतों के भारत आगमन के तीन वर्ष पूरे होने के दिन सामने आई है।

दक्षिण अफ्रीका से चीतों के आगमन के तीन वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में कुनो में एक नया अध्याय जुड़ गया है। यह खुशी भरा आगमन भारतीय धरती पर चीतों के नौवें सफल प्रसव का प्रतीक है और इसके साथ ही भारत में जन्मे जीवित शावकों की संख्या 27 हो गई है।

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी दी। मंत्री भूपेंद्र यादव ने इस उपलब्धि को भारत के ऐतिहासिक संरक्षण अभियान की बड़ी सफलता बताया।

उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट चीता के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। गामिनी दूसरी बार मां बनी है। यह भारतीय धरती पर चीतों का नौवां सफल कुनबा है।

इन नए शावकों के जन्म के साथ भारत में जन्मे जीवित शावकों की संख्या बढ़ कर 27 हो गई है। अब देश में कुल चीता आबादी 38 तक पहुंच गई है।

राहुल गांधी देश के लिये सबसे खतरनाक व्यक्ति -रिजिजू

रिजिजू ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी देश विरोधी ताकतों से जुड़े हुए हैं

नई दिल्ली, 18 फरवरी। केन्द्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने राहुल गांधी को भारत की सुरक्षा के लिए सबसे खतरनाक व्यक्ति करार दिया।

- **केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी का व्यवहार ''बचकाना और गैर-जिम्मेदाराना है,'' लोकसभा में विपक्ष का नेता पूरे विपक्ष का प्रतिनिधित्व करता है। सदन के बाहर लोगों को गद्दार कहना, नाटकीय धरना देना बच्चे जैसा व्यवहार है।**

रिजिजू का आरोप है कि राहुल गांधी देश विरोधी ताकतों से जुड़े हुए हैं और वे माओवादियों, उग्रवादियों से मिलते हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने कभी ऐसा विपक्ष का नेता नहीं देखा। यह बयान राजनीतिक गलियारों में तूफान मचा रहा है, क्योंकि यह सीधे राहुल गांधी की छवि पर हमला है।

रिजिजू ने आगे कहा, ''राहुल गांधी भारत की सुरक्षा के लिए सबसे खतरनाक व्यक्ति बन गए हैं। क्योंकि वे देश विरोधी ताकतों से जुड़े हैं। वे विदेशों में और देश में नक्सलियों, उग्रवादियों और जॉर्ज सोरोस जैसे लोगों से मिलते हैं।''रिजिजू ने संसद के हालिया सत्र में हुए हंगामे पर भी बात की। उन्होंने कहा कि संसदीय लोकतंत्र में शोर-शराबा और हंगामा हमेशा होता है, हर पार्टी अपना एजेंडा आगे बढ़ाती है। लेकिन साथ ही कार्यवाही भी देखनी चाहिए। उन्होंने याद दिलाया कि जब वे विपक्ष में थे, तो उन्होंने स्पीकर पर कागज नहीं फेंके, न ही रूलिंग साइड की ओर बैनर लेकर गए। इसीलिए वे इस बार के हंगामे से नाराज हैं।

एसओजी ने 10 हजार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

थाना क्षेत्र का निवासी आरोपी प्रिन्स सैनी (27) वर्तमान में कोलकाता के बारासात राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय में एमबीबीएस चतुर्थ वर्ष का छात्र है। जांच में सामने आया कि प्रिन्स ने सांचौर निवासी मूल अभ्यर्थी मनोहर सिंह विश्नोई के स्थान पर डमी परीक्षार्थी बनकर विज्ञान विषय की परीक्षा दी थी। यह परीक्षा 24 दिसंबर 2022 को उदयपुर के सविना खेड़ा स्थित परीक्षा केन्द्र पर आयोजित हुई थी। इस धोखाधड़ी के बदले प्रिन्स और मनोहर सिंह के बीच 2 लाख 50 हजार का सौदा तय हुआ था।

आरोपित तक पहुँचने के लिए एसओजी ने अभिनव तकनीकी पहल का सहारा लिया। उपमहानिरीक्षक पुलिस परिस देशमुख एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक प्रकाश शर्मा के नेतृत्व में एक विशेष सॉफ्टवेयर विकसित किया गया। जिसमें अभ्यर्थियों के फोटो और डेटाबेस का मिलान किया गया। उन्नत तकनीकी विश्लेषण और सटीक मुखबिर तंत्र की मदद से टीम ने कोलकाता में प्रिन्स की लोकेशन ट्रेस की और उसे धर दबोचा। इस सराहनीय कार्य में निरीक्षक प्रवीण सिंह और आरक्षी सीताराम की विशेष भूमिका रही।

ख़ालिदा ज़िया के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने दावा किया, ''अगर आप मामले का अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि देश में जितनी भी सांप्रदायिक हिंसा हुई है, उसमें शेख हसीना की पार्टी आवामी लीग शामिल रही है। आवामी लीग हिंदुओं की सबसे बड़ी दुश्मन है।''

भारत के साथ संबंधों को लेकर रॉय चौधरी ने कहा, ''बांग्लादेश, भारत के बीच में स्थित है। इसलिए भारत अपने हित में बांग्लादेश की भलाई चाहता है। बीएनपी इसे समझती है।'' उन्होंने आगे कहा, ''बीएनपी मानती है कि दोनों देशों के रिश्ते और मजबूत होने चाहिए।''

रॉय चौधरी की शादी झूमा से हुई थी, और उनके तीन बच्चे हैं। उनकी बेटी निपुन रॉय चौधरी बीएनपी की सक्रिय नेता हैं और पार्टी की कार्यकारिणी समिति की सदस्य हैं। वे पहले जिला स्तर पर नेतृत्व की भूमिका निभा चुकी हैं और उनकी शादी बीएनपी के एक प्रमुख परिवार में हुई है। वे अमिताव रॉय की पत्नी हैं, जो वरिष्ठ बीएनपी नेता गायेश्वर चंद्र रॉय के बेटे हैं। गायेश्वर रॉय ने भी 12 फरवरी के चुनाव में बीएनपी के टिकट पर जीत हासिल की।

रॉय चौधरी के बेटे देबाशीष रॉय चौधरी बांग्लादेश उच्च न्यायालय में न्यायाधीश हैं। उनका एक और बेटा है, जिसका नाम मिथुन है।

प्रधानमंत्री ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नेताओं के पूर्ण सत्र में प्रधानमंत्री मौजूद रहेंगे। इसमें राष्ट्राध्यक्ष, मंत्री और बहुपक्षीय संस्थानों के वरिष्ठ प्रतिनिधि कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर राष्ट्रीय और वैश्विक प्राथमिकताओं की रूपरेखा तय करेंगे। शाम 5:30 बजे प्रधानमंत्री सीईओ गोलमेज सम्मेलन में शामिल होंगे। इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट की थीम सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय यानी सभी का कल्याण और सभी की प्रसन्नता है। इसके तीन प्रमुख स्तंभ मनुष्य, पृथ्वी और प्रगति हैं। सम्मेलन में सात कार्यकारी समूह बनाए गए हैं, जो एआई के विभिन्न क्षेत्रों में ठोस परिणाम देने पर काम करेंगे।इस समिट में 500 से अधिक वैश्विक एआई विशेषज्ञ, 20 से अधिक राष्ट्राध्यक्ष और सरकार प्रमुख, लगभग 60 मंत्री और उपमंत्री, 100 सीईओ और संस्थापक, 150 शिक्षाविद और शोधकर्ता तथा 400 तकनीकी अधिकारी भाग लेंगे।

हाईकोर्ट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पाई कि चयन प्रक्रिया में बोर्ड के गठन के लिए मुख्य सचिव को भागीदार बनाया गया था।

अदालत ने इस तथ्य को भी दर्ज किया कि बृजेश दीक्षित की नियुक्ति 28 मार्च 2025 को हुई थी। इसके तुरंत बाद ही 7 अप्रैल 2025 को पुरूषोत्तम नारायण शर्मा ने याचिका हाईकोर्ट में दायर कर दी थी। अदालत ने इस तर्क को दर्ज किया कि किसी को रील का प्रबंध निदेशक बनाए जाने से पूर्व नियुक्ति आदेश को चुनौती नहीं दी जा सकती थी। ऐसे में बृजेश दीक्षित की इस नियुक्ति को रद्द किया जा रहा है।

महाराष्ट्र में मुस्लिमों का 5 प्रतिशत आरक्षण रद्द

मुंबई, 18 फरवरी। महाराष्ट्र सरकार ने नौकरियों और शिक्षा में मुस्लिमों को मिलने वाला पांच प्रतिशत रिजर्वेशन रद कर दिया है। राज्य के सोशल जस्टिस डिपार्टमेंट ने एक सरकारी रेजोल्यूशन जारी कर पिछले आदेश को कैंसिल कर दिया।

पिछली कांग्रेस-एनसीपी सरकार ने मराठों को 16 प्रतिशत और मुसलमानों को पांच प्रतिशत कोटा देने के लिए एक ऑर्डिनेंस जारी किया था। हालांकि, पिछले 10 सालों से यह आदेश इनवैलिड था क्योंकि कांग्रेस सरकार की तरफ से लाया गया यह अध्यादेश 6 हफ्ते के बाद विधानसभा से पास नहीं हो सका था। नए जीआर के अनुसार, स्पेशल बैकवर्ड कैटेगरी (ए) के तहत शामिल सामाजिक और शैक्षिणक रूप से पिछड़े मुस्लिम ग्रुप के लिए सरकारी, सेमी-गवर्नमेंट नौकरियों और एजुकेशनल इंस्टीट्ययूशन में पांच परसेंट रिजर्वेशन से जुड़े सभी पिछले फैसले और ऑर्डिनेंस रद कर दिए गए हैं। नए आदेश में कहा गया है कि सरकार ने 2014 के पहले के फैसलों और सर्कुलर को रद कर दिया है और स्पेशल बैकवर्ड कैटेगरी में मुसलमानों को जाति और नॉन-क्रीमी लेयर सर्टिफिकेट जारी करना बंद कर दिया है। कांग्रेस-एनसीपी सरकार ने मुस्लिम समुदाय की सामाजिक-शैक्षिणक स्थिति पर कई कमेटियों और रिपोर्ट्स के जरिए 5 साल तक अध्ययन कर निष्कर्ष निकला था कि कुछ वर्ग पिछड़े हैं, इसलिए आरक्षण की सिफारिश की गई।

परिवर्तन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन, पूर्व पार्टी अध्यक्ष और केन्द्रीय मंत्री जेपी नड्डा, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, शिवराज सिंह चौहान, नितिन गडकरी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस और स्मृति ईरानी शामिल होंगे।

गलगोटिया...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सॉकर ड्रोन बनाया है। हालांकि सोशल मीडिया यूज़र्स ने दावा किया कि यह ड्रोन बाज़ार में ''स्ट्राइकर वी3 ए आर एफ'' नाम से मिलने वाला मॉडल है, जिसे करीब 40,000 रुपये में खरीदा जा सकता है।

यह ''हेलसेल स्ट्राइकर वी3'' ड्रोन दक्षिण कोरिया की कंपनी ''हेलसेल ग्रुप'' द्वारा विकसित किया गया बताया जा रहा है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908